150 YEARS OF CELEBRATING THE MAHATMA

लक्ष्य : 100 प्रतिशत परिणाम

मासिक शिविरा पत्रिका

वर्ष : 60 | अंक : 04 | अक्टूबर, 2019 | पृष्ठ : 52 | मूल्य : ₹15

शिक्षा ज्योति

शिक्षा ज्योति

शिक्षा ज्योति

शिक्षा ज्योति

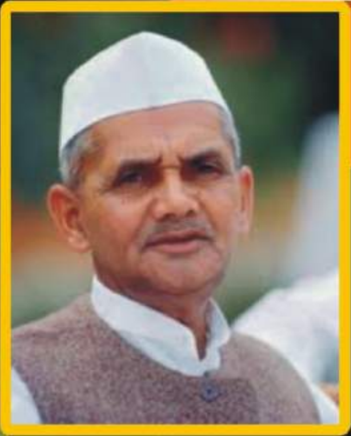

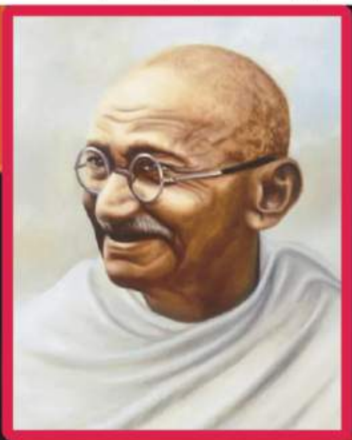

Rajteachers.in

सत्यमेव जयते

श्री गोविन्द सिंह डोटासरा
राज्य मंत्री
शिक्षा (प्रारम्भिक एवं माध्यमिक) विभाग
(स्वतंत्र प्रभार)
पर्यटन एवं देवस्थान विभाग
राजस्थान सरकार

"गाँधीजी शोषण विहीन समाज के पक्षधर थे, ऐसे शोषण विहीन समाज के जिसमें सभी को शिक्षित होना चाहिए। उनका विश्वास ज्ञान की अखंडता पर था। विद्यालयों में किताबें पढ़ाकर रटन्त विद्या के वे सर्वथा विरुद्ध थे।"

सच्ची शिक्षा : अपने आपको जानें

राष्ट्रपिता महात्मा गाँधी का जीवन ही उनका दर्शन है। गाँधीजी शोषणविहीन समाज के पक्षधर थे, ऐसे शोषणविहीन समाज के जिसमें सभी को शिक्षित होना चाहिए। उनका विश्वास ज्ञान की अखंडता पर था। विद्यालयों में किताबें पढ़ाकर रटन्त विद्या के वे सर्वथा विरुद्ध थे। गाँधीजी विद्यार्थियों के बस्ते का बोझ कम करने के हिमायती थे। गाँधीजी का कहना था कि भारत जैसे गरीब देश में किताबें सोच समझकर ही रखवानी चाहिए। वे पाठ्यपुस्तकों से अधिक महत्त्वपूर्ण अध्यापक को मानते थे। उनका कहना था कि शिक्षक ही विद्यार्थियों की पाठ्यपुस्तक है।

राजस्थान में हमने यही किया है। बस्ते का बोझ कम करने की पहल करते हुए कक्षा एक से पाँच में बस्ते का बोझ दो तिहाई कम कर दिया है। अलग-अलग पुस्तकों के स्थान पर विद्यार्थियों को अब एक ही पुस्तक स्कूल लेकर जानी होगी। प्रायोगिक रूप में फिलहाल प्रदेश के सभी 33 जिलों में एक-एक विद्यालय का चयन कर बस्ते के बोझ को कम करने की यह शुरूआत हुई है। बस्ते के बोझ को कम करने के इस निर्णय की हम सतत समीक्षा कर रहे हैं। सफल परिणाम रहते हैं तो इसे कक्षा 1 से 12 तक प्रदेशभर में लागू किया जाएगा।

राष्ट्रपिता महात्मा गाँधी का व्यक्तित्व और कृतित्व अनुकरणीय है। इसलिए 02 अक्टूबर, 2018 से प्रारंभ हुए महात्मा गाँधी के 150वें जयंती समारोह के आयोजन अकेले भारत में ही नहीं अपितु पूरी दुनियां में हो रहे हैं। उनका जीवन सत्य, सेवा और अहिंसा की पूरी खुली किताब है। गाँधीजी ने कहा था कि देशभक्ति अपने आप में कोई आखिरी वस्तु नहीं है। इसकी अपनी मर्यादा है। हम अपने देश के लिए इस तरह से सोचें कि किसी और के विचारों को चोट नहीं पहुँचे। किसी दूसरे के विचार को गलत साबित करना देशभक्ति नहीं है, गाँधीजी मनसा, वाचा, कर्मणा एवं आदर्श के संवाहक थे। सत्य के प्रति आग्रही, सत्याग्रही थे। उन्होंने ही हमें वह अभिव्यक्ति दी जिससे हम अपनी ही गरिमा के प्रति सचेत रहें। अपने सम्मान का बोध हमें हो। गाँधीजी के मनाये जा रहे 151 वें जन्मदिन समारोह के अवसर पर आइये हमें उनके आदर्शों को आत्मसात् करते हुए उनके जीवन से निरंतर प्रेरणा लेने का संकल्प लेना चाहिए।

इस वर्ष शिक्षा मंदिरों में गुरुजनों एवं विद्यार्थियों द्वारा वृक्षारोपण की विशेष पहल की गयी है। मुझे इस बात की प्रसन्नता है कि इस मानसून में प्रदेशभर के विद्यालयों में नये नामांकन के अनुपात में वृक्षारोपण किया गया है। लगाये गये वृक्षों की रिपोर्ट देखकर मुझे बहुत प्रसन्नता है। अब इन वृक्षों की सार-संभाल करने में हमें कोई चूक नहीं करनी है। सच मानो तो यह भी एक परीक्षा है, जिसमें शत प्रतिशत अंकों के साथ हमें उत्तीर्ण होना है।

वर्तमान सत्र में ग्रीष्मावकाश के पश्चात् विद्यालय खुले तीन माह से अधिक समय हो गया है। अब मौसम बदल रहा है। मखमली सर्दी दस्तक देने लगी है। यह समय मन लगाकर पढ़ने का है। चार माह ही रह गए हैं परीक्षाओं के। परीक्षाओं में इस बार ''परीक्षा उत्सव'' फरवरी, 2020 में शुरू होना है। मिशन मैरिट जैसे रिजल्ट ओरिएन्टेड प्रोग्राम, मंडल और जिला स्तर पर चलाए जाने चाहिए। हमें, हमारे प्रदेश को शिक्षा में देशभर में अग्रणी बनाना है। सभी मिलकर प्रयास करेंगे तो हम जरूर सफल होंगे।

अंधेरे से उजाले की ओर जाने वाले झिलमिल दीपों का मनभावन पर्व इसी माह में है। मैं यह मानता हूँ कि 'असतो मा सद्गमय' का मूल अमृत की इच्छा या प्रकाश पाने का भाव भर ही नहीं हैं, इसका अर्थ है हम अपने आपको जानें। सच्ची शिक्षा से ही यह संभव है। आइये हम शिक्षित एवं विकसित राजस्थान के दीप्त पथ के राही बनें।

दीपावली के पावन पर्व पर आप सभी को हार्दिक शुभकामनाएँ।

(गोविन्द सिंह डोटासरा)

Rajteachers.in

मासिक

शिविरा पत्रिका

न हि ज्ञानेन सदृशं पवित्रमिह विद्यते -श्रीमद्भगवद्गीता 4/38

इस संसार में ज्ञान के समान पवित्र करने वाला निःसंदेह कुछ भी नहीं है।
In this world there is no purifier as great as knowledge.

वर्ष : 60 | अंक : 4 | आश्विन शु.-कार्तिक शु. २०७६ | अक्टूबर, 2019

प्रधान सम्पादक
नथमल डिडेल
❊
वरिष्ठ सम्पादक
अनिल कुमार अग्रवाल
❊
सम्पादक
मुकेश व्यास
❊
सह सम्पादक
सीताराम गोदारा
❊
प्रकाशन सहायक
नारायणदास जीनगर
रमेश व्यास

मूल्य : ₹ 15

वार्षिक चंदा दर व शर्तें

- शिक्षकों/लिपिकों के लिए ₹ 75
- राजकीय संस्थाओं/कार्यालयों/विद्यालयों के लिए ₹ 150
- गैर राजकीय संस्थाओं के लिए ₹ 200
- मनीऑर्डर/बैंक ड्रॉफ्ट/पोस्टलऑर्डर **निदेशक, माध्यमिक शिक्षा राजस्थान, बीकानेर** के नाम देय हैं।
- चैक स्वीकार्य नहीं है।
- कृपया पूर्ण पता मय पिन कोड लिखें।
- नवीनीकरण हेतु चंदा राशि कृपया दो माह पूर्व भिजवाएँ।

पत्र व्यवहार हेतु पता
वरिष्ठ सम्पादक, शिविरा पत्रिका
माध्यमिक शिक्षा राजस्थान
बीकानेर-334 011
दूरभाष : 0151-2528875
फैक्स : 0151-2201861
E-mail : shivira.dse@rajasthan.gov.in
shivirasecedubkn@gmail.com

शिविरा पत्रिका में व्यक्त विचार लेखकों के अपने विचार होते हैं। अभिव्यक्त विचारों से **शिक्षा विभाग राजस्थान** का सहमत होना आवश्यक नहीं है। **-वरिष्ठ संपादक**

इस अंक में

दिशाकल्प : मेरा पृष्ठ
- संकल्प, साधना और सिद्धि 5

विशेष रपट
- राज्यस्तरीय शिक्षक सम्मान समारोह-2019 6
  मुकेश व्यास

आलेख
- राज्य का गौरव 10
  डॉ. कल्पना शर्मा
- एकादश व्रतों में निहित है आनन्दतत्त्व 13
  डॉ. महेन्द्र कुमार चौधरी
- गाँधीजी की प्रासंगिकता 15
  डॉ. वेद प्रकाश रेडू
- महात्मा गाँधी एक युग पुरुष 17
- अविस्मरणीय
  नूतन बाला कपिला
- वर्तमान की प्रासंगिकता 18
  पूनम पांडे
- राजस्थान में बस्ते का बोझ छूमन्तर 19
  संदीप जोशी
- मैं पढ़ाने आऊँगा 20
  प्रेमांशु राम मेहता
- छात्र जीवन में समय बोध 33
  वृद्धि चन्द गोठवाल
- विद्यालयों में जीवन्त शैक्षणिक वातावरण में शिक्षक की भूमिका 34
  आकांक्षा शर्मा
- ऐसे थे हमारे भूतपूर्व प्रधानमंत्री लाल बहादुर शास्त्री 35
  मदन लाल मीणा
- हमारा कर्म हो सेवा हमारा धर्म हो सेवा 36
  बृजमोहन पुरोहित
- दीपावली और मान्यताएँ 38
  अचलचन्द जैन
- खुशी का जरिया है पैदल चलना 38
  सत्य नारायण नागोरी

स्तम्भ
- पाठकों की बात 4
- आदेश-परिपत्र 21-31
- पञ्चाङ्ग (अक्टूबर, 2019) 32
- विद्यालय प्रसारण कार्यक्रम 32
- बाल शिविरा 43-44
  राखी कँवर, गौरव मीणा, सुरजीत प्रजापत, लक्ष्मी, सौरभ भदौरिया, बजीर, सुनीता, सूरज, देवेन्द्र यादव
  रा.उ.मा.वि., इंदिरा गाँधी नगर परियोजना, बीकानेर
- शाला प्रांगण 45-48
- चतुर्दिक समाचार 49
- हमारे भामाशाह 50
- व्यंग्य चित्र : रामबाबू माथुर 14, 33, 35

पुस्तक समीक्षा 39-42
- कर्त्तव्य पथ
  लेखक : राजकुमार 'इन्द्रेश'
  समीक्षक : **डॉ. सूरज सिंह नेगी**
- 101 राजस्थानी कहानियां
  संपादक : डॉ. नीरज दइया
  समीक्षक : **डॉ. मदन गोपाल लढ़ा**
- साहित्य समज्या
  लेखक : डॉ. कृष्णा आचार्य
  समीक्षक : **ओम प्रकाश सारस्वत**
- मेह बाबा आया
  लेखक : ओमप्रकाश तँवर
  समीक्षक : **डॉ. राजकुमार शर्मा**

मुख्य आवरण :
नारायणदास जीनगर, बीकानेर

विभागीय वेबसाइट : www.education.rajasthan.gov.in/secondary

Rajteachers.in

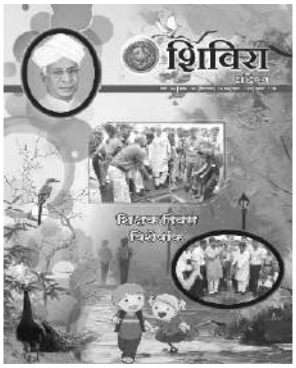

▼ चिन्तन

उद्योगिनं पुरुषसिंहमुपैति लक्ष्मीर्दैवं हि दैयमिति कापुरुषा वदन्ति।

दैवं निहत्य कुरु पौरुषमात्मशक्त्या यत्ने कृते यदि न सिद्ध्यति कोऽत्र दोषः।।

-सुभा., भां. 86/20

अर्थात् : उद्योग करने वाले सिंहरूपी पुरुष के पास लक्ष्मी आती है। कायर पुरुष कहते हैं कि भाग्य हमको देगा। हे! मनुष्य भाग्य को छोड़, अपनी शक्ति के अनुसार उद्यम कर। प्रयत्न करने पर यदि सिद्धि न मिले तो उसमें तुम्हारा दोष नहीं।

पाठकों की बात

● 7 सितम्बर को शिक्षक सम्मान समारोह की चित्र वीथिका व मुख्य पृष्ठ पर मन चित्रों से सुसज्जित शिक्षक दिवस विशेषांक मिला। मन हर्षित हुआ। दिशाकल्प एवं अपनों से अपनी बात स्तम्भ प्रेरणास्पद थे। डॉ. राधाकृष्णन् के जन्मदिन 5 सितम्बर को राष्ट्र शिक्षक दिवस के रूप में मनाते, यह शिक्षक के गौरव का द्योतक है। डॉ. राधाकृष्णन से सम्बद्ध सभी आलेख उनके शैक्षिक चिन्तन को प्रदर्शित कर रहे हैं। चूँकि यह विशेषांक विशाल व विशद स्वरूप में है, तत्काल आलेखों, लेखों व कविताओं के बारे में समीक्षात्मक टिप्पणी सम्भव नहीं है। सार रूप में इतना ही कहना अर्थ पूर्ण है कि यह अंक बहुत ही सुन्दर बन पड़ा है। कविताएँ भी प्रचुर मात्रा में हैं। अनेक आयामों को समेटा गया है। अनेक आयाम पर लिखित विषय सामग्री शिक्षकों व समाज को समर्पित है। 14 सितम्बर को आने वाले हिन्दी दिवस के महत्त्व को, नारी सशक्तिकरण, सामाजिक सरोकारों व छात्रों तथा शिक्षकों के लिए पाठ्य सामग्री प्रचुर मात्रा में है। बाल शिविरा में छात्रों की रचनाएँ महत्त्वपूर्ण हैं। सृजन का रहस्य बालसभा की महत्ता, नव नियुक्त शिक्षक को पत्र, सुनो बच्चों सारगर्भित छात्रोपयोगी रचित। 'विफलता सफलता से श्रेष्ठ शिक्षक' रहे है। गुरु महिमा, विनोबा भावे का 'महान दार्शनिक व डॉ. राधाकृष्णन', 'डॉ. राधाकृष्णन शैक्षिक चिन्तन' 'ज्ञान स्वरूपं नमामि', 'महान शिक्षाविद्, डॉ. राधाकृष्णन' कई उच्चतम स्तरीय रचनाएँ हैं। इनके लेखकों को हार्दिक बधाई। साथ-साथ चयनित रचनाओं की श्रेष्ठता व मनोहारी रचनाओं के लिए शिविरा सम्पादक मंडल को हार्दिक बधाई!

टेकचन्द्र शर्मा, झुंझुनूं

● शिविरा का शिक्षक दिवस विशेषांक लम्बी प्रतीक्षा के बाद प्राप्त हुआ। विषय वस्तु की गहनता तथा व्यापकता से मन-मस्तिष्क आनन्दित हुआ। अंक के प्रारम्भ में निदेशक महोदय का दिशाकल्प विद्यालय को शिक्षा के साथ-साथ संस्कारों के केन्द्र के रूप में विकसित करें। अत्यन्त प्रेरणास्पद है। अंक का प्रथम आलेख 'ज्ञान स्वरूपं नमामि' में डॉ. दाऊजी गुप्ता ने गहराई से गुरु की व्याख्या कर गुरु को महिमामंडित कर शिक्षकों को तद् स्वरूप आचरण के लिए प्रेरित किया है, आलेख की यह पंक्ति 'गुरु का ज्ञान व्यापार की रेखा को लाँघकर सर्वकल्याणकारी हो, तभी महत्त्वपूर्ण है' अत्यंत हृदयस्पर्शी है। नव नियुक्त शिक्षकों को पत्र, अरनी राबर्ट्स की रचना रिश्ते के साथ-साथ सम्पूर्ण विशेषांक संग्रहणीय है। समस्त लेखकों को साधुवाद एवं सम्पादक मण्डल को बधाई।

शान्ति लाल सेठ, बाँसवाड़ा

● माह सितम्बर 2019 का अंक शिक्षक दिवस विशेषांक के रूप में आकर्षक मुखपृष्ठ सहित प्राप्त हुआ। विभिन्न लेखकों ने अपनी लेखनी के माध्यम से गुरुओं को नमन करते हुए समाज के समक्ष गुरुता रखी है। प्राचीन समय से गुरु सम्माननीय और आदर्श रूप में सर्वमान्य रहा है और रहेगा। ईश्वर से साक्षात्कार का माध्यम भी गुरु ही है। समय-समय पर विद्वानों, कवियों व लेखकों आदि ने गुरु का महत्त्व बताया है किन्तु यह भी पर्याप्त नहीं है, कबीर ने गुरु को ईश्वर से भी बढ़कर बताया है, गुरु पूर्णिमा व शिक्षक दिवस पर हम अपने गुरु का स्मरण और श्रद्धा व्यक्त करते हैं। औपचारिक एवं अनौपचारिक शिक्षा से जुड़े सभी गुरुओं को नमन। शिविरा पत्रिका में नवाचारों को स्थान देने हेतु सम्पादक मण्डल को धन्यवाद। शिविरा पत्रिका विशेषांक में विभिन्न रचनाकारों की रचनाओं को प्रकाशित किया है। निश्चित रूप से लेखकों का मनोबल तो बढ़ेगा ही साथ नए रचनाकारों की सृजनशीलता को प्रेरणा और गति मिलेगी।

महेन्द्र कुमार शर्मा, नसीराबाद, अजमेर

Rajteachers.in

सत्यमेव जयते

नथमल डिडेल
निदेशक, माध्यमिक शिक्षा

"मुझे यह तथ्य साझा करने में सुखद अनुभूति हो रही है कि हमारे राज्य, राजस्थान में गुणवत्तापूर्ण शिक्षा प्रदान करने की हमारी प्रतिबद्धता के पक्ष में श्रेष्ठ शैक्षिक वातावरण है। आने वाले समय में हमें इसे श्रेष्ठ से श्रेष्ठतम बनाना है।"

दिशाकल्प : मेरा पृष्ठ

संकल्प, साधना और सिद्धि

मुझे यह तथ्य साझा करने में सुखद अनुभूति हो रही है कि हमारे राज्य, राजस्थान में गुणवत्तापूर्ण शिक्षा प्रदान करने की हमारी प्रतिबद्धता के पक्ष में श्रेष्ठ शैक्षिक वातावरण है। आने वाले समय में हमें इसे श्रेष्ठ से श्रेष्ठतम बनाना है। नीति आयोग के स्कूल एज्यूकेशन क्वालिटी इण्डेक्स (SEQI) में राजस्थान को दूसरा स्थान मिला है। हमारी सरकार विद्यार्थियों को गुणवत्तापूर्ण शिक्षा देने के लिए कटिबद्ध है इसकी सुनिश्चितता हेतु ठोस कदम उठाये गये हैं हम सब मिलकर अगली बार इस इण्डेक्स में पहला स्थान हासिल करने का प्रयास करेंगे। राज्य में श्रेष्ठ शैक्षिक परिदृश्य की जो निर्मिति हुई है उसमें राजकीय विद्यालयों में उत्साहजनक नामांकन वृद्धि, विषय अध्यापकों का श्रेष्ठ अध्यापन, कुशल प्रबन्धन, प्रभावी नेतृत्व देने वाले संस्थाप्रधानों, जिले और ब्लॉक स्तर के परिश्रमी शिक्षा अधिकारियों, स्थानीय अभिभावकों और भामाशाहों का सराहनीय योगदान रहा है।

अधिकांश विद्यालय अपने विद्यार्थियों के श्रेष्ठतम परीक्षा परिणाम प्राप्त करने हेतु अध्ययन-अध्यापन की सुनिश्चित कार्यअवधि की योजना बनाकर उसी के अनुरूप कार्य कर रहे हैं। चूकि वर्तमान सत्र में बोर्ड परीक्षा फरवरी माह में ही शुरू हो जाएगी अतः अपेक्षाकृत मिले कम समय को शाला में अतिरिक्त कक्षाएं लगाकर, विषय विशेषज्ञों से विमर्श, संवाद और मार्गदर्शन प्राप्त कर सौ फीसदी सफलता सुनिश्चित करनी है। कमजोर विद्यार्थियों पर विशेष ध्यान देकर श्रेष्ठ परिणाम प्राप्त कर गुणवत्ता प्राप्ति में कोई कसर नहीं रखनी है। मध्यावधि अवकाश (22 अक्टूबर से 2 नवम्बर) में त्योहारों के आनन्द के साथ-साथ शिक्षक और विद्यार्थी अपने अध्ययन-अध्यापन की श्रेष्ठता भी बनाएं रखें।

हमारा सौभाग्य है कि पूरे विश्व में अहिंसा की ताकत समझाने वाले हमारे प्रिय राष्ट्रपिता महात्मा गाँधी की 150वीं जयंती हम अक्टूबर 2019 में मना रहे हैं। राज्य के यशस्वी मुख्यमंत्री ने महात्मा गाँधी की 150वीं जयंती के आयोजनों को एक वर्ष तक आगे निरन्तर आयोजित करने का आह्वान किया है हम सभी महात्मा गाँधी के सिद्धान्तों को जीवन में अपनाने के प्रति दृढ़संकल्पित हैं। भारत माँ के ही सपूत पूर्व प्रधानमंत्री श्री लालबहादुर शास्त्री का जन्मदिवस भी हम नये संकल्पों के साथ अपने कर्तव्यपालन को श्रेष्ठतम रूप में संपादित कर मनाएंगे।

दीपावली, विजयादशमी पर्व हमारी सामूहिक मंगलेच्छा की भावना के प्रेरक पर्व हैं। इन दिनों स्वतःस्फूर्त चलने वाला स्वच्छता अभियान हमारे जीवन में स्वच्छता और स्वास्थ्य की जुगलबंदी से हमें सम्पन्नता की ओर ले जाता है।

सभी अपना-अपना कार्य पूर्ण कर्तव्यनिष्ठा और मनोयोग से करें।

स्वस्थ रहें, प्रसन्न रहें। हार्दिक शुभकामनाएँ।

(नथमल डिडेल)

Rajteachers.in

विशेष रपट

शिक्षक सम्मान

राज्यस्तरीय शिक्षक सम्मान समारोह-2019

❒ मुकेश व्यास

महान दार्शनिक, शिक्षक एवं पूर्व राष्ट्रपति डॉ. सर्वपल्ली राधाकृष्णन का जन्म दिवस 'शिक्षक दिवस' के रूप में मनाकर सम्पूर्ण राष्ट्र शिक्षकों के प्रति अपने सर्वोच्च सम्मान को प्रकट करता है। शिक्षा विभाग राजस्थान सम्मान की इस गौरवशाली परम्परा में राज्य के शिक्षकों का राज्यस्तरीय सम्मान समारोह राजधानी जयपुर स्थित बिड़ला सभागार में प्रतिवर्ष 5 सितम्बर को मनाता है। शिक्षक दिवस की पूर्व संध्या 4 सितम्बर को सम्मानित शिक्षकों के सम्मान में सांस्कृतिक संध्या का आयोजन भी गौरवशाली परम्परा का हिस्सा है।

राज्यस्तरीय शिक्षक सम्मान समारोह 2019 में प्रत्येक जिले से तीन-तीन शिक्षकों (कक्षा 1 से 5, कक्षा 6 से 8 तथा कक्षा 9 से 12 को अध्यापन करवाने वाले शिक्षकों) का पारदर्शी और विकेन्द्रीकृत पद्धति अपनाते हुए चयन किया गया। इस प्रकार राज्य के 99 शिक्षकों को सम्मान के लिए जयपुर आमंत्रित किया गया।

भव्य राज्यस्तरीय शिक्षक सम्मान समारोह-2019 के **मुख्य अतिथि** राज्य के मुख्यमंत्री राजस्थान सरकार **श्री अशोक गहलोत,** अध्यक्ष राज्यमंत्री शिक्षा (प्राथमिक एवं माध्यमिक शिक्षा) विभाग (स्वतंत्र प्रभार) पर्यटन एवं देवस्थान विभाग, राजस्थान सरकार **श्री गोविन्द सिंह डोटासरा; विशिष्ट अतिथि** राज्य मंत्री, तकनीकी शिक्षा एवं संस्कृत शिक्षा (स्वतंत्र प्रभार) चिकित्सा एवं स्वास्थ्य, आयुर्वेद एवं चिकित्सा, चिकित्सा एवं स्वास्थ्य सेवाएँ (ई.एफ.आई.) एवं सूचना एवं जनसम्पर्क विभाग, राजस्थान सरकार **श्री सुभाष गर्ग;** राज्य मंत्री उच्च शिक्षा (स्वतंत्र प्रभार) राजस्व उप निवेशन कृषि सिंचित क्षेत्रीय विकास एवं जल उपयोगिता विभाग, राजस्थान सरकार, **श्री भँवर सिंह भाटी** शिक्षकों के सम्मान हेतु गरिमामय मंच पर उपस्थित थे। भीतर और बाहर से सजे बिड़ला सभागार में प्रत्येक आगन्तुक हर्षित और रोमांचित था। चयनित शिक्षक अपने

परिजनों के साथ तो विभाग के अधिकारी शिक्षक, कर्मचारी, स्काउट और एन.सी.सी. के विद्यार्थी अपनी-अपनी ड्यूटी को मुस्तैदी से पूर्ण कर रहे थे। माध्यमिक शिक्षा विभाग के ऊर्जावान निदेशक श्री नथमल डिडेल के नेतृत्व में अधिकारियों, शिक्षकों की टीम शिक्षकों, अतिथियों के सम्मान में पलक पाँवड़े बिछाए कार्यरत थी।

निर्धारित समय 11 बजे सम्मान समारोह में मुख्य अतिथि मुख्यमंत्री श्री अशोक गहलोत के आते ही गरिमामय मंच और खचाखच भरा बिड़ला सभागार वंदे मातरम् की ओजस्वी स्वर लहरी से गुंजायमान हुआ। मुख्य अतिथि श्री अशोक गहलोत, अध्यक्ष श्री गोविन्द सिंह डोटासरा, विशिष्ट अतिथि श्री सुभाष गर्ग और श्री भँवर सिंह भाटी ने माँ सरस्वती की मूर्ति के समक्ष दीप प्रज्वलन किया। डॉ. राधाकृष्णन जी के चित्र पर माल्यार्पण और स्वागत गान के साथ ही समारोह अपनी पूरी रंगत में आ गया। गरिमामय मंच पर विराजे अति सम्माननीय अतिथियों के माल्यार्पण पश्चात **प्रमुख शासन सचिव डॉ. आर. वेंकटेश्वरन** ने स्वागत भाषण कर सभी का अभिवादन किया। शिक्षकों के सम्मान में प्रकाशित पुस्तिका 'प्रशस्तियाँ' और शिविरा मासिक पत्रिका के

शिक्षक दिवस विशेषांक का लोकार्पण मुख्य अतिथि मुख्यमंत्री श्री अशोक गहलोत के सान्निध्य में गरिमामय मंच द्वारा किया गया।

समारोह के अध्यक्ष **श्री गोविन्द सिंह डोटासरा** ने यशस्वी मुख्यमंत्री जी के नेतृत्व में राज्य में हो रहे शिक्षा के चहुँमुखी विकास के प्रति आभार व्यक्त किया।

सम्मानित शिक्षकों को बधाई देते हुए श्री डोटासरा ने शिक्षा विभाग द्वारा निरन्तर रचनात्मक कार्यों के चलते राजकीय विद्यालयों के प्रति आम नागरिकों के भरोसे और सम्मान को विशिष्ट बताया। राजकीय विद्यालयों में उत्साहजनक नामांकन वृद्धि और गुणवत्तापूर्ण शिक्षा के साथ ही महात्मा गाँधी की 150 वीं जयन्ती वर्ष में प्रत्येक जिले में अंग्रेजी माध्यम विद्यालय संचालित करने को विशिष्ट उपलब्धि बताया। शिक्षकों की नई भर्ती का मार्ग प्रशस्त करने से लेकर, पदस्थापन और बोर्ड परीक्षा परिणामों की श्रेष्ठता के साथ शिक्षा विभाग में हुए नए परिवर्तनों को सुनहरे भविष्य के संकेत के रूप में बताया।

विशिष्ट अतिथि श्री सुभाष गर्ग ने राज्य स्तर पर सम्मानित हो रहे शिक्षकों को बधाई देते हुए राज्य के मुख्यमंत्री के नेतृत्व में शिक्षा के क्षेत्र में हो रहे ठोस क्रांतिकारी कदमों

Rajteachers.in

तथा योजनाओं के प्रभावी क्रियान्वयन की जानकारी दी। शिक्षकों को समाज के पथ प्रदर्शक बताते हुए विशिष्ट अतिथि श्री सुभाष गर्ग ने उनके उज्ज्वल भविष्य की कामना की। साथ ही अपेक्षा करते हुए कहा कि सम्मानित शिक्षकों से प्रेरणा प्राप्त कर अन्य भी अच्छा कार्य करने के लिए प्रेरित होंगे। समारोह में शिक्षा के तीनों प्रकल्पों के मंत्री विशिष्ट अतिथि के रूप में उपस्थित थे।

विशिष्ट अतिथि **श्री भँवर सिंह भाटी** ने यशस्वी मुख्यमंत्री के नेतृत्व में हो रहे उच्च शिक्षा के क्षेत्र में प्रगति को राज्य के विकास से जोड़ कर बताया। राजस्थान उच्च शिक्षा में देश में अग्रणी बने इस दिशा में किए जा रहे ठोस कार्यों से अवगत करवाया।

समारोह के मुख्य अतिथि मुख्यमंत्री **श्री अशोक गहलोत** ने सम्मानित शिक्षकों को बधाई एवं शुभकामनाएँ देते हुए उन्हें समाज के प्रेरक पथ प्रदर्शक बताया। राज्य सरकार द्वारा शिक्षा को अपनी प्राथमिकता में सर्वोच्च स्थान देने को आपने रेखांकित किया। अपने पिछले कार्यकाल के दौरान 23,000 राजीव गाँधी पाठशाला खोलने को गाँव ढाणी में शिक्षा के प्रति किए गए क्रांतिकारी कदमों में प्रमुख कदम बताया। उन्होंने राजकीय विद्यालयों में गुणवत्तापूर्ण शिक्षा प्रदान करने के प्रति अपनी प्रतिबद्धता दोहराई। महात्मा गाँधी अंग्रेजी माध्यम विद्यालयों की स्थापना को प्रत्येक जिले के बाद भविष्य में ब्लॉक स्तर पर भी संचालित करने की आवश्यकता प्रतिपादित की।

मुख्य अतिथि श्री गहलोत ने जोर देकर कहा कि शिक्षा एवं स्वास्थ्य दो ऐसे पवित्र माध्यम हैं जिसमें सेवा भावना जुड़ी है। उन्होंने कहा कि निजी स्कूलों को शिक्षा को कमाई का साधन नहीं बनाना चाहिए। शिक्षा के मंदिर 'न लाभ न हानि' के सिद्धांत पर संचालित होने चाहिए। अंग्रेजी माध्यम के नाम पर निजी विद्यालयों द्वारा अधिक फीस लेने को मुख्यमंत्री ने दुर्भाग्यपूर्ण बताया। समारोह में मुख्यमंत्री ने सम्मानित शिक्षकों के सम्मान में राज्य की रोडवेज बसों में यात्रा को निःशुल्क करने की घोषणा की। साथ ही सम्मानित शिक्षकों के लिए हाउसिंग बोर्ड के मकान और अन्य योजना में विशेष छूट की घोषणा की।

उल्लेखनीय है कि राज्य स्तर पर 99 शिक्षकों के साथ-साथ ब्लॉक और जिलेस्तर पर भी शिक्षकों का सम्मान कार्यक्रम आयोजित करना राज्य में अधिकतम शिक्षकों का सम्मान करना, शासन की शिक्षकों के प्रति सम्मान भावना को दर्शाता है। राज्यस्तरीय समारोह में गरिमामय मंच के साथ यादगार फोटो खिंचवाकर शिक्षकों का सम्मान किया गया। माध्यमिक शिक्षा विभाग राजस्थान के ऊर्जस्वी निदेशक **श्री नथमल डिडेल** ने सम्मान समारोह में पधारे सभी के प्रति धन्यवाद ज्ञापित किया। सम्मानित शिक्षकों के सम्मान के साथ ही अन्य शिक्षकों से भी अपेक्षा करते हुए उन्होंने कहा कि इस प्रकार के आयोजन हमें कर्तव्य पथ पर और निष्ठा तथा मनोयोग के साथ दृढ़ता से कार्य करने की प्रेरणा देते हैं।

धन्यवाद ज्ञापन के बाद सभागार में उपस्थित सभी ने खड़े होकर राष्ट्रगान का ओजस्वी स्वर में गायन किया। इस प्रकार 5 सितम्बर शिक्षक दिवस समारोह सभी के मुखमंडल पर कांति बिखेरते हुए संपन्न हुआ। समारोह का संचालन डॉ. सुभाष कौशिक और आभा द्विवेदी ने किया।

4 सितम्बर सायं छः बजे बिड़ला सभागार में सम्मानित शिक्षकों के सम्मान में हर वर्ष की भाँति इस वर्ष भी सांस्कृतिक संध्या का आयोजन हुआ। इसमें राज्य के विभिन्न क्षेत्रों से आए शिक्षक कलाकारों ने ऊर्जा से परिपूरित

प्रस्तुतियाँ दी। सरस्वती वंदना से लेकर एकल नृत्य, सामूहिक नृत्य, लोक नृत्य, भाँगड़ा इत्यादि की प्रभावशाली प्रस्तुति ने सभी को भाव विभोर किया। सांस्कृतिक संध्या के **मुख्य अतिथि** शिक्षा राज्य मंत्री (स्वतंत्र प्रभार) **श्री गोविन्द सिंह डोटासरा** तथा **अध्यक्ष** राज्य मंत्री (तकनीकी एवं संस्कृत शिक्षा) स्वतंत्र प्रभार **श्री सुभाष गर्ग** के सान्निध्य में सांस्कृतिक संध्या का आयोजन सफल रहा। संचालन राजकुमार 'इन्द्रेश' और आभा द्विवेदी ने किया।

Rajteachers.in

डॉ. सर्वपल्ली राधाकृष्णन का जीवन परिचय

डॉ. सर्वपल्ली राधाकृष्णन (5 सितम्बर 1888-17 अप्रैल 1975) भारत के प्रथम उप राष्ट्रपति (1952-1962) और द्वितीय राष्ट्रपति रहे। वे भारतीय संस्कृति के संवाहक, प्रख्यात शिक्षाविद, महान दार्शनिक और एक आस्थावान हिन्दू विचारक थे। उनके इन्हीं गुणों के कारण सन् 1954 में भारत सरकार ने उन्हें सर्वोच्च सम्मान भारत रत्न से अलंकृत किया था। उनका जन्मदिन (5 सितम्बर) भारत में 'शिक्षक दिवस' के रूप में मनाया जाता है।

जन्म एवं परिवार : डॉ. राधाकृष्णन का जन्म तमिलनाडु के तिरुतनी ग्राम में, जो तत्कालीन मद्रास से लगभग 64 कि.मी. दूरी पर स्थित है, में हुआ था। जिस परिवार में उन्होंने जन्म लिया वह एक ब्राह्मण परिवार था। उनका जन्म स्थान भी एक पवित्र तीर्थस्थल के रूप में विख्यात रहा है। राधाकृष्णन के पुरखे पहले कभी सर्वपल्ली नामक ग्राम में रहते थे और 18वीं शताब्दी के मध्य में उन्होंने तिरुतनी ग्राम की ओर निष्क्रमण किया था। लेकिन उनके पुरखे चाहते थे कि उनके नाम के साथ उनके जन्मस्थल के ग्राम का बोध भी सदैव रहना चाहिए। इसी कारण उनके परिजन अपने नाम के पूर्व 'सर्वपल्ली' धारण करने लगे थे।

डॉ. राधाकृष्णन एक गरीब किन्तु विद्वान

ब्राह्मण की सन्तान थे। उनके पिता का नाम 'सर्वपल्ली वीरास्वामी' और माता का नाम 'सीताम्मा' था। उनके पिता राजस्व विभाग में काम करते थे। उन पर बहुत बड़े परिवार के भरण-पोषण का दायित्व था। वीरास्वामी के पाँच पुत्र तथा एक पुत्री थे। राधाकृष्णन का स्थान इन सन्ततियों में दूसरा था। उनके पिता काफी कठिनाई के साथ परिवार का निर्वहन कर रहे थे। इस कारण बालक राधाकृष्णन को बचपन में कोई विशेष सुख प्राप्त नहीं था।

मानद उपाधियाँ

- सन् 1931 से 1936 तक आन्ध्र विश्वविद्यालय के वाइस चांसलर रहे।
- ऑक्सफोर्ड विश्वविद्यालय में 1936 से 1952 तक प्राध्यापक रहे।
- कलकत्ता विश्वविद्यालय के अन्तर्गत आने वाले जॉर्ज पंचम कॉलेज के प्रोफेसर के रूप में 1937 से 1941 तक कार्य किया।
- सन् 1939 से 1943 तक काशी हिन्दू विश्वविद्यालय के चांसलर रहे।
- 1953 से 1962 तक दिल्ली विश्वविद्यालय के चांसलर रहे।
- 1946 में यूनेस्को में भारतीय प्रतिनिधि के रूप में अपनी उपस्थिति दर्ज कराई।

1952 में सोवियत संघ से आने के बाद डॉ. राधाकृष्णन उपराष्ट्रपति निर्वाचित किए गए तथा 13 मई 1962 को भारत के राष्ट्रपति निर्वाचित हुए।

भारत रत्न- यद्यपि 1931 में ब्रिटिश साम्राज्य द्वारा 'सर' की उपाधि प्रदान की गई थी। स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद इसका औचित्य नहीं रहा। 1954 में महान दार्शनिक व शैक्षिक उपलब्धियों के लिए देश का सर्वोच्च अलंकरण 'भारत रत्न' प्रदान किया गया।

सन् 1962 से डॉ. राधाकृष्णन जी के सम्मान में उनके जन्म दिवस 05 सितम्बर को शिक्षक दिवस के रूप में मनाया जाता है।

राज्यस्तरीय शिक्षक सम्मान समारोह 05 सितम्बर, 2019 हेतु सम्मानित शिक्षकों की सूची

1. सुरेश कुमार बराला, प्रबोधक
   रा. शिक्षाकर्मी प्रा.वि. बवल्या की ढाणी, जाजोता, अजमेर
2. भागचंद, अध्यापक
   रा.उ.प्रा.वि., अहेड़ा अराँई, अजमेर
3. डॉ. ममता सोनगरा, प्रधानाचार्या
   रा.उ.मा.बा.वि. श्रीनगर रोड, अजमेर
4. किशोर कुमार यादव, अध्यापक
   रा.उ.प्रा.वि. भीमसिंहपुरा, अलवर
5. विजेन्द्र सिंह, शारीरिक शिक्षक
   रा.उ.प्रा.वि. खुदनपुरी, अलवर
6. शिवराम मीना, व्याख्याता हिन्दी
   श्री प्यारेलाल गुप्ता रा.उ.मा.वि., राजगढ़, अलवर
7. उषा पण्ड्या, अध्यापिका
   रा.उ.प्रा.वि. हेरपाड़ा, कुवानिया (बांसवाड़ा)
8. शिवशंकर सुथार, अध्यापक
   रा.उ.मा.वि., तलवाड़ा
9. धर्मेन्द्र कुमार दवे, व्याख्याता भूगोल
   रा.उ.मा.वि. सुन्दनपुर, बाँसवाड़ा
10. निर्मला सिंह, वरिष्ठ अध्यापिका
    रा.मा.वि. रतनपुरा (अटरू) बाराँ
11. माँगीलाल, अध्यापक
    रा.उ.मा.वि. सुभाषपुरा, अटरू
12. अकील अहमद, व्याख्याता, उर्दू
    रा.उ.मा.वि. किशनगंज, बाराँ
13. बीजा राम, अध्यापक
    रा.प्रा.वि. तिरमिंगडी चौहान, बाड़मेर
14. केसाराम, प्रबोधक
    रा.उ.प्रा.वि. निम्बला नाडा, मेली, बाड़मेर
15. भाखरा राम, व्याख्याता
    रा.उ.मा.वि., लोहारवा, बाड़मेर
16. सुनिता शर्मा, अध्यापिका
    रा.उ.मा.वि. अरौदा, भरतपुर
17. राकेश कुमार जाटव, अध्यापक
    रा.आ.उ.प्रा.वि. देवरी, रूपवास, भरतपुर
18. हरवीर सिंह, प्रधानाचार्य
    रा.उ.मा.वि. अऊ (डीग), भरतपुर
19. विकास पारीक, अध्यापक
    रा.प्रा.वि. रामाजी का खेड़ा, आसींद, भीलवाड़ा
20. घनश्याम रेगर, अध्यापक
    रा.उ.मा.वि. आमेसर, भीलवाड़ा
21. उदय लाल सेन, व. शारीरिक शिक्षक
    रा.उ.मा.वि. पुलिस लाइन भीलवाड़ा
22. राम किशन खिलेरी, प्रबोधक
    रा. शिक्षाकर्मी प्रा.वि., कंवालिया प्याऊ, रामनगर, उदासर, पाँचू, बीकानेर
23. उषा गहलोत, अध्यापिका
    रा.उ.मा.वि. आडूरी ब्लॉक खाजुवाला, बीकानेर
24. पवन कुमार मोदी, व. अध्यापक संस्कृत
    रा.आ.उ.मा.वि. गजनेर, बीकोनर
25. गुरजीत कोर, अध्यापिका
    रा.प्रा.वि. भावपुरा अडीला, बूँदी
26. तेज प्रताप सिंह, अध्यापक
    रा.मा.वि. केशवपुरा, बूँदी
27. अभिषेक गौतम, व्याख्याता
    रा.उ.मा.वि. टोंकड़ा, हिण्डोली, बूँदी
28. गोपाल लाल जाट, अध्यापक
    रा.प्रा.वि. बख्तावरपुरा, चित्तौड़गढ़
29. अशोक कुमार कोचीटा, प्रधानाध्यापक
    रा.उ.प्रा.वि. माताजी का खेड़ा, चित्तौड़गढ़

Rajteachers.in

30. राजकुमार तोलम्बिया, व्याख्याता
रा.उ.मा.वि बस्सी, चित्तौड़गढ़
31. संदीप कुमार शर्मा, अध्यापक
रा.बा.उ.प्रा.वि. भैसली राजगढ़ (चूरू)
32. सरोज कुमारी, शारीरिक शिक्षिका
रा.बा.उ.प्रा.वि. भोजासर, रतनगढ़ (चूरू)
33. खिराज सिंह भाकर, व्याख्याता, भूगोल
रा.आ.उ.मा.वि. गाजुवास, तारानगर, चूरू
34. कुलदीप शर्मा, अध्यापक
रा. उ.प्रा.वि. मोरडी, बाँदीकुई, दौसा
35. महेन्द्र कुमार शर्मा, प्रबोधक
रा.उ.प्रा.वि. बाढ़ बिशनपुरा, दौसा
36. संतोष कुमार स्वर्णकार, व.अ. हिन्दी
रा.उ.मा.वि. खुर्रा, लालसोट (दौसा)
37. राहुल कुमार शर्मा, अध्यापक
रा.प्रा.वि. नारायनपुरा, बसेड़ी, धौलपुर
38. लोकेश यादव, अध्यापक
रा.उ.प्रा.वि. तीराजपुर, राजाखेड़ा, धौलपुर
39. राजेश कुमार उपाध्याय, व्याख्याता भौतिकी
रा.उ.मा.वि. मनिया, धौलपुर
40. नीलम भावसार, अध्यापिका
रा.प्रा.वि. रतनपुर बिछीवाड़ा, डूँगरपुर
41. राजेन्द्र सिंह, प्रबोधक
रा.प्रा.वि. अहारी फला, डूँगरपुर
42. विनोद कुमार सुथार, व्याख्याता
रा.उ.मा.वि. चितरी, डूँगरपुर
43. राजकुमार नागपाल, अध्यापक
रा.मा.वि. भुट्टीवाला, गंगानगर
44. रामप्रताप, प्रबोधक
रा.उ.प्रा.वि., 9 ए.एस.ए., गंगानगर
45. नीलम शर्मा, प्रधानाचार्या
रा.उ.मा.वि., रघुनाथपुरा, गंगानगर
46. पृथ्वी सिंह, अध्यापक
रा.उ.प्रा. संस्कृत वि., हनुमानगढ़
47. राजेश कुमार स्वामी, अध्यापक
रा.उ.मा.वि. भादरा, हनुमानगढ़
48. नीतू बाला, व्याख्याता
रा.बा.उ.मा.वि. टिब्बी, हनुमानगढ़
49. हनुमान सहाय यादव, अध्यापक
रा.बा.उ.प्रा.वि., बिशनगढ़, शाहपुरा
50. मनोज शर्मा, अध्यापक
रा.उ.प्रा.वि., रामगंज, जयपुर
51. मदन कुमार मीना, व्याख्याता
रा.उ.मा.वि. चन्दवाजी, आमेर, जयपुर
52. लोकेन्द्र कुमार, अध्यापक
रा.प्रा.वि. कमियों की ढाणी हंसुल, जैसलमेर
53. रहीम खान, अध्यापक
रा.उ.मा.वि. फतेहगढ़, जैसलमेर
54. राजेन्द्र सिंह, व्याख्याता हिन्दी
रा.उ.मा.वि. सोनू, जैसलमेर
55. आशाराम, अध्यापक
रा.आ.उ.मा.वि. खिरोड़ी, जालौर
56. दुर्ग सिंह दहिया, प्रबोधक
रा.उ.प्राथ.वि. सायला, गोलिया, जालौर
57. दिनेश विश्नोई, व्याख्याता, जीव विज्ञान
रा.उ.मा.वि. जसवंतपुरा, जालौर
58. कुंजबिहारी मीणा, अध्यापक
रा.प्रा.वि. सरकण्डी खुर्द, झालावाड़
59. बद्रीश दांगी, वरिष्ठ अध्यापक
राज.आ.उ.मा.वि. भालता, झालावाड़
60. रतन लाल, वरिष्ठ अध्यापक, विज्ञान
रा.उ.मा.वि. सरखण्डिया, झालावाड़
61. सुदेश कुमार, अध्यापक
रा.उ.प्रा.वि. ब्रजपुरा बुहाना, झुंझुनूं
62. राघवेन्द्र कृष्ण त्रिपाठी, अध्यापक
शहीद जाकिर अली रा.आ.उ.मा.वि., गिडानिया, झुंझुनूं
63. बलवीर सिंह नेहरा, व्या. राज. विज्ञान
रा.उ.मा.वि. दोरासर, झुंझुनूं
64. सत्य प्रकाश सेन, अध्यापक
रा.आ.उ.प्रा.वि. ऊटवालिया, जोधपुर
65. हरदेव पालीवाल, अध्यापक
रा.उ. प्रा.वि. मण्डला खुर्द, जोधपुर
66. शीला आसोपा, प्रधानाचार्या
रा.उ.मा.वि. धवा, जोधपुर
67. श्यामवीर सिंह सोलंकी, अध्यापक
रा.मा.वि. जाटव बस्ती अटकौली, करौली
68. कल्याण प्रसाद शर्मा, अध्यापक
रा.मा.वि. सीतापुर, करौली
69. हरिकेश मीना, व्याख्याता, हिन्दी
रा.उ.मा.वि. नारौली डांग, करौली
70. अवधेश बहादुर सिंह हाड़ा, अध्यापक
रा.उ.प्रा.वि. बन्धा सिटी, कोटा
71. मोहन लाल धाकड़, अध्यापक
रा.उ.मा.वि. खैराबाद, कोटा
72. अशोक कुमार महावर, व.अ. अंग्रेजी
रा.उ.मा. बा.वि. खोड़ावदा, कोटा
73. भींवराज चाँगल, अध्यापक
राज.बा.उ.प्रा.वि. अड़वड़, मूण्डवा, नागौर
74. रामेश्वर नाथ जुँजालिया, व.अ.
रा.उ.मा.वि. धाँधलास, उदा, नागौर
75. पूर्णाराम, व्याख्याता
रा.उ.मा.वि. सानिया, डीडवाना, नागौर
76. भँवर लाल कुमावत, अध्यापक
रा.बा.प्रा. संस्कृत वि. मोहराई, पाली
77. किशनाराम विश्नोई, अध्यापक
रा.उ.प्रा.वि. विश्नोइयों की ढाणी, पाली,
78. सिद्धार्थ ओझा, शारीरिक शिक्षक
रा.मा.वि. निम्बाड़ा, पाली
79. ममता शर्मा, अध्यापिका
रा.प्रा.वि. आमली खोरा, प्रतापगढ़
80. पुष्पेन्द्र सिंह राठौड़, प्रबोधक
रा.उ.प्रा.वि. केसरपुरा, प्रतापगढ़,
81. ओमप्रकाश कुड़ी, प्रधानाचार्य
रा.उ.मा.वि. रतनपुरिया, प्रतापगढ़
82. कृष्ण गोपाल गुर्जर, प्रबोधक
रा.प्रा.वि. भोपा की भागल, राजसमंद,
83. हीरालाल कुमावत, शारीरिक शिक्षक
रा.उ.मा.वि. राजपुरा, राजसमंद,
84. वर्दी शंकर गाडरी, व.अ. अंग्रेजी
रा.उ.मा.वि. राजपुरा, राजसमंद
85. अरविन्द कुमार जैन, अध्यापक
रा.आ.उ.मा.वि. धमूनकलाँ, सवाईमाधोपुर,
86. ओमप्रकाश तेली, प्रधानाचार्य
स्वामी विवेकानन्द रा. मॉडल स्कूल, सूरवाल, सवाई माधोपुर
87. राजबाला, व्याख्याता, हिन्दी
रा.उ.मा.वि. गंगापुर सिटी, सवाईमाधोपुर
88. सुरेन्द्र कुमार ढाका, अध्यापक
रा.प्रा.वि. रघुनाथपुरा, फतेहपुर, सीकर
89. शोभा, अध्यापिका
रा.मा.वि. नांगल भीम, सीकर
90. प्रमोद कुमार सैनी, व्याख्याता, इतिहास
रा.आ.उ.मा.वि. सिंहासन, सीकर
91. शालिनी राठौड़, अध्यापिका
रा.बा.उ.प्रा.वि. सांतपुर, सिरोही,
92. मुकेश कुमार, अध्यापक
रा.उ.प्रा.वि. नानरवाड़ा, सिरोही,
93. संदीप कुमार, व.अ. विज्ञान
रा.मा.वि. फलवदी, सिरोही
94. भँवरलाल गुर्जर, अध्यापक
रा.उ.प्रा.वि. थड़ी खुर्द, मालपुरा, टोक
95. रामकिशन गुर्जर, शारीरिक शिक्षक
रा.उ.मा.वि. खिड़गी, निवाई, टोक
96. ओमप्रकाश शर्मा, वरिष्ठ अध्यापक
रा.उ.मा.वि. मोलाईपुरा, टोंक
97. रमेश, अध्यापक
रा.प्रा.वि. बराँ, मालपुर, उदयपुर
98. प्रकाश जगरवाल, शारीरिक शिक्षक
रा.उ.प्रा.वि. वासनी माफी, उदयपुर
99. नरेन्द्र श्रीमाल, व्याख्याता, जीव विज्ञान
रा.उ.मा.वि. मन्देसर (भीण्डर), उदयपुर

संपादक शिविरा
मो. 9460618809

Rajteachers.in

राष्ट्रीय शिक्षक पुरस्कार

राज्य का गौरव

सर्वप्रथम मैं ईश्वर के प्रति आभार अर्पित करती हूँ कि मुझे वीरों की धरा राजस्थान में शिक्षा विभाग में कार्य करने का सुअवसर प्राप्त हुआ। दिनांक 01.07.1996 से राजकीय सेवा में व्याख्याता (जीव विज्ञान) के पद पर प्रथम नियुक्ति के साथ ही मैंने मस्तिष्क में विद्यार्थियों हेतु अनेक संकल्पनाएँ संजोयीं। कक्षा में अध्यापन कार्य को प्राथमिकता देने के उपरांत विद्यार्थियों के सर्वांगीण विकास की दिशा में वैज्ञानिक दृष्टिकोण के विकास को सर्वाधिक महत्त्व दिया।

एक शिक्षक को राजकीय दायित्वों से अलग हटकर समुदाय को विद्यालय से जोड़ना प्राथमिकता होनी चाहिए ताकि विद्यालय के चहुँमुखी विकास हेतु समुदाय की अधिकतम भागीदारी सुनिश्चित की जा सके। इस हेतु एसडीएमसी, एसएमसी, अभिभावक शिक्षक परिषद में दोनों पक्षों पर विचार विमर्श, समस्या के समाधान हेतु निष्पक्ष परिचर्चा होनी चाहिए ताकि सभी सदस्य निर्णय की पालना में अपना योगदान का अनुभव करें। इस प्रकार की परिपाटी से विद्यालय में अनुशासन, अध्यापन, भौतिक विकास, विद्यार्थियों का सर्वांगीण विकास संभव होता हैं।

NAT-2019 हेतु ऑनलाइन आवेदन की सभी अर्हताएँ पूर्ण करने के उपरांत दिनांक 21.08.2019 को मुझे राष्ट्रीय शिक्षक पुरस्कार हेतु चयन होने की सूचना प्राप्त हुई। मैं इसका संपूर्ण श्रेय विद्यार्थियों, शिक्षक साथियों, अभिभावकों एवं समुदाय को समर्पित करना चाहती हूँ जिनके सहयोग से यह उपलब्धि संभव हुई। दिनांक 02.09.2019 को दिल्ली आगमन के पश्चात् दिनांक 05.09.2019 तक संपूर्ण कार्यक्रम की रूपरेखा ज्ञात हुई। दिनांक 02.09.2019 को श्रीमान संयुक्त सचिव महोदय द्वारा संपूर्ण कार्यक्रम के संबध में आवश्यक निर्देश प्रदान किए गए। दिनांक 03.09.2019 को माननीय प्रधानमंत्री महोदय से निवास पर मुलाकात करने का सुअवसर प्राप्त

डॉ. कल्पना शर्मा

हुआ। माननीय प्रधानमंत्री महोदय द्वारा लगभग 45 मिनिट के वार्तालाप के दौरान सभी शिक्षकों को आह्वान किया गया कि विद्यार्थियों को इस प्रकार तैयार करें कि वह प्रतिदिन स्वयं से प्रतिस्पर्धा करें अर्थात कल से आज बेहतर करने का प्रयास करें। माननीय प्रधानमंत्री महोदय द्वारा सम्मानित होने वाले शिक्षकों से अनेक बिंदुओं पर चर्चा की गई यथा नामांकन अभिवृद्धि, ड्राप आउट की समस्या को रोकने हेतु प्रयास करने का आह्वान किया। माननीय प्रधानमंत्री महोदय द्वारा जब यह पूछा गया कि आपके जीवन की कोई ऐसी घटना बताइये जिसमें आपको शिक्षक होने पर गर्व की अनुभूति हुई हो। इस पर मैंने रा.बा.उ.मा.वि. रेजीडेन्सी उदयपुर में मेरी प्रथम नियुक्ति के दौरान छात्रा सुश्री सरला वर्मा को जीव विज्ञान विषय के चयन हेतु मेरे द्वारा किए गए प्रयास के फलस्वरूप उक्त छात्रा वर्तमान में NCERT NEW DELHI में जन्तु विज्ञान में प्राध्यापक के पद पर कार्यरत होने का जिक्र किया जिसे माननीय प्रधानमंत्री महोदय प्रभावित हुए। दिनांक 04.09.2019 को शिक्षक सम्मान समारोह का पूर्वाभ्यास करवाया गया एवं सायं 7 बजे होटल अशोका , चाणक्यपुरी , नई दिल्ली में माननीय मानव संसाधन विकास मंत्री महोदय द्वारा सम्मानित होने वाले शिक्षकों हेतु रात्रि भोज का आयोजन किया गया। इस अवसर पर आयोजित समारोह में मुझे राजस्थान की और से अपने विचार व्यक्त करने का अवसर प्राप्त हुआ। अपने उद्बोधन में मैंने विद्यालय में किए गए शैक्षिक नवाचारों व सामुदायिक गतिशीलता पर प्रकाश डालते हुए रा.बा.उ.मा.वि. पुर भीलवाड़ा में व्याप्त अंधविश्वास एवं भ्रान्तियों को दरकिनार कर 2688 वर्गफीट भूमि विद्यालय के पक्ष में बख्शीश करवाने का जिक्र किया।

दिनांक 05.09.2019 राजकीय सेवा में स्वर्णिम दिवस के रूप में अवतरित हुआ। महामहिम राष्ट्रपति महोदय के साथ सभी सम्मानित शिक्षक सदस्यों के साथ ग्रुप फोटो के पश्चात विज्ञान भवन में महामहिम के कर कमलो द्वारा प्रशंसा पत्र, रजत पदक प्रदान किए गए। पुरस्कार प्रदान करते समय महामहिम द्वारा बधाई कल्पना जी सुनकर मैं गदगद हो गई। यह मेरे जीवन का एक अदभूत क्षण था। पुरस्कार समारोह के पश्चात् सम्मानित शिक्षकों को राष्ट्रपति भवन का भ्रमण कराया गया।

पुरस्कार प्राप्ति के पश्चात् आगामी कार्यकाल में पुन: नई शक्ति एवं ऊर्जा के साथ राजकीय दायित्वों का निर्वहन करूंगी तथा इसी कार्यपद्धति द्वारा विद्यालय एवं विद्यार्थियों के सर्वांगीण विकास द्वारा देश का जिम्मेदार नागरिक बनाने में निरंतर प्रयासरत रहुंगी।

वर्ष 1989 में बी.एससी. प्रथम श्रेणी, वर्ष 1991 में एम.एससी. (वनस्पति विज्ञान) वरीयता सूची में प्रथम स्थान एवं स्वर्ण पदक विजेता, वर्ष 1993-97 एमएलएसयु, उदयपुर वनस्पतिक विज्ञान में शोध (शीर्षक-दक्षिण पूर्वी राजस्थान अरावली की पहाडियों पर पाई जाने वाली ब्रेकेरिया प्रजाति की घास का पारिस्थितिक अध्ययन) किया। वर्ष 1996 में राज्य लोक सेवा आयोग, अजमेर द्वारा व्याख्याता (जीव विज्ञान) के पद पर चयन होकर राज्य में द्वितीय स्थान प्राप्त किया। वर्ष 2004 में आरपीएससी द्वारा प्रधानाध्यापक के पद पर चयन पश्चात् दिनांक 26.02.2004 को रा.बा.मा.वि. रायला में प्रधानाध्यापक के पद

Rajteachers.in

पर एवं वर्ष 2013 में प्रधानाचार्य के पद पर पदौन्नति के फलस्वरूप दिनांक 07.05.2013 को रा.बा.उ.मा.,ब्राहम्णों की सरेरी, (भीलवाड़ा) में प्रधानाचार्य के पद पर कार्यग्रहण किया।

सकूरा यूथ एक्सचेंज प्रोग्राम इन साइंस एवं टेक्नोलॉजी के तहत विदेश भ्रमण– मानव संसाधन मंत्रालय, भारत सरकार एवं जापान सरकार के संयुक्त तत्वाधान में प्रायोजित सकूरा यूथ एक्सचेंज प्रोग्राम के तहत विज्ञान के क्षेत्र में अर्जित उल्लेखनीय उपलब्धियों के फलस्वरूप राजस्थान सरकार द्वारा सत्र 2017-18 में दिनांक 07.04.2018 से 14.04.2018 तक राजस्थान के 6 मेधावी विद्यार्थियों को जापान के विश्वविद्यालय, अनुसंधान केन्द्र, सुपर हाई स्कूल, मेरीन सेंटर ऐतिहासिक स्थल आदि का भ्रमण करने हेतु सुपरवाईजर टीचर के पद पर जापान भ्रमण का अवसर प्राप्त हुआ।

राज्य स्तरीय विज्ञान एवं जनसंख्या व विकास शिक्षा मेला:– सत्र 1997-98 से 2001-2002, 2010-11 से 2012-2013 तक निरंतर राज्य एवं जिलास्तर पर विज्ञान क्विज कार्ड लेखन एवम् क्विज मास्टर के रूप में उत्कृष्ट कार्य किया। सत्र 2000-2001 में एसआईईआरटी, उदयपुर द्वारा आयोजित जिला स्तरीय जनसंख्या एवं जीवन की गुणवत्ता विषय पर पत्र वाचन प्रतियोगिता (शिक्षकों हेतु), सत्र 2013-14 एवं 2014-15 लगभग 4000 शब्दों में जनसंख्या शिक्षा विषयक निबन्ध जेण्डर संवेदनशीलता एवं लैंगिक विभेद के प्रति परस्पर गलत अवधारणा तथा महिला शिक्षा -जनसंख्या स्थायित्व की कुंजी पर में राज्यस्तर पर प्रथम स्थान प्राप्त किया।

माध्यमिक शिक्षा बोर्ड, राजस्थान अजमेर:– सत्र 2000-2001 में मा.शि.बो., राजस्थान, अजमेर की और से आयोजित सृजनात्मक प्रतियोगिता में अध्यापन प्रतियोगिता में जिलास्तर एवं राज्यस्तर पर प्रथम स्थान ,सत्र 2006-07 एवं 2011-12 में माध्यमिक शिक्षा बोर्ड, राजस्थान, अजमेर द्वारा आयोजित सृजनात्मक प्रतियोगिता (शिक्षकों हेतु) में अध्यापन प्रतियोगिता में जिलास्तर पर प्रथम स्थान, सत्र 2012-2013 में जिलास्तरीय अध्यापन प्रतियोगिता मे प्रथम एवं राज्यस्तरीय प्रतियोगिता में द्वितीय स्थान प्राप्त किया।

राष्ट्रीय कार्यक्रम:– पल्स पोलियो अभियान में सक्रिय योगदान हेतु श्रीमान उपखण्ड अधिकारी बनेडा द्वारा प्रंशसा पत्र प्रदान किया गया। वर्ष 2015-16 में वृक्षारोपण हेतु श्रीमान जिला कलक्टर महोदय, भीलवाड़ा द्वारा वन प्रसारक पुरस्कार से सम्मानित किया गया।

शोध कार्य:– डाईट भीलवाड़ा के अंतर्गत सत्र 2005-06 से निरन्तर लगभग 25 विषयों पर क्रियात्मक अनुसंधान संपादित किये गए।

राष्ट्रीय साक्षरता कार्यक्रम:– सत्र 2004-05 में समतुल्य शिक्षा कार्यक्रम के तहत भाषा एवं पर्यावरण स्तर-ए की पुस्तक लेखन का कार्य किया। साक्षर भारत मिशन 2012 के अंतर्गत जिला भीलवाड़ा एवं चित्तौड़ की विभिन्न पंचायत समितियों में मीट दा जीपी एंड बीपी प्रेसीडेंट कैम्पेन में राज्य संदर्भ व्यक्ति के रूप में जनप्रतिनिधि गण (प्रधान एवं संरपच) से संपर्क कर प्रशिक्षण दिया। साक्षर भारत मिशन में उल्लेखनीय कार्य हेतु श्रीमान जिला कलक्टर महोदय, भीलवाड़ा द्वारा साक्षरता दिवस (8 सितम्बर) के अवसर पर प्रशस्ति पत्र देकर सम्मानित किया गया।

राष्ट्रीय पर्व/आयोजन/सम्मान:– श्रीमान जिला कलेक्टर महोदय भीलवाड़ा के आदेशानुसार गणतंत्र दिवस 2011 से स्वाधीनता दिवस 2013 तक जिलास्तरीय समारोह तक निरंतर उदघोषक के रूप में कार्य किया। 65 वें स्वाधीनता दिवस 15 अगस्त 2011 के अवसर पर शिक्षा के क्षेत्र में किए गए उत्कृष्ट कार्यो हेतु श्रीमान जिला कलेक्टर महोदय द्वारा जिलास्तर पर सम्मानित किया गया।

भामाशाह का योगदान:– सत्र 2013-14 में रा.बा.उ.मा.वि. पुर भीलवाड़ा में विद्यालय में पिछवाड़े में प्राचीन खण्डहर युक्त ऐतिहासिक भूमि में घनी झाड़ियों थी जिसे भूतहा होने की किंवदंतियां प्रचलित थीं। भूस्वामी श्री कुदंनमल नाहर निवासी भीलवाडा को प्रेरित कर अन्धविश्वास एवं भ्रान्तियों को दरकिनार कर विद्यालय हित में भूमि दान हेतु तैयार कर भूमि 2688 वर्ग फीट बाजार मूल्य राशि 3024000/- अक्षरे तीस लाख चौबीस हजार मात्र विद्यालय को बक्शीश पत्र के जरीए दिनांक 12.02.2014 को नि:शुल्क प्रदान की गई । सत्र 2017-18 में एसवीजीएमएस बनेडा में श्री अभिषेक चेचाणी, भीलवाड़ द्वारा सरस्वती मंदिर में प्रतिमा रु. 15000/- एवं श्री भैरूसिंह जी निवासी कमालपुरा बनेडा द्वारा मंदिर निर्माण रु. 15000/- व्यय कर मंदिर बनवाया गया। सत्र 2017 में विभिन्न भामाशाहों द्वारा दो दिवसीय राज्यस्तरीय विज्ञान मेले के आयोजन की संपूर्ण भोजन, आवास, टेंट आदि की व्यवस्था हेतु लगभग रु. 200000/- दो लाख मात्र व्यय हुए। नार्गाजुन कं. लि., हैदराबाद (चंबल प्रौजेक्ट) कैम्प भीलवाडा द्वारा 7 सीसीटीवी कैमरे लागत रु. 25000/-, भामाशाह के सहयोग से लगभग रु. 68850/- लागत का स्मार्ट क्लास रूम, खुला पुस्तकालय लागत रु. 15000/- स्थापित किया गया।

प्रशिक्षण कार्यक्रम:– सत्र 2015-16 में न्यूपा, दिल्ली द्वारा आयोजित एक माह का स्कूल लीडरशिप एवं मैनेजमेंट प्रशिक्षण प्राप्त कर परीक्षा ग्रेड ए में उत्तीर्ण की।

लेखन एवं प्रकाशन:– सत्र 2015-16 में माध्यमिक शिक्षा बोर्ड, राजस्थान, अजमेर के तत्वाधान में वर्तमान में कक्षा 11 में जीव विज्ञान सैद्वान्तिक एवं प्रायोगिक पाठ्यपुस्तक लेखन समिति में सदस्य के रूप में कार्य किया।

नामांकन अभिवृद्धि:– नामांकन वृद्धि एवं ड्राप आऊट को रोकने हेतु नामांकन रथ यात्रा द्वारा गाँव-गाँव संपर्क किया, ड्राप आऊट विद्यार्थियों को मिस यू कार्ड देकर पुन: विद्यालय आने हेतु जागरूक करना, निरंतर उपस्थित रहने वाले विद्यार्थियों की माता को जागरूक माता के रूप में सम्मानित किया गया। प्रत्येक विद्यालय में नामांकन अभिवृद्धि हेतु प्रवेशोत्सव अभियान के अंतर्गत रैली, ढोल मंजीरे के साथ प्रवेश हेतु गाँवों में घर-घर संपर्क किया।

सत्र 2016-17 में दिनांक 10.08.2016 को स्वामी विवेकानन्द राजकीय मॉडल स्कूल, बनेडा, जिला भीलवाड़ा में मेरे कार्यग्रहण के समय कक्षा 6 से 8 तक नवपदस्थापित विद्यालय में कुल नामांकन 80 था। इस न्यून नामांकन की समस्या को दूर करने हेतु नामांकन रथ यात्रा द्वारा पेम्पलेट्स, फ्लैक्स,

Rajteachers.in

बैनर द्वारा बनेडा ब्लॉक के लगभग 30 गाँवों में प्रचार प्रचार किया एवं जनसाधारण को अंग्रेजी माध्यम के मॉडल विद्यालय का महत्त्व समझाकर प्रवेश लेने हेतु प्रेरित किया गया। जिसके फलस्वरूप सत्र 2016-17 में ही नामांकन सितंबर 2016 तक 144 हो गया। आगामी सत्र सत्र 2017-18 में उक्त नामांकन रथ यात्रा जारी रही जिसके फलस्वरूप नामांकन 285 तक हो गया।

शैक्षिक नवाचार :-

1. अभिभावकों को विद्यालय से जोड़ने हेतु डिजिटल मोबाइल एप का निर्माण:-सत्र 2017-18 में दिनांक 26.09.2017 को स्वामी विवेकानन्द राजकीय मॉडल स्कूल, बनेड़ा, जिला भीलवाड़ा में डिजीटल मोबाइल एप बनाया गया। यह सरकारी विद्यालयों का भीलवाड़ा जिले का पहला एप है। इस एप का नाम एसवीजीएमएस बनेडा डिजीटल डायरी है। इस एप के द्वारा विद्यालय की सूचनाएँ जैसे बालकों की डिजीटल उपस्थिति, शिक्षण वीडियो, विद्यालय की प्रतिदिन की शैक्षिक व सहशैक्षिक गतिविधियां एवं विद्यार्थियों के गृहकार्य आदि की जानकारी घर बैठे ही अभिभावकों के एंड्रायड फोन पर उपलब्ध हो पाती है। इस एप द्वारा अभिभावकों का विद्यालय के शिक्षकों से सीधा जुड़ाव संभव हो पाता है। साथ ही साथ प्रतिदिन जिन विद्यार्थियों के जन्मदिन हैं उसकी जानकारी भी स्वत: ही इस एप से प्राप्त हो जाती है, उन्हें प्रार्थना सभा के दौरान विद्यालय परिवार द्वारा शुभकामनाएं दी जाती है।

2. विद्यार्थियों में पढ़ने की आदत का विकास करने हेतु खुला पुस्तकालय की स्थापना:- पुस्तकें बच्चों के पठन कौशल विकास में सहायक सिद्ध होती हैं। साथ ही समझकर पढ़ने की ओर प्रेरित कर चहुँमुखी प्रगति के द्वार खोलती है। अत: पाठ्यपुस्तकों के अतिरिक्त पुस्तकों की पहुँच सुलभ की जाए तो ज्ञानवर्धक होने के साथ-साथ रुचिपूर्ण होने के कारण उन्हें आगे बढ़ने की प्रेरणा मिलती है। प्राय: यह देखा गया कि पुस्तकालय कालांश के अतिरिक्त भी दिनभर के विद्यालय कार्यदिवस के दौरान विद्यालय समय से पूर्व, मध्यान्तर अथवा विद्यालय समय के पश्चात् विद्यार्थियों को यदि पुस्तक अध्ययन का एक सुलभ एवं स्वतंत्र वातावरण प्रदान किया जाए तो वे विभिन्न प्रकार की पुस्तकों की ओर आकर्षित होते हैं एवं पुस्तकों में कल्पना की उड़ान भरकर अपनी दुनिया ढूंढते है । इसी तर्ज पर सत्र 2018-19 में दिनांक 12.03.2019 को स्वामी विवेकानन्द राजकीय मॉडल स्कूल, बनेड़ा, जिला भीलवाड़ा में विद्यार्थियों में स्वतंत्र अधिगम वातावरण निर्मित करने, आपसी विश्वास बढ़ाने, पारदर्शिता व नेतृत्व क्षमता के गुणों के विकास हेतु खुला पुस्तकालय की स्थापना भामाशाहों के सहयोग से की गई है। इस अनूठे नवाचार द्वारा विद्यार्थियों में खुशी, चहक एवं आनंददायी अध्ययन की झलक देखने को मिलती है। इस पुस्तकालय का संचालन स्वयं विद्यार्थी करते हैं। विद्यालय समय से पूर्व, मध्यान्तर में एवं स्कूल समय के पश्चात् खाली समय में खुला पुस्तकालय से अपनी रुचि के अनुसार पुस्तकों का आदान-प्रदान रजिस्टर में प्रविष्टि कर लेनदेन करते हैं। विद्यार्थियों में पढ़ने की आदत बेहतर प्रबन्धन के साथ नेतृत्व क्षमता के विकास में भी कारगर सिद्ध हो रही है।

3. टीचिंग लर्निंग मेटेरियल निर्माण कार्यशाला:- विभिन्न कक्षा-कक्षों में भित्तियों एवं डिस्पले बोर्ड पर उपयोगी शिक्षण अधिगम सामग्री के निर्माण हेतु शनिवारीय गतिविधि के तहत टीचिंग लर्निंग मेटेरियल (टीएलएम) निर्माण कार्यशाला आयोजित की गई जिसमें प्रत्येक कक्षा में विद्यार्थियों द्वारा सुन्दर शिक्षण अधिगम सामग्री निर्मित की गई। विद्यार्थियो को विद्यालय कक्षा-कक्ष एवं भित्तियों को ज्ञानावर्धक सामग्री लगाने हेतु समय-समय पर टीएलएम निर्माण कार्यशाला आयोजित कर परस्पर छात्र सहभागिता द्वारा उपयोगी शैक्षिक सामग्री का निर्माण किया गया।

4. वृक्षारोपण, औषधीय वाटिका एवं जैव विविधता उद्यान की स्थापना:- सभी विद्यालयों में बालकों, शिक्षकों, अभिभावकों एवं भामाशाहों के सहयोग से वृक्षारोपण, औषधीय वाटिका एवं जैव विविधता उद्यान की स्थापना की गई। प्रत्येक पादप का वानस्पतिक, अंग्रेजी, हिन्दी व स्थानीय नाम की पट्टिकाएँ व छात्र-छात्राओं को पौधे की जिम्मेदारी सौंपी गई। विद्यार्थियों को पर्यावरण संरक्षण के प्रति जागरूक करने हेतु विद्यालय के प्रत्येक विद्यार्थी को जन्मदिन के अवसर पर विद्यालय की ओर से एक पौधा उपहार स्वरूप दिया जाता है। प्रत्येक विद्यार्थी पौधे की सार संभाल की शपथ लेते हैं। प्रत्येक सत्र में विद्यार्थियों को पर्यावरण संरक्षण, जैव विविधता एवं सस्टेनेबिलिटी जैसे विषयों पर शोध दल बनाकर शोध कार्य संपादित कराया जाता है।

5. प्रार्थना सभा में नवाचार:- सत्र 2016-17 से स्वामी विवेकानन्द राजकीय मॉडल स्कूल बनेड़ा जिला भीलवाड़ा में निरंतर विद्यालय प्रार्थना सभा का माध्यम सप्ताह में सोमवार, मंगलवार को अंग्रेजी, बुधवार गुरुवार को हिन्दी एवं शुक्रवार शनिवार को संस्कृत भाषा में रखा गया है।

6. विभिन्न भाषाओं में संवाद कार्यक्रम:- सत्र 2016-17 से स्वामी विवेकानन्द राजकीय मॉडल स्कूल बनेडा जिला भीलवाड़ा में एनसीईआरटी एवं मानव संसाधन मंत्रालय के निर्देशानुसार भाषा संगम के तहत विद्यार्थियों को भिन्न-भिन्न, लगभग 22 भाषाओं में संवाद करवाए गए।

7. शख्सियत से साक्षात्कार:- सत्र 2016-17 से स्वामी विवेकानन्द राजकीय मॉडल स्कूल बनेडा जिला भीलवाड़ा में प्रत्येक माह के द्वितीय एवं चतुर्थ शनिवार को बाल सभा आयोजित कर समाज के अनुकरणीय व्यक्तित्व से शख्सियत से साक्षात्कार कार्यक्रम के तहत रूबरू करवाया जाता है।

8. स्वच्छता अभियान में नवाचार:- विद्यालय में स्वच्छ भारत अभियान के तहत प्रत्येक कक्षा में हरा एवं नीला कचरा पात्र रखवाया गया। प्रत्येक कक्षा में हरे कचरा पात्र के कचरे को बायोडिग्रेडिकल के गडडे में डाला जाकर उपयोगी खाद तैयार कर पादपों में डाली जाती है। नीले कचरा पात्र का कचरा जलाकर अथवा भूमि में गाड़कर नष्ट किया जाता है। प्रत्येक कक्षा में स्वच्छता दूत बनाए गए हैं, जो अन्य विद्यार्थियों को स्वच्छता हेतु प्रेरित करते हैं। स्वच्छता के सितारे जैसी प्रतियोगिताओं द्वारा श्रेष्ठ विद्यार्थी को पुरस्कृत किया जाता है।

25, श्री निकेत, जीत माता मंदिर रोड़,
सुभाष नगर, भीलवाड़ा-311001
मो. 9414838145

Rajteachers.in

महात्मा गाँधी : 150वां जयंती वर्ष

एकादश व्रतों में निहित है आनन्दतत्त्व

❒ डॉ. महेन्द्र कुमार चौधरी

भारत की तप-तपस्या, त्याग व वैराग की संस्कृति में व्रत शब्द से समझ की पहली डगर पर खड़ा तीन-चार वर्ष का छोटा बालक भी परिचित होता है। वह भी यह समझता है कि आज पापा के मंगलवार का व्रत है या कि आज मम्मी के करवा चौथ का व्रत है। व्रत त्याग और संकल्प के प्रतीक होते हैं। 'मैं ऐसा करूँगा' (संकल्प) और ऐसा करते समय आने वाले कष्टों को 'मैं सहन करूँगा' (त्याग) के परिचायक हैं। ऐसा विचार व्रत करने वाले के मन में सदा रहता है। व्रत करने वाला व्रती कहलाता है। व्रत करने से उसके हृदय में साहस का संचार होता है। व्रत साधना करने वाले व्यक्ति में कुछ अलग ही तरह का तेज होता है जिससे न केवल वह विशिष्ट पहचान रखता है अपितु लोग उसका अनुकरण भी करते हैं। वह तेजस्वी होता है।

भारतीय संस्कृति में व्रत के साथ एक शब्द 'उपवास' और आता है। हमारी सामाजिक व्यवस्था में सामान्यत: उपवास और व्रत को समानार्थी समझा जाता है, मगर दोनों में फर्क है। उपवास का आशय है भोजन का त्याग या भोजन की अप्राप्ति। भोजन न मिले तो उसे भी उपवास कहेंगे। इच्छा तो है कि भोजन करें लेकिन भोजन का जुगाड़ नहीं कर पाए और भूखे रह लिए तो यह स्थिति भी उपवास ही कहलाएगी। कई बार हम किसी से सुनते हैं कि आज तो मेरे उपवास हो गया। यहाँ शब्दों पर ध्यान देने की जरूरत है। उपवास 'किया नहीं' बल्कि उपवास 'हो गया' कहा जा रहा है। इसमें भाव यह है कि भोजन करना तो चाहते थे लेकिन कर नहीं पाए। इसमें भोजन का न होना हर बार जरूरी नहीं हैं। कई बार भोजन साथ में लाया होता है अथवा जहाँ रोजाना भोजन लेते हैं, वहाँ भोजन तैयार है और आपका इंतजार भी कर रहे हैं लेकिन परिस्थितियाँ ऐसी हो जाती है कि आप भोजन करने हेतु जाने के लिए समय नहीं निकाल पाते। फलत: भूखे रह लेते हैं। शब्दकोश में 'फाका' को भी उपवास कहते हैं। व्रत रूप में जब अन्न

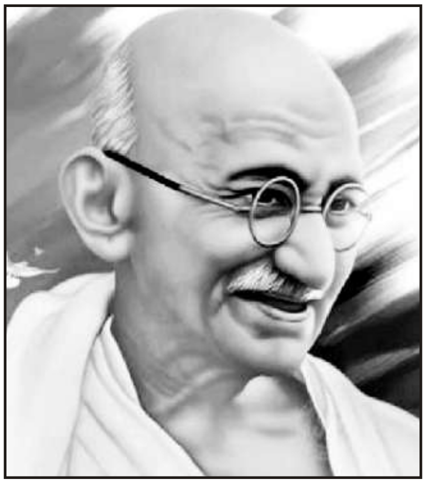

का त्याग किया जाता है तो उसे व्रत-उपवास कहते हैं। भारतीय संस्कृति में जब उपवास की बात होती है तो ज्यादातर उसका अर्थ व्रत-उपवास से ही होता है।

राष्ट्रपिता महात्मा गाँधी के उपवास इतिहास में विशिष्ट स्थान रखते हैं। न जाने उन पर कितने शोध हए होंगे। सत्याग्रह के समान्तर उपवास को वे धार्मिक एवं आध्यात्मिक संघर्ष मानते थे। प्रार्थना के लिए तो पृष्ठभूमि ही उपवास को कहा गया है। उपवास उनका हथियार था। बापू ने उपवास का महत्त्व बताते हुए कहा है, ''प्रार्थना उपवास बिना नहीं होती और उपवास यदि प्रार्थना का अभिन्न अंग न हो तो वह शरीर की मात्र यंत्रणा है जिससे किसी का कुछ लाभ नहीं होता। ऐसा उपवास तीव्र आध्यत्मिक प्रयास है, एक आध्यात्मिक संघर्ष है। दरअसल वह प्रायश्चित और शुद्धिकरण की प्रक्रिया है।'' अत: गाँधी बाबा के अनुसार उपवास कहलाने के लिए उपवासी का भाव शुद्ध एवं प्रार्थाना का होना आवश्यक है।

महात्मा गाँधी व्रत उपवास के मामले में स्वयं के प्रति बहुत कठोर थे। सत्य के साथ प्रमाणिकता उनके लिए जीवन प्राण से भी अधिक जरूरी थी। धर्म का आशय हमारे यहाँ 'जो उपयुक्त और धारण करने योग्य है' से लगाया जाता है। आडम्बर एवं दिखावे को धर्म नहीं कहा जा सकता। गाँधीजी का जीवन धर्ममय था। इस सम्बन्ध में स्टेफोर्ड क्रिप्स ने बहुत सुन्दर कहा है :

Religion was his life and life was his religion.

-अर्थात धर्म उनका जीवन था और जीवन उनका धर्म।

ऐसी उपमा हर किसी को नहीं मिल सकती। इसके लिए त्याग और तप करना होता है। महात्मा गाँधी ने जो कहा अथवा जो कुछ प्रतिपादित किया, वह पहले अपने जीवन पर प्रयोग करने के बाद कहा। वे जो कहते थे, उसे सर्वप्रथम स्वयं पर लागू करते थे। स्वयं उसको सहन कर लेते तथा उसके लाभों से परिचित हो जाते, तब दूसरों को वैसा करने के लिए कहते। उनकी आत्मकथा 'सत्य के साथ मेरे प्रयोग' इसका खरा दस्तावेज है। वे प्रयोगधर्मी इंसान थे। समूचा जीवन उनके लिए प्रयोगशाला था। सत्य, अहिंसा, शारीरिक श्रम जैसे गुण उनके चरित्र में सहज ही देखे जा सकते थे। वे संकल्पव्रती थे। जो संकल्प ले लेते थे, उसे पूरा करके ही रहते थे भले ही इसके लिए उन्हें कुछ भी त्याग करना पड़े।

गाँधी आश्रम में रहने वालों के लिए कतिपय नियम बने हुए थे जिनका कठोरता से पालन वहाँ रहने वालों को करना होता था। 'अपना हाथ जगन्नाथ' सिद्धान्त के अनुसार आश्रमवासियों को अपने काम खुद ही करने पड़ते थे और इसमें भी पाखाना साफ करना सबसे पहले आता था। बापू की प्रार्थना सभा में की जाने वाली सत्संग, कीर्तन एवं भजन सब आत्मबल बढ़ाने वाले होते थे। प्रार्थना के समय भी आश्रम के नियमों एवं व्रतों का पालन करने का संकल्प किया जाता था। गाँधी दर्शन में उनके द्वारा प्रतिपादित एकादश व्रतों का महत्त्व इसी बात से समझा जा सकता है कि आज भी प्रतिवर्ष प्रकाशित होने वाली गाँधी डायरी के पहले ही पृष्ठ पर बापू के फोटो के नीचे एकादश व्रत लिखे हुए हैं। ये एकादश व्रत क्रमश अहिंसा,

Rajteachers.in

अस्वाद, अपरिग्रह, अभय, शरीर श्रम, सत्य, ब्रह्मचर्य, स्वदेशी, अस्तेय, अस्पृश्यता निवारण एवं सर्व-धर्म समभाव, जिनका संक्षिप्त विवेचन इस प्रकार है-

1. सत्य : सत्य ही परमेश्वर है। सत्य आग्रह, सत्य विचार, सत्य वाणी और सत्य कर्म, ये सब उसके अंग हैं। जहाँ सत्य है, वहाँ शुद्ध ज्ञान है, जहाँ ज्ञान है, वहाँ आनन्द ही हो सकता है। इस प्रकार सत्य में सर्वसिद्धियों की राह है। कारण हर कोई जीवन में प्रसन्नता चाहता है, आनंद चाहता है जो सत्य से ही सम्भव है।

2. अहिंसा : सत्य ही परमेश्वर है। उसके साक्षात्कार का एक ही मार्ग, एक ही साधन, अहिंसा है। बगैर अहिंसा के सत्य की खोज असंभव है। जीव मात्र पर दया करना और जितना हो सके उसकी रक्षा के लिए प्रसास करना सच्ची मानवता है।

3. ब्रह्मचर्य : ब्रह्मचर्य का अर्थ है, ब्रह्म और सत्य की खोज में चर्या, अर्थात् उससे सम्बन्ध रखने वाला आचार। इस मूल अर्थ में से सर्वेन्द्रिय संयम का विशेष अर्थ निकलता है। केवल जननेन्द्रिय-संयम के अधूरे अर्थ को तो हमें भूल जाना चाहिए। इस प्रकार महात्मा गाँधी ब्रह्मचर्य को विस्तृत अर्थ में लेते हैं।

4. अस्वाद : मनुष्य जबतक जीभ के रसों को न जीते, तब तक ब्रह्मचर्य का पालन अति कठिन है। भोजन केवल शरीर-पोषण के लिए हो, स्वाद या भोग के लिए नहीं। शरीर की रक्षा हो जाए, बस इसी भाव से कम से कम सादा भोजन करना चाहिए। साधु परम्परा में ऐसा ही है।

5. अस्तेय (चोरी न करना) : दूसरे की चीज को उसकी इजाजत के बिना लेना तो चोरी है ही, लेकिन मनुष्य अपनी कम से कम जरूरत के अलावा जो कुछ लेता या संग्रह करता है, वह भी चोरी ही है। गाँधीजी ने ट्रस्टीशिप का सिद्धान्त दिया था। ट्रस्टीशिप का सिद्धान्त कहता है कि आपने जो कुछ प्राप्त किया है, उसके आप मालिक न होकर ट्रस्टी है। भगवान ने आप में विश्वास (Trust) करके आपको वह सब कुछ सौंपा है। अपनी आवश्यकता पूरी करने के उपरान्त जो साधन-संसाधन बच जाएं उनका उपयोग 'दूसरों को करने के लिए' उनका त्याग करें।

6. अपरिग्रह : सच्चे सुधार की निशानी परिग्रह वृद्धि नहीं, बल्कि विचार और इच्छापूर्वक परिग्रह कम करना है। ज्यों-ज्यों परिग्रह कम होता है, सुख और सच्चा संतोष बढ़ता है, सेवा शक्ति बढ़ती है। अपरिग्रह की भावना सन्तोषवृति की जननी है तथा जो सन्तोषी होते हैं, वे सदा सुखी रहते हैं। उन्हें और किसी प्रकार के धन की जरूरत महसूस नहीं होती-**जब आवै संतोष धन सब धन धुरि समान** अर्थात जब संतोष रूपी धन किसी को प्राप्त हो जाता है तो उसके लिए बाकी सारे धन मिट्टी के समान होते है। इस प्रकार संतोष सबसे बड़ा धन है।

7. अभय : जो सत्यपरायण रहना चाहे, वह न तो जात बिरादरी से डरे, न सरकार से डरे, न चोर से डरे, न बीमारी या मौत से डरे, न किसी के बुरा मानने से डरे। सचाई पर चलने वाला ईश्वर में विश्वास रखकर केवल उससे डरता है। किसी अन्य से उसे डरने की आवश्यकता नहीं रहती। वह निर्भय होता है।

8. अस्पृश्यता निवारण : छुआछूत मानव धर्म का अंग नहीं है, इतना ही नहीं, बल्कि उसमें बुसी हुई सड़न है, वहन है, पाप है और उसका निवारण करना प्रत्येक नागरिक का सच्चा धर्म है, कर्तव्य है। परमात्मा के द्वारा रचे इस संसार में जन्म लेने वाला हर व्यक्ति समान है। उनमें जाति, धर्म, सम्प्रदाय और आर्थिक आधार आदि को दृष्टि में रखकर भेद करना पाप है।

9. शारीरिक श्रम : जो खुद मेहनत न करें, उन्हें खाने का हक ही नहीं है। जिनका शरीर काम कर सकता है, उन स्त्री-पुरुषों को अपना रोजमर्रा के सभी काम, जो खुद करने लायक हो, खुद ही कर लेने चाहिए और बिना कारण दूसरों से सेवा नहीं लेनी चाहिए। शारीरिक श्रम में विश्वास रखकर परिश्रम करने वालों का साहस अद्भुत होता है। वे परिश्रम के बल पर कुछ भी हासिल कर सकते हैं।

10. सर्वधर्म समभाव : जितनी इज्जत हम अपने धर्म की करते हैं, उतनी ही इज्जत हमें दूसरों के धर्म की भी करनी चाहिए। जहाँ यह वृत्ति है, वहाँ एक-दूसरे से धर्म का विरोध हो ही नहीं सकता, न परधर्मी को अपने धर्म में लाने की कोशिश ही हो सकती है, बल्कि हमेशा प्रार्थना यही की जानी चाहिए कि सब धर्मों में पाए जाने वाले दोष दूर हों। हमें अच्छाईयों को ग्रहण करना चाहिए।

11. स्वदेशी : अपने आस-पास रहने वालों की सेवा में आतप्रोत हो जाना स्वदेशी धर्म है। निकटवालों की सेवा छोड़कर दूर वालों की सेवा करने को दौड़ना उचित नहीं है। अपने आस-पास बिखरी सेवा को करना प्राणी धर्म है।

यह महात्मा गाँधी का 150वां जयन्ती वर्ष है। सम्पूर्ण संसार में उनके द्वारा बताए गए सिद्धान्तों पर चलने के लिए सब जगह चिन्तन किया जा रहा है। भारत में तो वे जनमें थे। देश को आजाद कराने का महान कार्य उन्हीं के नेतृत्व में हुआ। सत्य और अहिंसा उनके आभूषण थे। सत्य और अहिंसा की ताकत के सामने अंग्रेजी सत्ता को झुकना पड़ा। गाँधी से पूर्व यही मान्यता थी कि शारीरिक एवं यांत्रिक (हथियार) ताकत से ही किसी को झुकाया जा सकता है या जीत हासिल की जा सकती है, मगर उन्होंने यह सिद्ध कर दिया कि अहिंसा और सत्य की ताकत से हम बड़े से बड़ा उद्देश्य प्राप्त कर सकते हैं। वे अहिंसा के पुजारी कहलाते हैं। हमें उनके जीवन से शिक्षाएं ग्रहण करते हुए उनके द्वारा प्रतिपादित एकादश व्रतों का कठोरता के साथ पालन करना चाहिए।

-संयुक्त शिक्षा निदेशक (से.नि.)
मण्डी विजयनगर, जिला श्रीगंगानगर
मो. 9414380906

Rajteachers.in

गाँधी जयन्ती विशेष

गाँधीजी की प्रासंगिकता

❒ डॉ. वेद प्रकाश रेडू

दुनियाँ भर में सैकड़ों से अधिक देशों में महात्मा गाँधी की प्रतिमाएँ लगाई गई हैं। भारत के बाद अमेरिका में महात्मा महात्मा गाँधी की सबसे अधिक प्रतिमाएँ है। भारत के अलावा दुनिया मे कई जगह सड़कों पार्कों और इमारतों का नाम महात्मा गाँधी या उनसे सम्बन्धित रखा गया है। महात्मा गाँधी द्वारा रचित साहित्य का अनुवाद विश्व की लगभग सभी भाषाओं में हुआ है। यह प्रसिद्धि अन्य किसी भी भारतीय को नहीं है। गाँधी एक व्यक्ति ही नहीं विचार के रूप पूरे विश्व में फैले हुए हैं वे एक संस्था बन गए, एक दर्शन बन गए हैं। जब वे सत्य और अहिंसा की कसौटी पर राजनीति, शिक्षा, धर्म, समाज और अर्थव्यवस्था आदि को कसते हैं तो उनके संदर्भ बहुत व्यापक हो जाते हैं। यह अकारण नहीं है कि अल्बर्ट आइंस्टीन कहते हैं कि– 'आने वाली पीढ़ियों को यकीन नहीं होगा कि गाँधी जैसा व्यक्ति भी कभी धरती पर जन्मा था।'

गाँधीजी आज हमें असाधारण लगते हैं लेकिन अव्यवहारिक नहीं। उनका चिन्तन, दर्शन-विचार सब व्यवहारिक है और प्रयोग द्वारा सिद्ध। यह पहले ही जिक्र किया जा चुका है गाँधीजी असाधरण लगते हैं। लेकिन अव्यवहारिक नहीं। गाँधीजी की अनेक खासियत हैं जो उन्हें महात्मा बनाती हैं। उन सबमें दो खासियत ऐसी हैं जो अन्य से महात्मा गाँधी को विशिष्ट या अलग करती हैं। एक तो कोरे सिद्धान्त उन्होंने स्थापित नहीं किए। पहले व्यवहारिक जीवन में जीया फिर उस सम्बन्ध में कुछ किया या कहा। सत्य के प्रयोग अथवा आत्मकथा तथा उनके द्वारा किए गए आन्दोलन या आश्रम में जीया गया जीवन इस बात के प्रमाण हैं। हालांकि उन्होंने विनम्रता से यह स्वीकार किया है कि इन प्रयोगों के बारे में मैं किसी प्रकार कि सम्पूर्णता का दावा नहीं करता।

दूसरी खासियत वे आजादी के कर्ता-धर्ता होकर भी सत्ता से दूर रहे। दुनियाँ के अगुआ लोगों के लिए यह बहुत बड़ा संदेश था इसे आत्मसात करना हर किसी के बस की बात नहीं। रूस में लेनिन, तुर्की में मुस्तफा कमाल, पाकिस्तान में जिन्ना, मिश्र में अब्दुल नासिर, चीन में माओ तथा चाउ एन लाई, वर्मा में जनरल यांग सन, श्रीलंका में भण्डारनायके और बांग्लादेश में मुजीबुर्रहमान जैसे कई उदाहरण हैं जो आजादी के आन्दोलन के मुखिया रहे और बाद में सत्ताधुत हुए। जबकि महात्मा गाँधी आजादी के बाद सत्ता से दूर रहे।

जैसे-जैसे दुनिया बदल रही है महात्मा गाँधी उतने ही अधिक प्रासंगिक होते जा रहे हैं। बीबीसी को दिए गए एक साक्षात्कार में इतिहासकार और लेखक रामचन्द्र गुहा के अनुसार गाँधीजी के चार सिद्धान्त आज भारत ही नहीं, पूरी दुनिया में प्रासंगिक हैं–

1. जन विरोधी कानून या सरकार के खिलाफ अहिंसक प्रदर्शन।
2. एक दूसरे के धर्म को समझना और सम्मान करना।
3. ऐसी आर्थिक नीति बनाना, जिसमें सभी का विकास हो और प्रकृति का कम से कम नुकसान हो।
4. व्यवहार में शिष्टाचार और जनता से जुड़े कार्यों में पारदर्शिता।

भारतीय संत परम्परा मे सत्य व अहिंसा जीवन के मेरुदण्ड रहे हैं। आदर्श और व्यक्तिगत आचरण के रूप में इनका चरम उत्कर्ष अनेक महापुरुषों के जीवन मे देखा जा सकता है लेकिन जीवन के व्यवहारिक क्षेत्र में उनके प्रयोग का प्रयास महात्मा गाँधी के जीवन में दिखाई देता है, जिन्होंने अपने सम्पूर्ण जीवन को ही सत्य का प्रयोग माना और अपने समस्त कार्यकलापों को इसके द्वारा नियंत्रित एवं अनुशासित किया।

अब हम उसी प्रकाश में प्रमुख सरोकार पर गाँधीजी की प्रासंगिकता पर विचार करते हैं–

शिक्षा–शिक्षा के क्षेत्र में महात्मा गाँधी का महत्त्वपूर्ण योगदान है। उन्होंने अपने लम्बे अनुभव पश्चात् सन् 1937 में वर्धा में हो रहे अखिल भारतीय राष्ट्रीय शिक्षा सम्मेलन में अपनी बेसिक शिक्षा की नई योजना को पेश किया जामिया मिलिया के जाकिर हुसैन की अध्यक्षता में जाकिर हुसैन समिति का निर्माण किया और नई तालिम (बुनियादी शिक्षा) की योजना तैयार की गई। सन् 1937 में हरिपुरा अधिवेशन में इस समिति कि रिपोर्ट को स्वीकृति दी गई जो वर्धा शिक्षा योजना के नाम से जानी जाती है। यही बुनियादी शिक्षा की योजना थी जो 7 से 14 वर्ष के बच्चों के लिए मातृभाषा में दी जानी वाली शिक्षा थी। यह विद्यार्थियों को स्थानीय परिवेश व आवश्यकताओं के अनुसार स्वावलम्बी बनाने पर जोर देती है। कई लोग ऐसा समझ जाते हैं कि बुनियादी शिक्षा किसी व्यवसाय की शिक्षा है या व्यावसायिक शिक्षा है। ऐसा बिल्कुल नहीं है गाँधी जी का मानना था। किसी पेशे या धन्धे की शिक्षा से बच्चे को पूर्ण मानव के रूप में विकसित करना है न कि धन्धे की शिक्षा देना। शिक्षा का वे व्यापक अर्थ लेते थे उनकी दृष्टि में केवल अक्षर ज्ञान शिक्षा नहीं था। वे मनुष्य में व्याप्त सर्वोत्तम गुणों के विकास को शिक्षा मानते थे। शिक्षा का लक्ष्य विद्यार्थी को आदर्श नागरिक बनाना है, उनके लिए चरित्र गठन के अभाव में शिक्षा व्यर्थ है।

अगर हम गाँधीजी के शैक्षिक विचारों की प्रासंगिकता कि बात करें तो अनिवार्य और निःशुल्क शिक्षा अधिनियम हम आजादी के बाद ला पाए जबकि गाँधीजी ने इसकी पैरवी आजादी से दसों वर्ष पूर्व ही करनी शुरू कर दी थी।

स्वराज–महात्मा गाँधी यह बखूबी जानते थे कि अग्रेजों के सत्ता छोड़ देने से आजादी नहीं आएगी बल्कि सही मायने में तो आजादी तभी मिल पाएगी जब भारतवासी स्वावलम्बी बनेंगे। महात्मा गाँधी पश्चिम की सभ्यता के विकास के मॉडल के खिलाफ थे। उन्होंने रेलगाड़ी और औद्योगीकरण का विरोध किया। उन्होंने लिखा है- मशीन के झपट लगने से ही हिन्दुस्तान पागल हो गया है। मैनचेस्टर ने हमें जो नुकसान पहुँचाया है, उसकी तो कोई हद ही नहीं है। हिन्दुस्तान से कारीगरी जो करीब

Rajteachers.in

–करीब खत्म हो गई, वह मैनचेस्टर ही काम है। खादी चरखे को महात्मा गाँधी ने स्वदेशी का प्रतीक मानकर देश के लोगों को स्वावलम्बी बनने की प्रेरणा देने का प्रयास किया था तथा विदेशी वस्तुओं के बहिष्कार करने का प्रयास किया था। महात्मा से जाने के इतने बरसों बाद भी बार–बार यह आवाज आती रहती है स्वदेशी अपनाइए और चाइनीज तथा अलग सामानों को मत खरीदिए। महात्मा गाँधी ने इस बात को उस समय बखूबी समझ लिया था। दूसरी उनके स्वराज से जुड़ी एक बहुत बड़ी बात थी वह थी राजनैतिक शुचिता। महात्मा गाँधी मूल्यहीन राजनीति नहीं चाहते थे। सत्य और अहिंसा उनके तमाम कर्मों का आधार थी। इसलिए उन्होंने सत्याग्रह किया। आज राजनीति में जो मूल्यहीनता की स्थिति है उससे निजात उनके द्वारा सुझाए गए मार्ग से ही पाई जा सकती है।

पंचायत व पंचायतीराज–पंचायती राज पर महात्मा गाँधी ने गहनता से विचार किया। वे भारत के ग्रामीण ढाँचे, गाँव के राजनैतिक, आर्थिक व सामाजिक जीवन से भली भाँति परिचित थे। उन्होंने लिखा है- पंचायत हमारा एक बड़ा पुराना और सुन्दर शब्द है उसके साथ प्राचीनता कि मिठास जुड़ी है। उसका शाब्दिक अर्थ है गाँव के लोगों द्वारा चुनी हुई सभा। महात्मा गाँधी का विचार था कि आजादी के पश्चात पंचायतों व पंचायती राज को मजबूत बनाया जाए और सत्ता का विकेन्द्रीकरण हो। महात्मा गाँधी ने लिखा है- आजादी नीचे से शुरू होनी चाहिए। हरेक गाँव में जमहूरी सल्तनत या पंचायत का राज होगा। उसके आसपास पूरी सत्ता या ताकत होगी जिसका मतलब यह है कि हरेक गाँव को अपने पांव पर खड़ा होना होगा–अपनी जरूरत खुद पूरी कर लेनी होगी, ताकि वह अपना सारा कारोबार खुद चला सके यहाँ तक कि वह सारी दुनियाँ के खिलाफ अपनी हिफाजत खुद कर सकें।

स्वच्छता–सफाई के प्रति गाँधीजी बहुत सजग थे। वे नगरों और गाँव की सफाई के लिए बार–बार अभियान चलाते रहे और सदैव सफाई के लिए आगाह करते रहे। इस सम्बन्ध में उन्होंने लिखा- श्रम और बुद्धि के बीच जो अलगाव हो गया है उसके कारण हम अपने गाँव के प्रति लापरवाह हो गए हैं। यह एक गुनाह ही माना जा सकता है नतीजा यह हुआ कि देश में, सुहावने और मन भावने छोटे–छोटे गाँव के बदले हमें घूरे जैसे गाँव देखने को मिलते हैं।........ हमने राष्ट्रीय या सामाजिक सफाई को न तो जरूरी गुण माना और न ही उसका विकास किया। आज हम जो स्वच्छता अभियान देख रहे हैं उसका विचार व सभी कार्य प्रणाली महात्मा गाँधी के जेहन में आजादी से बहुत पहले ही बन चुकी थी। महात्मा गाँधी सफाई को नागारिकों की दिनचर्या का अविभाज्य अंग मानते थे।

ग्राम व ग्रामीण अर्थव्यवस्था–महात्मा गाँधी ग्राम को स्वावलम्बी बनाना चाहते थे। महात्मा गाँधी का मानना था कि गाँव के लोग अपने कुटीर व लघु उद्योग व कृषि तथा व्यापार से अपने गाँव में ही रोजगार पाएँ। उन्हें रोजगार के लिए परनिर्भर नहीं होना पड़े, शहर या दूसरे कस्बों में न जाना पड़े। वे आर्थिक समानता के पक्षकार थे। उनका मानना था आर्थिक समानता के लिए काम करने का मतलब है, पूँजी और मजदूरी के बीच के झगड़ों को हमेशा के लिए मिटा देना।

भाषा–महात्मा गाँधी स्वयं गुजराती मातृभाषी थे। महात्मा गाँधीजी ने अंग्रेजी का विरोध किया और हिन्दी भाषा का समर्थन किया। लेकिन इसका अर्थ हमें यह कतई नहीं लगाना चाहिए कि भारत की अन्य भाषाओं की उपेक्षा कर रहे थे वे भारत में बोली जाने वाली सभी मातृभाषाओं के हिमायती थे उन्होंने प्रान्तीय भाषाओं पर विचार करते हुए लिखा है–''हमने अपनी मातृभाषाओं के मुकाबले अंग्रेजी से ज्यादा मुहब्बत रखी, जिसका नतीजा यह हुआ कि पढ़े–लिखे और राजनीतिक दृष्टि से जागे हुए ऊँचे तबके के लोगों के साथ आम लोगों का रिश्ता बिल्कुल टूट गया और उन दोनों के बीच एक गहरी खाई बन गई। यही वजह है कि हिन्दुस्तान की भाषाएँ गरीब बन गई और उन्हें पूरा पोषण नहीं मिला।

भारतीय भाषाओं की पैरवी के साथ महात्मा गाँधी राष्ट्रभाषा की जरूरत महसूस कर रहे थे और हिन्दी से बढ़कर उनकी दृष्टि में दूसरी कोई और भाषा विकल्प नहीं थी–''समूचे हिन्दुस्तान के लिए व्यवहार करने के लिए हमको भारतीय भाषाओं में एक ऐसी भाषा की जरूरत है, जिसे आज ज्यादा से ज्यादा तादाद में लोग जानते और समझते हों और बाकी के लोग जिसे झट से सीख सकें। इसमें शक नहीं कि हिंदी ही ऐसी भाषा है।''

महात्मा गाँधी हिंदी को आजादी के बाद राष्ट्रभाषा बनाना चाहते थे लेकिन हिन्दी आजादी के बाद संवैधानिक तौर पर राष्ट्रभाषा नहीं बन पाई, वह राजभाषा बनी।

सर्वधर्म समभाव या कौमी एकता–भारत भाषाओं की तरह धर्म की दृष्टि से भी विविधता वाला देश है, महात्मा गाँधी विविधता की इस खासियत के मर्म को भली भाँति समझते थे। उन्होंने अंग्रेजों की फूट–डालो और राज करो की नीति को भली–भाँति भाँप लिया था–यहाँ हिंदुस्तान में तो ब्रिटिश सरकार ने कौमी तरीके पर मतदाताओं के अलग–अलग गिरोह खड़े कर दिए हैं, जिसकी वजह से हमारे बीच ऐसी बनावटी दीवारें खड़ी हो गई हैं जो आपस में मेल नहीं खाती। महात्मा गाँधी सभी धर्मों का आदर करते थे और यह धार्मिक समन्वय राष्ट्र में भी चाहते थे उनका मानना है कि सभी धर्मों के तालमेल व मेलजोल में ही भारत का भविष्य है। उनका सुझाया हुआ मार्ग आज भी उतना ही सार्थक और कारगर है जितना कि उनके अपने समय में था।

आज तकनीकी के इस युग में जहाँ प्रतियोगिता और महत्वाकांक्षा जिस ढंग से बढ़ रही हैं और साथ ही विकास के साथ प्रकृति का संतुलन बिगड़ रहा है ऐसे समय में महात्मा गाँधी न केवल हमारे देश के लिए बल्कि सम्पूर्ण विश्व के लिए कारगर व सार्थक हैं। उनका जीवन व दर्शन उस समय तो प्रासंगिक था ही आज के इस दौर में वे और अधिक प्रासंगिक हो गए हैं। आज हम बहुत सी ऐसी सार्वजनिक और व्यक्तिगत समस्याओं से जूझ रहे हैं जिनका हल हमें गाँधी दर्शन में मिल सकता है। उनके विचार और जीवन से प्रेरणा पाकर हम अनेक समस्याओं से निजात पा सकते हैं। महात्मा गाँधी द्वारा दिए गए सत्य और अंहिसा के संदर्भ इतने व्यापक हैं कि आज न केवल हमारा देश बल्कि सम्पूर्ण विश्व उनके द्वारा सुझाए इस मार्ग से अपने कल्याण का मार्ग प्रशस्त कर सकता है।

अध्यक्ष
श्री सेवा संस्थान, मिठ्ठीरेडू, पोस्ट–पहाड़सर,
तहसील–राजगढ़, जिला–चूरू (राज.)–331023
मो: 9001206100

Rajteachers.in

गाँधी जयन्ती विशेष

महात्मा गाँधी एक युग पुरुष

❒ नूतन बाला कपिला

गाँधीजी के बारे में कुछ कहना सूर्य को दीपक दिखाने के समान है। कमजोर कृष शरीर वाले अर्द्ध नग्न तन पर एक वस्त्र पहने, लाठी हाथ में लिए, आँखों पर चश्मा लगाए, आगे बढ़ते कदमों के साथ जिसने रुकना नहीं सीखा, ऐसे थे गाँधीजी। हम खुशनसीब हैं कि हमने आज़ादी की खुली हवा में जन्म लिया। उनके बारे में जितना जाना या तो माँ की बातों से या किताबों से। बल्कि माँ की बातों को सुनकर लगता था कि इंसान ऐसा भी हो सकता है जिसे अंग्रेजों से डर नहीं लगता था। बल्कि उनसे अंग्रेज डरते थे। अंग्रेजों को असहयोग आंदोलन से हिलाने वाले जो शख्स थे वो गाँधी जी ही थे।

सत्य, अहिंसा दो बड़े-बड़े शस्त्र थे उनके पास। उनके आंदोलन कैसे जन आंदोलन बन गए? विदेशी सामान प्रयोग नहीं करने की अपील पर चरखा घर-घर कातने लगे लोग। सूत कात कर वस्त्र बनाते। खादी उद्योग पनपने लगा। मेरी माँ बताती थी उस समय सूत कातकर, सूत देकर सब सूती वस्त्र पहनते थे। आजाद भारत में वस्त्र उद्योग के कारखाने लगे। आजाद भारत में वस्त्र उद्योग की कमी नहीं है। अंग्रेजों की गुलामी में भारत किस कदर गरीबी के दौर से गुजर रहा था, इसे गाँधीजी ने चम्पारन के आंदोलन के दौरान जाना। तभी तो उन्होंने प्रण लिया था जब तक भारत के सभी नागरिकों को पहनने के लिए वस्त्र नहीं मिलते, वे अपने जीवन में आधे वस्त्र पहनेंगे। वे दृढ़ निश्चय के धनी थे। विंस्टन चर्चिल ने उन्हें अर्द्ध नग्न फकीर कहाँ था। गाँधीजी ने उनकी बातों को कभी बुरा नहीं माना।

उनका आत्मबल सत्य था। अहिंसा का प्रयोग करते हुए अंग्रेजों को झुकने के लिए मजबूर करने वाले वो महान पुरुष गाँधीजी थे। आज के युवाओं को सोचना होगा कि ऐसा उस युग पुरुष में क्या था कि अंग्रेजों ने उन्हें वार्ता के लिए बुलाया। ब्रिटेन में गोलमेज में सभा में वार्ता की, हिन्दुस्तान में वार्ता की। गाँधीजी हिन्दुस्तान के पूर्ण स्वराज्य की बात करते थे। विश्व के सभी देश हिन्दुस्तान की आजादी के पक्षधर थे। हिन्दुस्तान में भी रियासतें, जागीरदार-लेकिन आम जन सब गाँधीजी के साथ थे। किसान, मजदूर और फिर सब पढ़े-लिखे युवा भी उनके अनुयायी बने।

उस युग में प्रेस का रोल भी महत्त्वपूर्ण था। समाचार पत्रों के माध्यम से जागरूकता फैलाने का संदेश देने वाले गाँधीजी थे। शिक्षा कैसी हो? युवा क्या करें? सत्य क्या है? अहिंसा क्या है? भेदभाव भुलाकर एकता का पाठ पढ़ाने वाले गाँधीजी थे। समाज को जोड़ने का काम करने वाले गाँधीजी थे। भारत के तत्कालीन उद्योगपतियों ने भी गाँधीजी को आश्रम चलाने में, आंदोलन चलाने में मदद की।

अपना कोई स्वार्थ नहीं 'परहित सरिस धरम नहीं भाई, परपीड़ा नहीं अधमाई', ये उनके जीवन का आदर्श था। गाँधीजी के वर्धा आश्रम को देखते हैं तो लगता है जैसे सब जीवंत हो जाएगा-ऐसा लगने लगता है कि गाँधीजी यहाँ चरखा कातते थे, यही रहते थे। उनके आश्रम में कितने लोग रहते थे। ऐसा क्या था कि विदेश से आई निवेदिता आश्रम में उनके साथ रहने लगी। आश्रम उनकी राजनीति का केन्द्र था। इसी आश्रम में सब बड़े-बड़े नेता मिलने आते थे। यही सादगी थी। सादा जीवन उच्च विचार इसे कहते हैं।

उनके जीवन को देखे तो गिनना पड़ेगा कि वे कितनी बार जेल गए। जेल में भी समय व्यर्थ नहीं बिताया। लिखने-पढ़ने में समय बिताया। गाँधीजी का कहना था कि शारीरिक, मानसिक व आत्मिक विकास शिक्षा है। बुनियादी शिक्षा भारत के गाँव-गाँव में फैले।

आज तकनीकी शिक्षा का प्रयोग अधिक बढ़ गया है। टेक्नोलोजी के युग में हम बुनियादी शिक्षा को भूल गए हैं। सृजनात्मकता विकसित करने के लिए जरूरी है कि बुनियादी शिक्षा को बढ़ावा मिले। गाँधीजी आज नहीं हैं। उनकी बुनियादी शिक्षा को हम याद करते हैं। राष्ट्र उनके प्रति कृतज्ञता अर्पित करता है। नई शिक्षा नीति में गाँधीवादी दर्शन को स्थान मिले तो वास्तव में शिक्षा में सुधार ला सकते हैं। युवा पीढ़ी को गाँधी दर्शन से प्रेरणा मिलती है। यह देश व दुनिया गाँधीजी को सदियों तक याद करती रहेगी व उनके आदर्श सभी युगों में प्रेरणास्पद रहेंगे। धन्य है हमारा देश जहाँ गाँधीजी जैसे महापुरुष ने जन्म लिया।

अविस्मरणीय

कभी-कभी कुछ घटनाएँ जीवन में ऐसे होती हैं जो हमेशा याद रहती हैं। मैं निदेशालय माध्यमिक शिक्षा राजस्थान बीकानेर में काम करती हूँ। प्रतिदिन दूर-दूर से लोग अपनी समस्या लेकर आते हैं, मिलते है, समस्या दूर हो या न हो, सबको सुनती हूँ। एक शख्स ऐसे आए कि उनसे मिली, उनका प्रार्थना पत्र लेकर संबंधित अनुभाग में दे दिया। वो हर घण्टे में कक्ष में आते अपनी शक्ल दिखा कर चले जाते। उनका तरीका था मुझे याद दिलाने का। मैं अपना काम करती रही व अनुभाग में जल्दी फाइल लाने के लिए दो बार कह दिया।

दोपहर हो चुकी थी। लगभग चार बज गए थे। अब मैंने देखा कि वो शख्स मेरे कमरे के बाहर दरवाजे के सामने जमीन पर बैठे थे। अब जब भी कोई कक्ष में आता या जाता वो सामने दिखाई देते। वो शख्स अधिकारी स्तर के थे। मैंने बुला कर कहा कि कृपया यहाँ नहीं बैठें, अच्छा नहीं लगता। लेकिन वो शख्स वहीं बैठे रहे। अब पंजिका हस्ताक्षर के लिए निदेशक महोदय के पास थी। थोड़ी देर में आदेश हस्ताक्षरित हो कर आ गया।

मैं सुबह से उन शख्स से प्रभावित थी। मैंने उन्हें कक्ष में बुलाया, बैठाया, कार्यालय समय समाप्त हो चुका था। मेरा ध्यान उनके हाथ पर गया। मैं सन्न रह गई। उनका एक हाथ बिल्कुल काम नहीं कर रहा था। मैंने पूछा तो बताया कि दुर्घटना में ऐसा हुआ, अभी वो ठीक है, एक हाथ काम नहीं करता किन्तु दूसरा शख्स जिसके पक्ष में वो कह रहे थे कि ये बीमार है, उन्हें इसी स्थान पर रखें व उन्हें स्वयं को अन्यत्र कहीं भी लगा दें।

दो शख्सों का एक-दूसरे के प्रति मानवीय पक्ष को देखकर मैं दंग रह गई। उन्होंने कहा मैं बहुत मेहनत करूँगा। शत-प्रतिशत परिणाम दूँगा। अभी कार्यालय समय समाप्त हो चुका था, मैंने उनके लिए चाय मंगवाई एवं खाने को कुछ प्लेट में दिया। उन्होंने वो सब खा लिया क्योंकि सुबह से भूखे थे। मैं उन्हें निहार रही थी। मेरी आँखों से बरबस आँसू आ गए। वो आदेश लेकर चले गए। मैं उनकी मानवतावादी दृष्टिकोण को नमन करती हूँ। मेरे सम्माननीय व्यक्तियों की सूची में एक नाम और जुड़ गया था।

संयुक्त निदेशक (कार्मिक)
माध्यमिक शिक्षा राजस्थान, बीकानेर

Rajteachers.in

वर्तमान की प्रासंगिकता

❒ पूनम पांडे

हमारी एकमात्र वास्तविकता हमारा वर्तमान है जो पल हमारे सामने है बस यही हमारे पास है। हमें अपने आप से यह सवाल जरूर पूछना चाहिए कि हम अपने पलों को कैसे बिताते हैं। हम ऐसा क्या कर रहे हैं कि हमारा यह पल सार्थक हो रहा है। हम हरेक पल में सकारात्मक होकर आगे बढ़ रहे हैं। अपने किसी लक्ष्य की तरफ बढ़ रहे हैं या उसको नजरअंदाज कर रहे हैं हमारे भोगे हुए पल हमको प्रसन्न कर रहे हैं या नहीं हमें इन सब पर विचार करना चाहिए। एक कहावत है कि सपने में मधुमक्खी का छत्ता बनाने वाले का शहद हमेशा छत्ते सहित गायब हो जाता है। मोम भी बाकी नहीं रहता।

अलबर्ट आइंस्टीन कहते थे कि हमारे पास सीमित ऊर्जा होती है हमें कई बार अजीबोगरीब लोग मिलते हैं उनसे संवाद के समय हमें अपनी ऊर्जा का उपयोग समझदारी से करना चाहिए क्योंकि अगर आप उलझ गए तो वे आपकी ऊर्जा को निचोड़ लेंगे। आपका अमूल्य समय पानी की तरह बह जाएगा। बचा रह जाएगा सिर्फ अफसोस। यह एक ऐसी स्थिति है जहाँ सतर्कता बहुत सहयोग करती है।

स्पेन के मशहूर लेखक मिगेल 'जिनका पूरा नाम 'मिगेल डी सर्वातिज' है उन्होंने जीवनभर बेहद उठापटक को झेला और बगैर किसी गलती के पाँच साल से ज्यादा नजरबंद भी रहना पड़ा। खतरनाक समुद्री डकैतों के चंगुल में, मगर उनका जुझारूपन कभी कम नहीं हुआ। साठ साल की उम्र पार करने के बाद उन्होंने 'डान किहोटे' नामक उपन्यास लिखा। इस उपन्यास को पश्चिम का पहला आधुनिक शैली का उपन्यास कहा जाता है। स्पेनिश भाषा को इस उपन्यास ने पहचान दिलाई। हमारी कामयाबी अपनी ताकत यानि आत्मबल को बनाए रखने में है।

चार प्रकार के पुरुषार्थ है- धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष। इन सभी का तात्पर्य यही है कि जीवन क्या है, क्यों है, इसको जान लिया जाए। जीवन का एक पर्याय प्यास भी है। मगर हम शायद इस प्यास को बाहर ही देख रहे हैं। इसलिए भीतर तक नहीं पहुँच पा रहे हैं और एक सपने में रहकर संसार को अलविदा कर रहे हैं। कुछ लोग इतने प्रतिभावान होते हैं कि बहुत कुछ कर सकते हैं मगर वो अपने जीवन मूल्य बनाते ही नहीं। उत्साह को महसूस ही नहीं करते। दिन आराम से कट रहे हैं तो अपनी गति, लय, निरंतरता सब रबर बन कर मिटा देते हैं।

दरअसल हम सुविधाओं में डूबे रहना चाहते हैं जबकि सच तो यह है कि बहुत सुख, आराम, वैभव भी हमें उदासी से भर देता है। हम तो जानते हैं कि हम सब एक गुण लेकर इस संसार में आए हैं और उस गुण का नाम है खुद को प्रस्तुत करना। कला, साहित्य, विज्ञान, संगीत किसी भी तरह हम खुद को अभिव्यक्त कर सकते हैं। सोच और विचार हमें कुछ अनूठा करने की सूझ दे सकते हैं।

तितलियाँ कहती हैं कि हमसे मिलने की चाहत है तो जंगल में चले आओ। पर्वत हमसे कदमों के निशां ही तो माँगते हैं। इसलिए हमें अपनी विलासिता पर इतना आश्रित नहीं होना चाहिए कि बाद में हमारा मन अवसादों का स्थाई घर बन जाए। इस तरह हम हौले-होले कठपुतली बनने लगते हैं। इससे ज्यादा भयानक और कुछ भी नहीं क्योंकि हमें अपने हौंसले की भी खबर नहीं रहती हमारा अस्तित्व बिखरने लगता है कि हम फिर भी किसी और सहारे के पीछे-पीछे भागने लगते हैं और सारे अंगों के सलामत होने के बाद भी गुलामी की जिंदगी जीने लगते हैं। हम इस संसार में क्या होने आए थे और क्या होकर निकल लेते हैं।

हममें से शायद सभी को यह बात मालूम ना हो कि जीवन की इस यात्रा में कितने महान लोग जन्मजात रूकावट के बावजूद भी आगे बढ़ते रहे। वात्सल्य रस के विश्व विख्यात कवि सूरदास जी दृष्टिहीन थे। तुलसीदास जी को जीवन के उत्तरार्द्ध में असाध्य रोग हो गया था। विंस्टन चर्चिल साफ नहीं बोल पाते थे। हकलाते थे, महान दार्शनिक सुकरात दिखने में कुरूप थे और उनका पारिवारिक जीवन बहुत ही कलहपूर्ण रहा, महान शायर मिर्जा गालिब के सिर से बचपन में ही माता पिता का सहारा छिन गया, महान वैज्ञानिक हेलन केलर कितनी भी शारीरिक अक्षमता के बाद भी सर्वोच्च काम करती रही। स्टीफन हॉकिन्स इतनी आधी अधूरी देह के बाद भी संसार के लिए मिसाल बन गए। महाभारत के महान पात्र एकलव्य ने अंगूठा काट कर गुरु दक्षिणा में दे दिया और फिर से अपना जुनून जगाया। बगैर अंगूठे के धनुष चलाने में महारत हासिल कर ली। इन लोगों ने अपनी कमियों का रोना पीटना करने में समय बरबाद नहीं किया और जीवन के सुंदर हार में अपने हर पल को मोती की तरह पिरो लिया। हमारा जीवन मंत्र यही होना चाहिए कि हम उन लोगों, उन परिस्थितियों, चीजों को बिल्कुल भूल जाए जिनसे हमें किसी तरह का नुकसान, दर्द, परेशानी मिली। हम मुश्किल से मुश्किल वक्त में भी अपना मानसिक संतुलन ना खोए। इसका सकारात्मक और सुखद परिणाम यह होगा कि हम बेहतरीन बातों का खुलकर स्वागत कर सकेंगे।

एक शोध के अनुसार पूरी दुनिया में बस बारह प्रतिशत लोग ही पूरी तरह से जागरूक हैं, सजग हैं और संतुष्ट भी। मतलब साफ है कि संसार में सफलता के तमाम साधनों के बावजूद भी मानव पूरी तरह पूर्ण नहीं है वो बहुत सारे काम अनमने ढंग से कर तो रहा है मगर कुछ पेशोपेश में है इसीलिए संसार में आत्महत्या की घटनाएँ बढ़ती जा रही हैं। ऐसे में हम सबका यह दायित्व बन जाता है कि अपना उपयोग दूसरों को भी करने दें। अपनी सहानुभूति, समय, धन, दुआ कुछ भी है उसको अपने तक ही सीमित ना रखें सौभाग्य तो बाँटने से ही बढ़ता है इसको समाज में फैला दें।

हौले-हौले चाहे छोटा ही सही मगर रोशनी की तरफ कदम तो बढ़ेगा ही, अपने आप को संपूर्ण बनाने के लिए हमें खुद की जरूरत है शिष्य भी हम और गुरु भी। एक बात अपने-आप से बार-बार कहनी चाहिए कि हम संसार के सबसे खुशकिस्मत इंसान हैं। इस तरह हम पंचतत्व के साथ जुड़ जाते हैं। हमारा बैचेन मन सुकून की दशा में आने लगता है और शरीर में अग्नि, वायु, जल, आकाश, पृथ्वी सभी तत्व संतुलन में आ जाते हैं। सजग होकर कर्म से ही जीवन की क्यारी को सींचा जा सकता है।

दुर्गेश, पुष्कर रोड, कोटड़ा,
अजमेर-305004
मो: 9828792720

Rajteachers.in

नवाचार

राजस्थान में बस्ते का बोझ छूमन्तर

❒ संदीप जोशी

शिक्षक दिवस के सूर्योदय की पहली किरण इस बार एक शुभ संदेश लेकर आई, बहु प्रतीक्षित निर्णय के साथ इस शिक्षक दिवस का सूर्योदय हुआ है।

लम्बी प्रतीक्षा ....एक प्रकार से माता शबरी जैसी प्रतीक्षा। माता शबरी जानती थी कि कभी उनकी कुटिया से राम गुजरेंगे, मगर कब इसका अंदाजा नहीं था।

स्कूली विद्यार्थियों के कंधे से बस्ते का भारी-भरकम बोझ कम करने की मेरी योजना, मेरा सपना एक दिन पूरा होगा, इसका मुझे विश्वास था मगर कब, इसका अंदाजा मुझे भी नहीं था। बच्चो के कंधे से बस्ते का बोझ कम करने की एक दशक की साधना को एक मंजिल मिली, सफर अभी जारी है। राजस्थान के माननीय मुख्यमंत्री अशोक गहलोत जी और माननीय शिक्षा मंत्री गोविंद सिंह जी डोटासरा को इस अभिनव पहल के लिए धन्यवाद।

कंधे पर भारी-भरकम बस्ते का बोझ लिए धीमी गति से थके-थके से चलते पाँव। मासूम चेहरों को ऐसी स्थिति में देखकर पीड़ा होती है। हम उसे सभ्य, सुसंस्कृत, सुयोग्य नागरिक बनने की शिक्षा दे रहे हैं या केवल कुशल भारवाहक बनने का प्रशिक्षण। भारी-भरकम बस्ते के बोझ तले पिसता बचपन अभिभावकों व स्कूल की उच्च अपेक्षाओं की बलि चढ़ रहा है। बाल सुलभ जीवनचर्या के विपरीत उसका जीवन तनावपूर्ण हो रहा है। यह मनोवैज्ञानिकों, समाजशास्त्रियों व शिक्षाविदों के लिए भी चिंता चिंतन का कारण बना है। इस समस्या के विभिन्न पहलुओं पर बहुत कुछ लिखा जा चुका हैं।

एक शिक्षक होने के नाते पिछले कई वर्षों से मेरा मन इस समस्या के इर्द-गिर्द चक्कर लगा रहा था। वर्ष 2007 में मैंने इस समस्या का सरल, सहज समाधान निकाला ज्ञानकोष अर्थात माह आधारित पाठ्यपुस्तक। शिविरा के दिसम्बर 2008 के अंक में पृष्ठ संख्या 29 से 34 तक छह पृष्ठों में यह योजना प्रकाशित हुई)

मासिक पाठ्यपुस्तक आधारित यह योजना बस्ते के बोझ को कम करेगी ही इसके अन्य भी बहुत सारे लाभ होंगे। मैंने वर्ष 2007 में यह मासिक पाठ्यपुस्तक आधारित प्रोजेक्ट बनाया था। इन 12 वर्षों में बच्चे -बड़े, शिक्षक -अभिभावक, संस्थाप्रधान से लेकर शिक्षाविद तक, शिक्षा जगत के सर्वोच्च अधिकारियों से लेकर राजनीति क्षेत्र में शिक्षा का नेतृत्व करने वाले लोगों तक ... अनेक स्तरों पर बहुत लोगों का यह मासिक पाठ्यपुस्तक वाला प्रोजेक्ट (ज्ञानकोष) दिखाया, समझाया। सबने इसे बस्ते के बोझ को कम करने का सबसे बेहतरीन उपाय बताया किन्तु धरातल पर वास्तविक क्रियान्वयन की दिशा में जो दृढ़ इच्छा शक्ति चाहिए थी वह अब जाकर प्रकट हुई है।

दो वर्ष पूर्व राष्ट्रीय बाल अधिकार संरक्षण आयोग के बैनर तले नई दिल्ली स्थित इंडिया हैबिटेट सेंटर में बस्ते के बोझ को लेकर एक राष्ट्रीय स्तर की कार्यशाला का आयोजन हुआ जिसमें देश के विभिन्न प्रांतों के एस आई ई आर टी के अधिकारी एवं शिक्षा विभाग के उच्च अधिकारी भी मौजूद थे। राष्ट्रीय स्तर के अनेक शिक्षाविद गोष्ठी में थे। देशभर के शिक्षा जगत के महत्त्वपूर्ण लोगों के सामने मैंने 2007 से चल रहा यह प्रयास विचारार्थ रखा। सभी ने सराहना की और इसे उपयोगी बताया मगर इसमें कोई संदेह नहीं की योजना के क्रियान्वयन में राजस्थान सबसे आगे रहा है।

मासिक पाठ्यपुस्तक आधारित यह नवाचार राजस्थान में एक पायलट प्रोजेक्ट के रूप में राज्य के सभी 33 जिलों के एक-एक विद्यालय में अर्थात कुल 33 विद्यालयों में प्राथमिक स्तर तक लागू किया गया है। वर्षभर में इसकी लगातार समीक्षा होगी और परिणाम के आधार पर इसे पूर्णतया लागू करने पर विचार किया जाएगा। ज्ञानकोष (मासिक पाठ्य पुस्तक, वर्तमान नाम-आओ खेलें)

यह संकल्पना पाठ्य पुस्तकों के माह आधारित स्वरूप की है। जिसके द्वारा पाठ्यक्रम एवं शिक्षण योजना में परिवर्तन किए बिना भी पाठ्य पुस्तकों के बोझ में 86-90 प्रतिशत तक कमी की जा सकती है।

सभी विषयों के वे सारे अध्याय जो एक माह में अध्यापन करवाए जाने अपेक्षित हैं, को मिलाकर एक मासिक पाठ्यपुस्तक का निर्माण किया गया है। हिन्दी, गणित, विज्ञान सामाजिक विज्ञान, अंग्रेजी, संस्कृत इत्यादि विभिन्न विषयो के सम्बन्धित माह में पढ़ाई जाने वाले लगभग 18-20 अध्यायों की एक पुस्तक। चूंकि एक ही पुस्तक में सारे विषय हैं अतः मैंने माह आधारित इन पुस्तकों का नाम ज्ञानकोष सुझाया हैं। ज्ञानकोष जुलाई, ज्ञानकोष अगस्त .....।

प्राथमिक कक्षाओं के पुस्तकों की रचना निम्न अनुसार किया जाना प्रस्तावित किया गया-प्रथम परख तक का पाठ्यक्रम ज्ञानकोष प्रथम, द्वितीय परख तक का पाठ्यक्रम ज्ञानकोष द्वितीय, अर्द्धवार्षिक परीक्षा तक का पाठ्यक्रम ज्ञानकोष तृतीय और वार्षिक परीक्षा तक का पाठ्यक्रम ज्ञानकोष चतुर्थ।

इन मासिक पाठ्यपुस्तक के अनेक फायदे हैं। सबसे बड़ा लाभ बस्ते का बोझ कम। दस-बारह किताबों की जगह एक ही किताब। हर पीरियड में किताब अन्दर-बाहर करने के झंझट से मुक्ति। किताब अधिक समय तक चलेगी, इससे आर्थिक लाभ होगा। कम फटेगी तो किताबे दो तीन सत्र तक काम आ सकती हैं, पर्यावरण संरक्षण भी होगा। मासिक/ द्वैमासिक पुस्तक होने से सब शिक्षकों को समय पर पाठ्यक्रम पूरा करना होगा।

इस प्रकार, निर्धारित पाठ्यक्रम का पालन करते हुए भी बस्ते का बोझ कम किया जा सकता है। आशा है कि बस्ते के बोझ को कम करने का राजस्थान से प्रारंभ हुआ यह ऐतिहासिक कदम देश भर के लिए प्रेरणा बनेगा और नई पीढ़ी के नौनिहाल बस्ते के बोझ से राहत पाएँगे।

शांति नगर बी ब्लॉक, जालोर 343001
मो. 9414544197

Rajteachers.in

संस्मरण

मैं पढ़ाने आऊँगा

❒ प्रेमांशु राम मेहता

हर संस्थाप्रधान की सुप्त अथवा मुखर लेकिन बलवती इच्छा होती है कि विद्यालय में स्थानान्तरण के दौर में योग्य व आदर्श अध्यापक आएँ जिससे आज के प्रतिस्पर्धी युग में विद्यालय भी अपनी पहचान की कीर्ति को उज्ज्वल कर प्रतिस्पर्धा में टिक सकें। मैं भी इस तथ्य का अपवाद नहीं था लेकिन मेरे साथ कुछ चीजें और जुड़ी थीं जैसे शिक्षक दिवस पर स्टेट अवार्ड मिलना, मा.शि. बोर्ड की जीवन कौशल शिक्षा कक्षा के लेखक समूह में होना, पत्रवाचन में राज्यस्तरीय रिकॉड होना, जिलास्तरीय राष्ट्रीय पर्वो में प्रति वर्ष उद्घोषक होना तथा प्रतिवर्ष उत्कृष्ट परीक्षा परिणाम देना और उक्त बिन्दुओं के मद्देनजर में ज्यादा आग्रही था कि मेरे विद्यालय मे कोई ऐसा अध्यापक न आ जाए जिस कारण मैं अपने उक्तस्तर से नीचे गिरूँ व समाज, विभाग तथा अभिभावकों की अपेक्षाओं को भी पूरा न कर पाऊँ। गणित के रिक्त पद पर मैं एक अच्छे अध्यापक के स्थानान्तरित होकर आने की अपेक्षा कर रहा था और जैसे ही स्थानान्तरण प्रारम्भ हुए और धीरज गणित अध्यापक के रूप में स्थानान्तरित होकर आए तो मेरी अपेक्षा पूरी हुई और मन मांगी मुराद मिल गईं विद्यालय का पूर्व का स्टॉफ जो निश्चित ही बहुत अच्छा था वह वह भी बहुत प्रसन्न हो गया।

अब विद्यालय ने राज्यस्तरीय मैरिट, जिलास्तरीय मेरिट, गार्गी पुरस्कार, सहशैक्षिक व भौतिक गतिविधियों में नए कीर्तिमान बनाने शुरू कर दिए और ये अच्छे दिन कैसे गुजर गए पता भी न लगा और मेरी पेन्शन का दिन आ गया। जिले के उपलब्ध प्रतिष्ठित नेतागण, समाजसेवी, शिक्षाविद, अभिभावक व विद्यालयों के मध्य मेरी विदाई हुई जिसके आयोजन व संचालन में धीरज की भूमिका भी बहुत उल्लेखनीय थी और उद्घोषक के रूप में उन्होंने कार्यक्रम को अकल्पनीय व अनिर्वचनीय बना दिया था।

अभी विद्यालय में गुजरे 7 वर्षो की यादें

ताजा ही थी कि एक दुःखद समाचार ने मुझे अन्दर तक हिला दिया। धीरज को जीभ का केन्सर हुआ था और ऑपरेशन के लिए जाने वाले थे। मैं तत्काल उनके घर गया। धीरज को मिलने पर लग ही नहीं रहा था कि वे एक भयानक बीमारी के ऑपरेशन के लिए जा रहे हैं। बड़ी सहजता से मिले। चेहरे पर दूर-दूर तक कहीं घबराहट या डर का चिह्न नहीं था। निजी विषादयुक्त उनके भय व घबराहट रहित ये शब्द में जीवन में नहीं भूल सकता.....सर! मुझे पता है मुझे जीभ का केन्सर है..... लेकिन मैंने भगवान शिवजी व हनुमानजी से प्रार्थना कर ली है और मुझे पूरा विश्वास है कि विद्यार्थियों व अभिभावकों की दुआओं से मैं ठीक होकर आऊँगा, मैं विद्यालय में पढ़ाने आऊँगा, जरूर आऊँगा, मैंने विद्यार्थियों को हमेशा दिल से पढ़ाया है.... अतः माँ शारदा भी मेरे साथ है... देखना सर मैं पढ़ाने आऊँगा.... और आशा व विश्वास से दीप्त धीरज को मैंने भी हौंसला अफजाई के लिए विभाग के उन शिक्षकों की सक्सेस स्टोरीज बताई जिन्होंने केन्सर, मृत्यु जैसे प्रकरणों में भी विजयश्री का सेहरा माथे पर बांधा था। आत्म विश्वास बढ़ाने वाली बातें कर मैं लौट गया था लेकिन रुदन रोकना कठिन हो रहा था पत्नी आशा को जब यह बात बताई तो उसकी भी आँखे भर आई थी।

ऑपरेशन हो गया लेकिन अहमदाबाद के हॉस्पीटल व किराए लिए गए फ्लैट की जानकारी को उन्होंने लगभग 6-7 माह तक पूर्ण गुप्त रखा लगभग 8 (आठ) माह के बाद जब मुझे पता लगा कि वे अपने निवास स्थान लौट आए हैं तो मैं उनसे मिलने गया परन्तु उनकी पत्नी ने कहा कि वे तो विद्यालय गए हैं मुझे बड़ा आश्चर्य हुआ और क्रोध भी आया कि विद्यालय जाने की इतनी जल्दी क्या थी? मैं विद्यालय में पहुँचा क्योंकि मेरी अपने पुराने विद्यालय, स्टाफ व नये प्रिन्सीपल साहब से मिलने की इच्छा भी थी। मैं विद्यालय पहुँचा स्टॉफ, प्रिन्सीपल साहब ने मेरा गर्म जोशी से स्वागत किया जब मैंने धीरज के बारे में पूछा तो प्रिन्सीपल सर ने कहा कि वे तो गणित का पिरियड ले रहे हैं। मैं प्रिन्सीपल सर के साथ उनके कक्ष की तरफ गया। धीरज मुँह पर बड़ा सा रूमाल बांधे थे और विद्यार्थियों को बिना बोले बोर्ड पर सवालों का उत्तर बता रहे थे। जैसे ही उन्होंने मुझे देखा वे बाहर आए। मैंने आव देखा ना ताव गुस्से में लेकिन धीमी आवाज में कहा, ...इतनी जल्दी क्या थी... इतनी बड़ी रिस्क..... परिवार का कुछ ख्याल है अथवा नहीं..... तब धीरज में धीमें और रूक रूक कर आती आवाज से उत्तर दिया''.... सर ऑपरेशन से पहले आपने ही तो केन्सर से पीड़ित गगन सर का उदाहरण दिया था कि उन्होंने कैसे संस्था व स्वयं का उत्कृष्ट परिणाम दिया था। हितेश सर ने कैसे कम उम्र की पत्नी के आकस्मिक निधन पर भी अपने अपार दुःख को जब्त कर विद्यालय व स्वयं का शानदार परीक्षा परिणाम दिया था..... तो फिर मैं कैसे पीछे रहता? ...... परीक्षा सर पर है और में विद्यार्थियों को पढ़ाने न आऊँ तो उनका तो भविष्य ही चौपट हो हो जाएगा..... और सर मैंने आपको कहा भी था कि...... मैं पढ़ाने आऊँगा...... मेरे कण्ठ से कोई स्वर न निकला। मैंने उन्हें इशारे से पढ़ाने जाने के लिए कहा। वह केन्सर विजयी योद्धा पुनः अपनी कर्त्तव्य राह पर चल पड़ा था। मैं अपनी डबडबाई आँखों के साथ सोच रहा था। गगन, हितेश, धीरज जैसे समर्पित अध्यापकों के कारण ही शिक्षा विभाग व सरकारी विद्यालयों का नाम रोशन हो रहा है। नामांकन व परीक्षा परिणाम उत्तरोत्तर बढ़ रहे हैं।

पूर्व प्रधानाचार्य
128, आदर्श नगर लिंग रोड,
गिफ्ट हाऊस के सामने, डूंगरपुर-314001

Rajteachers.in

आदेश-परिपत्र : अक्टूबर, 2019

1. वार्षिक कार्यमूल्यांकन प्रतिवेदन भरने व भिजवाने सम्बन्धी निर्देश।
2. विज्ञान संकाय के अन्तर्गत कक्षा-12 में कृषि विज्ञान विषय के संकाय में।
3. संशोधित कार्यालय आदेश के सम्बन्ध में।
4. विद्यार्थियों हेतु शैक्षिक एवं सांस्कृतिक यात्रा 2019-20 के सम्बन्ध में निर्देश।
5. माध्यमिक शिक्षा विभाग के अन्तर्गत अध्ययनरत विद्यार्थियों के लिए भारत/राजस्थान दर्शन शैक्षिक एवं सांस्कृतिक यात्रा का आयोजन करने के संबंध में दिशा-निर्देश।
6. भूतपूर्व सैनिकों को राज्य की सेवाओं में एक बार से अधिक (दोहरा) लाभ देने के संबंध में।
7. विद्यालय प्रसारण कार्यक्रम की प्रभावी क्रियान्विति बाबत।
8. बेशी/अप्रचलित/अनुपयोगी सामान निस्तारण अभियान।
9. अनुपयोगी/नाकारा स्टोर्स निस्तारण अभियान।

1. वार्षिक कार्यमूल्यांकन प्रतिवेदन भरने व भिजवाने सम्बन्धी निर्देश।

● कार्यालय निदेशक, माध्यमिक शिक्षा राजस्थान, बीकानेर ● क्रमांकःशिविरा-मा/संस्था/गोप्र/विविध/डी-II/ए-I/17-18 दिनांक 09.09.2019 ● विषय : वार्षिक कार्यमूल्यांकन प्रतिवेदन भरने व भिजवाने सम्बन्धी निर्देश।

वार्षिक कार्य मूल्यांकन प्रतिवेदन यथा समय भरकर प्रस्तुत करने हेतु लोक सेवकों/प्रतिवेदक अधिकारियों एवं समीक्षक अधिकारियों को समय-समय पर विभाग द्वारा निर्देशित किया जाता रहा है, परन्तु प्रायः यह देखने में आ रहा है कि प्रतिवेदक अधिकारी एवं समीक्षक अधिकारी द्वारा अपने अधीन कार्यरत लोक सेवकों के वार्षिक कार्य मूल्यांकन प्रतिवेदन समय पर भरवाकर प्राप्त करने व भिजवाने के सम्बन्ध में कोई ठोस प्रयास नहीं किया जाता है तथा विभागीय पदोन्नति समिति की बैठक आयोजित होने के समय एवं ए.सी.पी. हेतु बकाया वार्षिक कार्य मूल्यांकन प्रतिवेदन माँगने पर अधीनस्थ कार्यालय अध्यक्षों द्वारा संस्थाप्रधानों को निदेशालय के पत्र का संदर्भ देते हुए निर्देश जारी कर अपनी-अपनी जिम्मेदारी समाप्त मान लेते है। वार्षिक कार्य मूल्यांकन प्रतिवेदन के नियम एनेक्चर-ए कार्यालयों में कार्यरत लोक सेवकों (मंत्रालयिक कर्मचारी सहित) के प्रतिवेदन भरकर प्रस्तुत करने का समय तथा एनेक्चर-एए में शालाओं में कार्यरत संस्थाप्रधान सहित अध्यापन कराने वाले लोक सेवकों का समय निश्चित किया हुआ है जिसका उल्लेख नीचे दिया जा रहा है-

क्र.सं.	प्रतिवेदन प्रस्तुत करना, टिप्पणी अंकित करना व प्रेषित करना	प्रस्तुत/प्रेषित करने की अंतिम तिथि	
		कार्यालय में कार्यरत लोक सेवकों के लिए (शिक्षक वर्ग सहित)	विद्यालयों में कार्यरत लोक सेवकों के लिए (मंत्रालयिक कर्मचारियों को छोड़कर)
1.	लोक सेवकों द्वारा वाकामू. प्रतिवेदन प्रस्तुत करना।	10 अप्रैल	15 अगस्त
2.	प्रतिवेदक अधिकारी द्वारा प्रतिवेदन पर टिप्पणी अंकित करना।	10 मई	15 सितम्बर
3.	प्रतिवेदक अधिकारी द्वारा समीक्षक अधिकारी को प्रेषित करना।	15 मई	20 सितम्बर
4.	समीक्षक अधिकारी द्वारा प्रतिवेदन में टिप्पणी अंकित करना एवं सम्बन्धित कार्यालय को संधारण हेतु भिजवाना।	15 जून	20 अक्टूबर

उपर्युक्तानुसार समय पर वाकामू. प्रतिवेदन भरवाने व प्रेषित करने के सम्बन्ध में निम्नलिखित निर्देशों का कठोरता से पालन किया जावेः-

1. राज्य सरकार के आदेश क्रमांक 13(48)कार्मिक(क-1)/गोप्र/77 दिनांक 16.7.80 एवं एफ 13(51)कार्मिक/ए-I/एसीआर/08 दिनांक 05.06.2008 में स्पष्ट प्रावधान है कि निर्धारित तिथि तक प्रतिवेदक द्वारा प्रतिवेदन के भाग-1 की पूर्ति कर समय पर प्रस्तुत नहीं किया जाता है तो प्रतिवेदक अधिकारी निर्धारित तिथि पश्चात् प्रतीक्षा नहीं करें तथा कार्यालय अभिलेख से भाग-I की पूर्ति करें एवं अपनी टिप्पणी अंकित कर सम्बन्धित समीक्षा अधिकारी को भिजवा देवें। यह प्रतिवेदक अधिकारी की व्यक्तिगत जिम्मेदारी होगी।
2. प्रतिवेदक/समीक्षक अधिकारी वाकामू. प्रतिवेदन पर अपनी टिप्पणी अंकित करते समय इस बात की पुष्टि अवश्य करें कि उसने अपने अधीनस्थ सभी लोक सेवकों के वाकामू. प्रतिवेदनों पर प्रतिवेदन/ समीक्षक टिप्पणी अंकित कर सम्बन्धित अधिकारी को प्रस्तुत कर दिए हैं। वाकामू. प्रतिवेदन उच्च अधिकारी को भेजने से पूर्व सम्बन्धित संधारण रजिस्टर में प्रत्येक संवर्ग व पदवार इन्द्राज अवश्य किया जावे।
3. सेवानिवृत्त होने वाले प्रतिवेदक/समीक्षक अधिकारी का वैधानिक कर्त्तव्य है कि उनके अधीन कार्यरत लोक सेवक जिसने कम से कम तीन माह से अधिक समय तक कार्य किया हो उनका वाकामू. प्रतिवेदन अवश्य भरें अन्यथा उनको अदेय प्रमाण-पत्र जारी नहीं किया जाएगा।

Rajteachers.in

4. तीन वर्षों से पूर्व के प्रतिवेदन राज्य सरकार के आदेश क्रमांक एफ-14(29)कार्मिक/एसीआर/73 दिनांक 16.07.1985 के अनुसार स्वीकार योग्य नहीं है। अतः तीन वर्षों के पूर्व के मूल प्रतिवेदन तैयार नहीं करवाए जावे, इसके स्थान पर तीन वर्ष से पूर्व के प्रतिवेदन प्रतिवेदक अधिकारी स्वयं द्वारा कार्यालय अभिलेख के आधार पर (कार्यालय स्तर पर) तैयार कर भिजवाया जावे। ध्यान रहे कि ऐसे प्रतिवेदनों में समग्र मूल्यांकन संतोषप्रद से ऊपर की श्रेणी का नहीं भरा जावे।
5. प्रतिवेदक अधिकारी लोक सेवक के प्रतिवेदन पर टिप्पणी अंकित करने से पूर्व जाँच करे कि लोक सेवक द्वारा अपने विभाग (शिक्षा विभाग) का मूल पद एवं विषय, कार्य करने की सेवा अवधि, वर्तमान पद का चयन वर्ष, उस वर्ष का बोर्ड परीक्षा परिणाम एवं अंतिम पृष्ठ में अंकित सम्पत्ति का ब्यौरा सही रूप से भरा है अथवा नहीं? क्योंकि मुख्य रूप से मूल पद का सही उल्लेख नहीं होने के कारण प्रतिवेदन संधारण में असुविधा एवं अनावश्यक विलम्ब होता है। डाइट, एस.आई.ई.आर.टी., ग्रामीण विकास एवं पंचायती राज विभाग, महिला एवं बाल विकास विभाग, सर्व शिक्षा एवं ईटी. सेल में कार्यरत अधिकारी प्रायः अपना मूल पद अंकित नहीं करते है। अतः उक्त कार्यालयों में कार्यरत लोक सेवक अपना मूल पद अवश्य अंकित करें एवं व्याख्याता अपने अध्यापन विषय के स्थान पर व्याख्याता पद का मूल विषय करें।
6. लोक सेवक वाकामू. के प्रत्येक पृष्ठ पर अपने हस्ताक्षर एवं जन्म तिथि अंकित करें। प्रतिवेदक अधिकारी को वाकामू. प्रतिवेदन प्रस्तुत करने का दिनांक एवं नियुक्ति का प्रकार तथा राजस्थान लोक सेवा आयोग/डीपीसी से चयनित वर्ष/तदर्थ भी अंकित करें। पाते वेतन पर कार्यरत की स्थिति में उसके उल्लेख के साथ-साथ मूल पूर्व स्थायी पद व विषय का भी उल्लेख किया जावे।
7. प्रतिवेदक अधिकारी वाकामू. प्रतिवेदन के भाग-। की प्रविष्टियों को प्रमाणित कर अपने हस्ताक्षर अंकित करे। भाग-।। की पूर्ति के पश्चात् अपनी मोहर अवश्य लगावे, जिसमें अपना नाम, पदनाम का स्पष्ट उल्लेख हो। यदि पदस्थापन स्थान परिवर्तित हो गया है तो पूर्व स्थान की मोहर तथा वर्तमान पदस्थापन की मोहर दोनों लगावें। पूर्व में भी इसी भाँति निर्देश दिए गए थे, जिसकी पालना पूर्ण रूप से नहीं हो रही है। उपर्युक्त प्रक्रिया समीक्षक अधिकारी द्वारा भाग-।। एवं भाग-।।। में भी अपनाई जावे।
8. जिलास्तरीय अधिकारियों के वाकामू. प्रतिवेदन प्रतिवेदक अधिकारी की टिप्पणी के बाद सम्बन्धित जिला कलेक्टर की टिप्पणी हेतु एवं मंडल स्तरीय अधिकारियों का प्रतिवेदन प्रतिवेदक अधिकारी की टिप्पणी के बाद सम्बन्धित संभागीय आयुक्त को प्रेषित किया जावेगा। कलेक्टर/संभागीय आयुक्त अपनी टिप्पणी के बाद वाकामू. प्रतिवेदन समीक्षक अधिकारी को प्रेषित करेंगे।
9. सैकेण्डरी एवं सीनियर सैकेण्डरी बोर्ड परीक्षा परिणाम वाकामू. प्रतिवेदन में अवश्य अंकित करने के साथ-साथ परीक्षा परिणाम की प्रमाणित प्रति भी साथ में संलग्न करें। न्यून परीक्षा परिणाम की स्थिति में प्रतिवेदक/समीक्षक अधिकारी अपनी टिप्पणी में इसका उल्लेख अवश्य करें। चूँकि शिक्षा विभाग में संस्थाप्रधानों/व्याख्याता/वरिष्ठ अध्यापक/अध्यापक का परीक्षा परिणाम ही मुख्य उपलब्धि की श्रेणी में आता है। अतः जिन कार्मिकों का परीक्षा परिणाम न्यून है, अन्य उपलब्धियाँ चाहे जितनी भी श्रेष्ठ हो उनका समग्र मूल्यांकन अच्छा से ऊपर अंकित नहीं किया जावे इसकी पालना कठोरता से की जावे, ताकि प्रतिवेदन संधारण में अनावश्यक पत्र व्यवहार न करना पड़े।
10. वाकामू. प्रतिवेदन में प्रतिकूल प्रविष्टि का इन्द्राज प्रतिवेदक/समीक्षक अधिकारी उस समय तक नहीं करे जब तक कि प्रतिकूल प्रविष्टि के साक्ष्य में उनके पास पर्याप्त ठोस प्रमाण न हो प्रतिवेदक अधिकारी द्वारा की गई प्रतिकूल प्रविष्टि को समीक्षक अधिकारी प्रतिवेदक अधिकारी से लिखित सलाह मशविरा कर ही निरस्त कर सकता है।
11. प्रतिवेदक यह सुनिश्चित करें कि बिन्दु संख्या 1 से 2 तक में की गई अभियुक्तियों एवं बिन्दु संख्या 5 में किए गए समग्र मूल्यांकन में एकरूपता हो। बिन्दु 1 से 2 तक में कहीं पर भी प्रतिकूल अभियुक्ति नहीं होने पर बिन्दु संख्या 5 में तद्नुरूप ही समग्र मूल्यांकन किया जावे। यदि कहीं पर भी कोई प्रतिकूल अभियुक्ति हो समग्र मूल्यांकन भी असंतोषप्रद ही किया जावे।
12. समीक्षक अधिकारी प्रतिवेदक अधिकारी द्वारा किए गए समग्र मूल्यांकन को उस स्थिति में ही परिवर्तित कर सकता है जबकि वह कार्मिक एवं उसके व्यवहार से पूर्णतया परिचित हो तथा प्रतिवेदक द्वारा किए गए मूल्यांकन को परिवर्तित करने के उसके पास ठोस प्रमाण हो। समग्र मूल्यांकन परिवर्तित करते समय वह उन पर्याप्त कारणों/औचित्य का उल्लेख अपनी समीक्षक टिप्पणी में अवश्य अंकित करें, तत्पश्चात् ही किए गए समग्र मूल्यांकन को परिवर्तित करें।
13. पाते वेतन व्याख्याता/प्रधानाध्यापक/प्रधानाचार्य के वाकामू. प्रतिवेदन जिस मूल पद से चयनित किए गए हो उसके संधारण अधिकारी द्वारा ही संधारित किए जाएँगे।
14. ए.सी.पी. प्रकरण से सम्बन्धित बकाया वार्षिक कार्य मूल्यांकन प्रतिवेदनों के प्रकरणों में निदेशालय द्वारा चाही गई सूचना पत्र प्राप्ति के दस दिवस के भीतर अलग से तैयार कर अवश्य भिजवाएँ।
15. अन्य विभाग में प्रतिनियुक्ति पर जाने वाले लोक सेवक मूल पद एवं विषय, पैतृक विभाग का ही अंकित करें। सम्बन्धित प्रतिवेदक अधिकारी भी अपनी प्रतिवेदन टिप्पणी अंकित करने से पूर्व विशेष रूप से इसकी जाँच करें।
16. मण्डल अधिकारी एवं जिला शिक्षा अधिकारी अपने कार्यालय में वार्षिक कार्य मूल्यांकन का रजिस्टर तैयार करें। जिसका प्रपत्र संलग्न है।

उक्त परिपत्र में उल्लेखित समय सारिणी अनुसार अधीनस्थ लोक सेवकों (व्याख्याता, प्रधानाध्यापक, प्रधानाचार्य (पुरुष/महिला)) के वाकामू. प्रतिवेदन निदेशालय में नवम्बर माह तक प्राप्त हो जाने चाहिए, अन्यथा सम्बन्धित प्रतिवेदक/समीक्षक अधिकारी के विरुद्ध नियमानुसार अनुशासनात्मक कार्यवाही के प्रस्ताव सक्षम उच्च अधिकारी द्वारा

Rajteachers.in

निदेशालय को प्रस्तुत किए जावे, इसमें किसी भी प्रकार की शिथिलता स्वीकार योग्य नहीं है। उपर्युक्त सभी निर्देशों की कठोरता से पालना भी की जावे।

साथ ही अधोहस्ताक्षरकर्त्ता के ध्यान में यह भी लाया गया है कि संस्थाप्रधान, जिला शिक्षा अधिकारी एवं मंडल कार्यालयों में निदेशालय द्वारा समय-समय पर जारी परिपत्रों में स्पष्ट निर्देशों के बावजूद भी लोक सेवकों के वाकामू प्रतिवेदन कार्यालय में ही बकाया पड़े रहते हैं। अतः पिछले तीन वर्षों के ऐसे समस्त वाकामू. प्रतिवेदन भी विलम्ब का कारण स्पष्ट करते हुए सम्बन्धित संधारण अधिकारी अथवा निदेशालय को 15 दिवस के भीतर विषयवार सूचीबद्ध कर भिजवाया जावे अन्यथा सम्बन्धित दोषी अधिकारी के विरुद्ध पदीय दायित्वों की अवहेलना मानी जाकर अनुशासनात्मक कार्यवाही की जाएगी।

● **संयुक्त निदेशक (कार्मिक)** माध्यमिक शिक्षा राजस्थान, बीकानेर।

2. विज्ञान संकाय के अन्तर्गत कक्षा-12 में कृषि विज्ञान विषय के संकाय में।

● कार्यालय निदेशक, माध्यमिक शिक्षा राजस्थान, बीकानेर ● क्रमांक : शिविरा-मा/माध्य/अ-4/कृषि/संकाय-विषय/2019-20 दिनांकः 28.08.2019 ● समस्त मुख्य जिला शिक्षा अधिकारी एवं पदेन जिला परियोजना समन्वयक समग्र शिक्षा अभियान। ● विषय : विज्ञान संकाय के अन्तर्गत कक्षा-12 में कृषि विज्ञान विषय के संकाय में। ● प्रसंग : शासन का पत्रांकः प.4 (3)शिक्षा-1/2015/पार्ट दिनांक 07.08.2018 एवं इस कार्यालय के समसंख्यक पत्र दिनांक 21.08.2018, 01.10.2016 तथा समसंख्यक आदेश दिनांक 11.12.2018।

उपर्युक्त विषयान्तर्गत प्रासंगिक पत्रों के द्वारा विज्ञान वर्ग को दो वर्गों, वर्ग- 'अ' तथा वर्ग- 'ब' में विभाजित कर विज्ञान वर्ग में कृषि विज्ञान, कृषि रसायन एवं कृषि जीव विज्ञान विषय लेने एवं उनके विकल्प क्या रहेंगे, इस संबंध में स्पष्ट किया गया था। गत सत्र 2018-19 में कुछ संस्थाप्रधानों द्वारा बिना सक्षम स्वीकृति के स्वयं के स्तर पर कक्षा 12 के विद्यार्थियों के बोर्ड आवेदन पत्रों में कृषि विज्ञान विषय के साथ कृषि रसायन एवं कृषि जीव विज्ञान विषय भरवाए गए थे। यद्यपि यह परिवर्तन बिना सक्षम स्वीकृति के स्वयं के स्तर पर किया गया था, अतः ऐसे संस्था प्रधानों को कारण बताओ नोटिस देते हुए, विद्यार्थियों के भविष्य को ध्यान में रखते हुए भरे हुए कृषि विज्ञान विषय के साथ कृषि रसायन एवं कृषि जीव विज्ञान विषय हेतु केवल उसी वर्ष 2018-19 के लिए इस कार्योत्तर के प्रासंगिक आदेश दिनांक 11.12.2018 से कार्योत्तर स्वीकृति इस शर्त के साथ प्रदान की गई कि ऐसे विद्यालयों में वर्ष 2018-19 के लिए कक्षा 12 में कृषि विज्ञान, कृषि रसायन एवं कृषि जीव विज्ञान संचालन की कार्योत्तर स्वीकृति प्रदान की जाती है। कक्षा 11 में पूर्व में स्वीकृत विषय ही संचालित किए जाएँगे, साथ ही यह भी निर्देशित किया जाता है कि कोई भी विद्यालय अथवा अधीनस्थ स्तर पर बिना सक्षम स्वीकृति के कोई विषय परिवर्तन नहीं किया जावे।'

उक्तानुसार यह स्पष्ट है कि सत्र 2018-19 की कक्षा 11 में कृषि विज्ञान विषय के साथ रसायन विज्ञान एवं जीव विज्ञान अथवा बोर्ड द्वारा प्रदत्त विकल्पानुसार अन्य वैकल्पिक विषय ही संचालित रहे है, जो कि इस वर्ष 2019-20 में कक्षा-12 में परीक्षा हेतु आवेदन कर रहे हैं। फिर भी विभिन्न संस्थाप्रधानों द्वारा इस बाबत् बार-बार जानकारी चाही जा रही है। अतः इस संबंध में स्पष्ट किया जाता है कि गत सत्र 2018-19 में कक्षा-11 में कृषि विज्ञान विषय के साथ संचालित विषयों, रसायन विज्ञान एवं जीव विज्ञान अथवा पूर्व से संचालित अन्य विकल्पानुसार संचालित रहे थे, वे ही विद्यार्थी कक्षा-12 में इस सत्र में बोर्ड आवेदन भर रहे है अतः वे उन्हीं विषयों हेतु ही आवेदन करेंगे।

राजस्थान विधानसभा में बजट 2019-20 के संबंध में शिक्षा विभाग की अनुदान माँगों पर चर्चा के दौरान माननीय शिक्षा राज्यमंत्री (स्वतंत्र प्रभार) महोदय द्वारा कृषि विज्ञान विषय को कृषि संकाय में परिवर्तित करने की घोषणा की गई थी। इसकी पालना में कृषि विज्ञान विषय को संकाय में बदलने हेतु प्रस्ताव शासन स्तर पर विचाराधीन है। कृषि विज्ञान विषय को संकाय में परिवर्तित करने का निर्णय होने पर कृषि विज्ञान संकाय सत्र 2019-20 में कक्षा-11 में ही लागू होगा तथा इस सत्र 2019-20 में कक्षा-12 में पूर्व की भाँति कृषि विज्ञान एक विषय के रूप में ही संचालित होगा। इस हेतु तत्समय आवश्यक आदेश/निर्देश जारी कर दिए जाएँगे। ऐसे संस्थाप्रधान जो बिना किसी सक्षम स्वीकृति के स्वयं के स्तर पर विषय में परिवर्तन करेंगे अथवा बोर्ड के आवेदन भरवाएँगे, उनके विरुद्ध आदेशों की अवहेलना के लिए नियमानुसार अनुशासनात्मक कार्यवाही की जाएगी।

● **(नथमल डिडेल) आइ.ए.एस.**, निदेशक, माध्यमिक शिक्षा राजस्थान, बीकानेर।

3. संशोधित कार्यालय आदेश के सम्बन्ध में।

● कार्यालय निदेशक, माध्यमिक शिक्षा राजस्थान, बीकानेर ● विषय : संशोधित कार्यालय आदेश के सम्बन्ध में।

इस कार्यालय के आदेश क्रमांकः शिविरा/माध्य/स्थिरी-अ/34848/2017 दिनांक 22.05.2019 के द्वारा परीवीक्षाकाल में आकस्मिक अवकाश के सम्बन्ध में निम्नानुसार आदेश जारी किए गए थे। राजस्थान सिविल सेवा (पुनरीक्षित वेतन) नियम-2017 (अधिसूचना क्रमांक एफ-5 (I)) वित्त/नियम-2017 जयपुर दिनांक 30.10.2017) के नियम-16 की अनुसूची-IV की टिप्पणी संख्या 4 के अनुसार ''Probationer trainee shall be eligible for casual leave of 15 days in a calendar year and for period of less than a calender year. It shall be admissible in proportion on the basis of completed months'' आकस्मिक अवकाश जनवरी से दिसम्बर तक की अवधि को कैलेण्डर वर्ष मानकर स्वीकृत करने के निर्देश दिए गए थे। उक्त आदेश को राजस्थान सेवानियम-1951 खण्ड द्वितीय के परिशिष्ट-1 के प्रावधानानुसार संशोधित किया जाकर शैक्षिक विभागों (विश्रामकालीन विभाग) के शैक्षणिक कर्मचारियों के लिए आकस्मिक अवकाश के लिए कलैण्डर वर्ष 01 जुलाई से 30 जून तक रहेगा।

विभाग में कार्यरत परीवीक्षाधीन शिक्षकों एवं नियमित शिक्षकों के लिए वर्ष के सम्बन्ध में राजस्थान सेवानियम-1951 खण्ड द्वितीय के

Rajteachers.in

परिशिष्ट-1 के तत्सम्बन्धी प्रावधान समान रूप से लागू है।

वित्तीय सलाहकार, माध्यमिक शिक्षा राजस्थान, बीकानेर।

4. विद्यार्थियों हेतु शैक्षिक एवं सांस्कृतिक यात्रा 2019-20 के सम्बन्ध में निर्देश।

● कार्यालय निदेशक, माध्यमिक शिक्षा राजस्थान, बीकानेर ● क्रमांकः शिविरा-माध्य/छात्रवृत्ति/सेल-इ/शैक्षिक भ्रमण/19-20 दिनांकः 09.09.2019 ● समस्त सयुक्त निदेशक स्कूल शिक्षा, समस्त जिला शिक्षा अधिकारी माध्यमिक-मुख्यालय ● विषय : विद्यार्थियों हेतु शैक्षिक एवं सांस्कृतिक यात्रा 2019-20 के सम्बन्ध में निर्देश।

विद्यार्थियों हेतु शैक्षिक एवं सांस्कृतिक यात्रा के सम्बन्ध में योजना एवं वित्तीय प्रावधान राज्य सरकार के पत्रांक प. 17 (2) शिक्षा-1/2011/दिनांक 22.01.2011 के द्वारा स्वीकृत किया गया जिसकी पालना में सत्र 2019-20 के लिए निर्देश प्रेषित किए जा रहे हैं। योजनानुसार राजकीय विद्यालयों के कक्षा 9 व 10 के विद्यार्थियों के लिए अन्तर जिला एवं कक्षा 11 व 12 के लिए अन्तर राज्य शैक्षिक भ्रमण का कार्यक्रम निर्धारित किया गया है। वित्तीय वर्ष 2019-20 के लिए अन्तर जिला और अन्तर राज्य शैक्षिक भ्रमण हेतु जो राशि स्वीकृत हुई है उसे अलग से जारी किया जा रहा है।

अन्तर जिला शैक्षिक भ्रमण का जिला शिक्षा अधिकारी (माध्यमिक मुख्यालय) को नोडल अधिकारी बनाया जाता है। अन्तर राज्य शैक्षिक भ्रमण हेतु संयुक्त निदेशक स्कूल शिक्षा, जयपुर को नोडल अधिकारी मनोनीत किया गया है। उक्त नोडल अधिकारी निम्नांकित कार्यक्रम के अनुसार क्रमशः अन्तर जिला और अन्तर राज्य शैक्षिक भ्रमण की क्रियान्विति करेंगे।

अन्तर राज्य शैक्षिक भ्रमण हेतु प्रस्तावित तिथियाँ (कक्षा-11 व 12 के विद्यार्थियों के लिए)

1.	छात्र/छात्राओं द्वारा संस्थाप्रधान के माध्यम से जिशिअ. माध्यमिक-मुख्यालय को आवेदन प्रस्तुत करना	23.09.19
2.	जिशिअ. माध्यमिक मुख्यालय द्वारा वरीयता से छात्र/छात्राओं का चयन कर परिक्षेत्र के संयुक्त निदेशक स्कूल शिक्षा को नाम व आवेदन भेजना।	30.09.19
3.	परिक्षेत्र के संयुक्त निदेशक स्कूल शिक्षा द्वारा जिलों से प्राप्त छात्र/छात्राओं के नाम व दल प्रभारी के रूप में एक शिक्षक का नाम नोडल अधिकारी (संयुक्त निदेशक स्कूल शिक्षा जयपुर) को प्रेषित करना।	04.10.19
4.	नोडल अधिकारी (संयुक्त निदेशक स्कूल शिक्षा, जयपुर) द्वारा निदेशालय से शैक्षिक भ्रमण कार्यक्रम की अनुमति प्राप्त करना।	14.10.19
5.	दस दिवसीय अन्तर राज्य शैक्षिक भ्रमण की अवधि।	22.10.19 से 02.11.19 के मध्य मध्यावधि अवकाश में

अन्तर जिला शैक्षिक भ्रमण प्रस्तावित तिथियाँ (कक्षा 9 व 10 के विद्यार्थियों के लिए)

क्र. सं.	कार्यक्रम	तिथि/ अवधि
1.	छात्र/छात्राओं द्वारा संस्थाप्रधान के माध्यम से जिशिअ. माध्यमिक-मुख्यालय को आवेदन प्रस्तुत करना	27.09.19
2.	जिशिअ. माध्यमिक-मुख्यालय द्वारा वरीयता से छात्र/छात्राओं का चयन कर संबंधित को सूचना करना।	07.10.19
3.	पाँच दिवसीय अन्तर्जिला शैक्षिक भ्रमण की अवधि	22.10.19 से02.11.19 मध्य के मध्यावधि अवकाश में।

समस्त संयुक्त निदेशक स्कूल शिक्षा कार्यालय व जिला अधिकारी माध्यमिक-मुख्यालय योजना की क्रियान्विति सुनिश्चित करें। शैक्षिक भ्रमण के दौरान विद्यार्थियों की सुरक्षा व उचित देखभाल को ध्यान में रखते हुए यथोचित व्यवस्था सुनिश्चित करें। इसी क्रम में मानव संसाधन विकास मंत्रालय, भारत सरकार के दिनांक 28.07.2014 के पत्र की छायाप्रति संलग्न करते हुए लेख है कि उक्त पत्र में वर्णित मानक सुरक्षा मानदण्डों की पालना सुनिश्चित की जाए तथा इसमें किसी भी प्रकार की लापरवाही नहीं बरती जाए।

● **(नथमल डिडेल) आइ.ए.एस.** निदेशक माध्यमिक शिक्षा राजस्थान, बीकानेर।

5. माध्यमिक शिक्षा विभाग के अन्तर्गत अध्ययनरत विद्यार्थियों के लिए भारत/राजस्थान दर्शन शैक्षिक एवं सांस्कृतिक यात्रा का आयोजन करने के संबंध में दिशा-निर्देश।

● कार्यालय निदेशक, माध्यमिक शिक्षा राजस्थान, बीकानेर ● विषयः माध्यमिक शिक्षा विभाग के अन्तर्गत अध्ययनरत विद्यार्थियों के लिए भारत/राजस्थान दर्शन शैक्षिक एवं सांस्कृतिक यात्रा का आयोजन करने के संबंध में निर्देश।

विद्यार्थियो को शैक्षिक ज्ञान के साथ साथ राज्य एवं देश के परिवेश, भौगोलिक स्थिति, प्राकृतिक स्थिति, ऐतिहासिक स्थल एवं सांस्कृतिक स्थलों की व्यावहारिक जानकारी उपलब्ध करवाई जानी भी आवश्यक है। इसके लिए विद्यार्थियों के लिए शैक्षिक भ्रमण कार्यक्रम उपयोगी सिद्ध हो सकते है, इस हेतु योजना निम्नानुसार हैः-

1. उद्देश्य :-

1. देश/राज्य के ऐतिहासिक/सांस्कृतिक/प्राकृतिक धरोहरों से परिचित कराना।
2. स्थापत्य कला की जानकारी कराना।

Rajteachers.in

3. विद्यार्थियों को प्राकृतिक धरा का आनंद उठाने का अवसर प्रदान करना।
4. विद्यार्थियों को सामुदायिक जीवन से जोड़ना।
5. विद्यार्थियों के लिए पुस्तकीय ज्ञान के अतिरिक्त अन्य ज्ञान की वृद्धि करना।

2. चयन प्रक्रिया

(अ) अन्तर जिला शैक्षिक भ्रमण एवं विद्यार्थी योग्यताः–

1. राजकीय विद्यालय में अध्ययनरत कक्षा 9 व 10 के विद्यार्थियों को प्रतिवर्ष विभाग द्वारा निर्धारित समय पर राज्य के अन्य जिले में पाँच दिवसीय राजस्थान दर्शन कार्यक्रम अन्तर्गत शैक्षिक भ्रमण हेतु भेजा जाएगा।

2. योग्यताः–

- राजकीय विद्यालय में अध्ययनरत कक्षा 9 व 10 के विद्यार्थी जिन्होंने गत परीक्षा (कक्षा 8 एवं 9) में न्यूनतम 70 प्रतिशत अंक प्राप्त किए।
- राष्ट्रीय/राज्य स्तर पर सांस्कृतिक, साहित्यिक एवं खेलकूद प्रतियोगिता में भाग लेकर सहभागी/विजेता रहे हों।

(ब) अन्तर राज्य शैक्षिक भ्रमण एवं विद्यार्थी योग्यताः–

1. राजकीय विद्यालय में अध्ययनरत कक्षा 11 एवं 12 के विद्यार्थियों को प्रतिवर्ष विभाग द्वारा निर्धारित समय पर अन्य राज्य में 10 दिवसीय भारत दर्शन कार्यक्रम अन्तर्गत शैक्षिक भ्रमण हेतु भेजा जाएगा।

2. योग्यता

- राजकीय विद्यालयों में अध्ययनरत कक्षा 11 एवं 12 के विद्यार्थी जिन्होंने गत परीक्षा (कक्षा 10 एवं 11) में न्यूनतम 70 प्रतिशत अंक प्राप्त किए हो।
- राष्ट्रीय/राज्य स्तर पर सांस्कृतिक, साहित्यिक एवं खेलकूद प्रतियोगिता में भाग लेकर सहभागी/विजेता रहे हो।

3. विद्यार्थियों एवं अध्यापकों की संख्याः–

अ. अन्तर जिला शैक्षिक भ्रमण–प्रत्येक जिले के 20 विद्यार्थी (कक्षा 9 के 10 एवं कक्षा 10 के 10) एवं 02 अध्यापक।

ब. अन्तर राज्य शैक्षिक भ्रमणः– अधिकतम 66 विद्यार्थी (प्रत्येक जिले से कक्षा 11 का 01 एवं कक्षा 12 का 01 विद्यार्थी) एवं 09 अध्यापक (प्रत्येक मण्डल से 01)

4. मेरिट का निर्धारण :–

अन्तर जिला/अन्तर राज्य शैक्षिक भ्रमण के लिए विद्यार्थियों का चयन पूर्णतः वस्तुस्थिति प्रणाली (Objective Pattern) के आधार पर किया जाएगा। छात्र/छात्रा द्वारा गत वर्ष की परीक्षा में प्राप्तांक प्रतिशत को 80 प्रतिशत श्रेयांस Weightage दिया जाएगा तथा राष्ट्रीय/राज्यस्तर पर खेलकूद/सांस्कृतिक, साहित्यिक प्रतियोगिताओं में सहभागिता (Participation) के लिए खेलकूद के 15 अंक (राष्ट्रीयस्तर 15, राज्यस्तर 10) सांस्कृतिक/साहित्यिक के 05 अंक (राष्ट्रीयस्तर 05, राज्य स्तर 03 अंक) दिए जाएँगे।

5. विद्यार्थियों से आवेदन एवं चयन प्रक्रिया–

अ. अन्तर जिला शैक्षिक भ्रमणः–जिला शिक्षा अधिकारी (माध्यमिक मुख्यालय) द्वारा जिले में संस्थाप्रधान के माध्यम से प्रतिवर्ष विभाग द्वारा निर्धारित समय पर प्राप्त आवेदन पत्रों का अवलोकन कर निर्धारित मेरिट प्रक्रिया के द्वारा शैक्षिक भ्रमण हेतु विद्यार्थियों का चयन किया जाएगा। चयनित विद्यार्थियो को निर्धारित समय पर राज्य के अन्य जिलों के ऐतिहासिक एवं सांस्कृतिक महत्त्व के स्थानों पर पाँच दिवस के लिए भ्रमण पर भेजा जाएगा।

ब. अन्तर राज्य शैक्षिक भ्रमणः– राजकीय विद्यालयों में अध्ययनरत विद्यार्थियों द्वारा अपने संस्थाप्रधान के माध्यम से प्रतिवर्ष जिला शिक्षा अधिकारी (माध्यमिक–मुख्यालय) को आवेदन किया जा सकता है। जिला शिक्षा अधिकारी (माध्यमिक मुख्यालय) द्वारा प्राप्त आवेदन पत्रों की जाँच कर निर्धारित मेरिट प्रक्रिया के द्वारा कक्षा–11 का 01 एवं कक्षा–12 के 01 विद्यार्थी का चयन किया जाएगा तथा चयनित विद्यार्थियों के नाम एवं आवेदन पत्र की प्रति मय पूर्ण विवरण अपने परिक्षेत्र के संयुक्त निदेशक स्कूल शिक्षा को भेजंगे। संयुक्त निदेशक स्कूल शिक्षा द्वारा जिलों से प्राप्त चयनित छात्र/छात्राओं के नाम, आवेदन पत्र की प्रति मय पूर्ण विवरण सहित एवं प्रभारी के रूप में 01 अध्यापक का नाम सयुक्त निदेशक स्कूल शिक्षा जयपुर (नोडल अधिकारी) को भेजेंगे। नोडल अधिकारी द्वारा समस्त जिलों से प्राप्त चयनित विद्यार्थियों को अन्य राज्यों के ऐतिहासिक एवं सांस्कृतिक महत्त्व के स्थानों पर विभाग द्वारा निर्धारित समय पर 10 दिवसीय यात्रा पर भेजा जाएगा। यात्रा दल के साथ एक संस्थाप्रधान (माध्यमिक/उच्च माध्यमिक विद्यालय) को दल प्रभारी के रूप में नोडल अधिकारी द्वारा लगाया जाएगा। नोडल अधिकारी समस्त कार्यक्रम तैयार कर पूर्ण अनुमति निदेशक, माध्यमिक शिक्षा से प्राप्त करेंगे।

6. यात्रा व्यय– विद्यार्थियों की यात्रा का संपूर्ण व्यय राज्य सरकार वहन करेगी। इस हेतु बजट राज्य सरकार द्वारा उपलब्ध करवाया जाएगा। यह बजट संबंधित नोडल अधिकारी को आंवटित किया जाएगा जो संबंधित दिशा निर्देशों एवं वित्तीय नियमों की पालना करते हुए व्यय करेगा। अध्यापक की यात्रा का संपूर्ण व्यय यात्रा भत्ता नियमों के तहत राजकीय मद से देय होगा। यह विद्यार्थियो के व्यय में सम्मिलित नहीं होगा तथा समस्त लेखे विधिवत संधारित करते हुए व्यय विवरण उप निदेशक (योजना) एवं लेखाधिकारी (बजट) माध्यमिक शिक्षा निदेशालय, बीकानेर को नियमानुसार यथासमय प्रस्तुत करेंगें।

यात्रा व्यय विवरण (अन्तर राज्य शैक्षिक भ्रमण)

क्र. सं.	विवरण प्रति विद्यार्थी प्रस्तावित व्यय (10 दिवसीय) रुपये		गणना दर X विद्यार्थी संख्या	अनुमानित राशि (प्रति जिला)
1.	किराया (10 दिवसीय)	-	-	3,00,000/-
2.	भोजन (150 रु. प्रतिदिन)	1500/-	1500X66	99,000/-

Rajteachers.in

3.	अल्पाहार (60 रु. प्रतिदिन)	600/-	600X66	39,600/-
4.	आवास/टेन्ट (100 रु. प्रतिदिन)	1000/-	1000X66	66,000/-
5.	अन्य व्यय (50 रु. प्रतिदिन) योगः-	500/-	500X66 3,600X66	33,000/- 5,37,600/-

यात्रा व्यय विवरण (अन्तर जिला शैक्षिक भ्रमण)

क्र. सं.	विवरण प्रति विद्यार्थी प्रस्तावित व्यय (5 दिवसीय) रुपये		गणना दर X विद्यार्थी संख्या	अनुमानित राशि (प्रति जिला)
1.	किराया (मीनी बस)	2000	2000X20	40,000/-
2.	भोजन (150 रु. प्रतिदिन)	750/-	750X20	15,000/-
3.	अल्पाहार (60 रु. प्रतिदिन)	300/-	300X20	6,000/-
4.	आवास/टेन्ट (100 रु. प्रतिदिन)	500/-	500X20	10,000/-
5.	अन्य व्यय (50 रु. प्रतिदिन)	250/-	250X20	5,000/-
	योगः-		3,800X20	76,000/-

7. **नोडल अधिकारी-**

अ. अन्तर जिला शैक्षिक भ्रमणः जिला शिक्षा अधिकारी (माध्यमिक-मुख्यालय)

ब. अन्तर राज्य शैक्षिक भ्रमणः संयुक्त निदेशक, स्कूल शिक्षा, जयपुर

8. **प्रतिवेदन-** अन्तरजिला एवं अन्तरराज्य दर्शन हेतु शैक्षिक एवं सांस्कृतिक यात्रा में भाग लेने वाले सभी विद्यार्थी एवं अध्यापक विधिवत यात्रा वृतान्त लिखेंगे, इस हेतु उन्हें एक डायरी एवं एक बॉलपैन उपलब्ध कराया जाएगा। सभी अध्यापक संभागियों में से किसी एक को मुख्य प्रतिवेदक यात्रा के प्रबंधक नोडल अधिकारी द्वारा नामित किया जाएगा जो यात्रा उपरान्त सभी यात्रा सहभागी अध्यापकों/विद्यार्थियों से उनकी रिपोर्ट प्राप्त कर समेकित प्रतिवेदन तैयार कर संबंधित नोडल अधिकारी को प्रस्तुत करेंगे।

● **(नथमल डिडेल) आइ.ए.एस.** निदेशक माध्यमिक शिक्षा राजस्थान, बीकानेर।

आवेदन पत्र

राजस्थान दर्शन शैक्षिक एवं सांस्कृतिक यात्रा हेतु छात्र/छात्रा हेतु आवेदन (अन्तर जिला)

1. छात्र/छात्रा का नाम..............................
2. पिता का नाम ....
3. जन्म तिथि ....
4. कक्षा (जिसमें अध्ययनरत है) ....
5. विद्यालय का नाम ....

फोटो

6. विद्यालय का स्कॉलर रजिस्टर क्रमांक ....
7. घर/पत्र व्यवहार का पता ....
8. घर का फोन नम्बर .... मोबाइल नं.......................
9. शैक्षिक सत्र 2018-19 में उत्तीर्ण परीक्षा का वर्णन-

कक्षा	कुल अंक	प्राप्तांक	उत्तीर्ण प्रतिशत
कक्षा 8 (कक्षा 9 में अध्ययनरत)			
कक्षा 9 (कक्षा 10 में अध्ययनरत)			

10. शैक्षिक सत्र 2018-19 में शिक्षा विभाग द्वारा आयोजित खेलकूद गतिविधि में सम्भागित्व

(प्रमाण पत्र की प्रमाणित प्रति संलग्न करें) :-

स्तर	**गतिविधि का नाम**	**आयोजन स्थल**
1. राज्यस्तर		
2. राष्ट्रस्तर		

11. शैक्षिक सत्र 2018-19 में शिक्षा विभाग द्वारा आयोजित साहित्यिक/सांस्कृतिक गतिविधि में सम्भागित्व (प्रमाण पत्र की प्रमाणित प्रति संलग्न करें) :-

स्तर	**गतिविधि का नाम**	**आयोजन स्थल**
1. राज्यस्तर		
2. राष्ट्रस्तर		

आवेदन पत्र के साथ मेरे द्वारा आवश्यक प्रमाणित प्रमाण-पत्र संलग्न कर दिए गए हैं। आवेदन पत्र में अंकित सभी तथ्य पूर्णतया सत्य हैं। मैं अन्तरजिला शैक्षिक भ्रमण हेतु जाना चाहता हूँ/चाहती हूँ।

छात्र/छात्रा के हस्ताक्षर

अभिभावक द्वारा सहमति

मैं (नाम)................................अपने पुत्र/पुत्री (नाम..) को विभाग द्वारा आयोजित अन्तर जिला शैक्षिक भ्रमण पाँच दिवसीय राजस्थान दर्शन यात्रा पर भेजने के लिए अपनी सहमति प्रदान करता हूँ।

हस्ताक्षर

(नाम अभिभावक)

संस्थाप्रधान द्वारा प्रमाणित

आवेदन पत्र में अंकित सभी सूचनाओं एवं प्रलेखों की सत्यता की जाँच स्वयं मेरे द्वारा कर ली गई है। छात्र/छात्रा के अन्तर जिला शैक्षिक भ्रमण के लिए अनुशंषा की जाती है।

हस्ताक्षर संस्थाप्रधान (मय मोहर)

Rajteachers.in

आवेदन पत्र

भारत दर्शन शैक्षिक एवं सांस्कृतिक यात्रा हेतु

छात्र/छात्रा हेतु आवेदन

(अन्तर राज्य)

1. छात्र/छात्रा का नाम.............................
2. पिता का नाम ....
3. जन्म तिथि ....
4. कक्षा (जिसमें अध्ययनरत है) ....

फोटो

5. विद्यालय का नाम ....
6. विद्यालय का स्कॉलर रजिस्टर क्रमांक ....
7. घर/पत्र व्यवहार का पता ....
8. घर का फोन नम्बर .... मोबाइल नं.......................
9. शैक्षिक सत्र 2018-19 में उत्तीर्ण परीक्षा का वर्णन-

कक्षा	कुल अंक	प्राप्तांक	उत्तीर्ण प्रतिशत
कक्षा-10 (कक्षा-11 में अध्ययनरत)			
कक्षा-11 (कक्षा-12 में अध्ययनरत)			

10. शैक्षिक सत्र 2018-19 में शिक्षा विभाग द्वारा आयोजित खेलकूद गतिविधि में सम्भागित्व
(प्रमाण पत्र की प्रमाणित प्रति संलग्न करें) :-

स्तर	गतिविधि का नाम	आयोजन स्थल
1. राज्यस्तर		
2. राष्ट्रस्तर		

11. शैक्षिक सत्र 2018-19 में शिक्षा विभाग द्वारा आयोजित साहित्यिक सांस्कृतिक गतिविधि में सम्भागित्व (प्रमाण पत्र की प्रमाणित प्रति संलग्न करें) :-

स्तर	गतिविधि का नाम	आयोजन स्थल
1. राज्यस्तर		
2. राष्ट्रस्तर		

आवेदन पत्र के साथ मेरे द्वारा आवश्यक प्रमाणित प्रमाण पत्र संलग्न कर दिए गए हैं। आवेदन पत्र में अंकित सभी तथ्य पूर्णतया सत्य हैं। मैं अन्तर जिला शैक्षिक भ्रमण हेतु जाना चाहता/चाहती हूँ।

छात्र/छात्रा के हस्ताक्षर

अभिभावक द्वारा सहमति

मैं (नाम)................................अपने पुत्र/पुत्री (नाम.......................................) को विभाग द्वारा आयोजित अन्तर राज्य शैक्षिक भ्रमण दस दिवसीय यात्रा पर भेजने के लिए अपनी सहमति प्रदान करता हूँ।

हस्ताक्षर

(नाम अभिभावक)

संस्थाप्रधान द्वारा प्रमाणित

आवेदन पत्र में अंकित सभी सूचनाओं एवं प्रलेखों की सत्यता की जाँच स्वयं मेरे द्वारा कर ली गई है। छात्र/छात्रा के अन्तर जिला शैक्षिक भ्रमण के लिए अनुशंषा की जाती हैं।

हस्ताक्षर संस्थाप्रधान (मय मोहर)

मानव संसाधन विकास मंत्रालय, भारत सरकार

स्कूल शिक्षा और साक्षरता विभाग

शास्त्री भवन, नई दिल्ली-110115

● कार्यालय प्रमुख शासन सचिव स्कूल शिक्षा विभाग शासन सचिवालय, जयपुर।

Dear

1. Recent tragedy involving students on study tour has once again underlined the need for putting in place s set of standard safety measures by the institutions that undertake such tours.
2. States have been organising study tours for its students and teachers in schools under various schemes of the States as well as Government of India such as the SSA, RMSA etc. There is a need to ensure basic safety measures before a school embarke on such tours.
3. States are requested to kundly issue appropriate guidelines so that necessary safety measures are in place across all schools. Please find enclosed a set of recommendations on the subject that you may like to consider while formulating the state guidelines.

● Yours Sincerely **(Radha Chauhan)**

Standard safety measures

i. The Head of the Institution should ensure that the tour undertaken is required for the benefit of students and is related to the curriculum of the course in which such students are enrolled.

ii. The Head of the Institution should ensure issuing security i-cards to all such students and maintain a separate data base of the personal details like guardian/local guardian, home address, mobile, email etc. of such students and the same is carried by the Student on his person.

iii. The Head of the Institution should ensure that written permission) of one of the parents or the local guardian is submitted on behalf of every such student wanting to participate in an educational tour.

iv. The Head of the Institution should ensure that there is a senior teacher accompanying the students on such an educational tour. Further, a senior lady teacher should accompany if there are girl students Participating in the educational tour.

v. The Head of the Institution should ensure that prior

Rajteachers.in

permission of the organisation is obtained in advance such educational tours are undertaken.

vi. If the tours is undertaken to public places, dam, cities, power plants, sea beaches etc., a written communication must be made to the District magistrate of concerned authorities.

vii. If the educational tour has more than 10 particiapants it is necessary to hire a local tour operator who is well aware of the local conditions and can advise accordingly.

viii. The Head of the Institution should ensure that an undertaking is taken from every participating student that they would abide by all the rules and also that they have submitted the permission by their parents of local guardian before they participate in the educational tour.

ix. The Head of the Institution should also certify in the form of an undertaking that the institute will provide all necessary help in case of emergency or otherwise to all such students who are part of the educational tour.

6. भूतपूर्व सैनिकों को राज्य की सेवाओं में एक बार से अधिक (दोहरा) लाभ देने के संबंध में।

● कार्यालय निदेशक, माध्यमिक शिक्षा राजस्थान, बीकानेर ● क्रमांकः शिविरा/माध्य/अभिलेख/5916/2019 दिनांकः 04.09.2019 ● कार्मिक (क-2) विभाग क्रमांक : प. 5(18) कार्मिक/क-2/84 पार्ट जयपुर, दिनांकः 22.08.2019 ● 1. समस्त अति. मुख्य सचिव/प्रमुख शासन सचिव/शासन सचिव/विशिष्ठ शासन सचिव। 2. समस्त विभागाध्यक्ष (सम्भागीय आयुक्त एवं जिला कलेक्टर्स) सहित। ● विषयः भूतपूर्व सैनिकों को राज्य की सेवाओं में एक बार से अधिक (दोहरा) लाभ देने के संबंध में। ● परिपत्र ।

राजस्थान सिविल सेवा (भूतपूर्व सैनिकों का आमेलन) नियम, 1988 के तहत राज्य के अधीन विभिन्न सेवाओं में भूतपूर्व सैनिकों को आरक्षण दिए जाने का प्रावधान विहित है किन्तु उक्त आरक्षण का पुनः लाभ नहीं दिए जाने के संबंध में कार्मिक विभाग के परिपत्र दिनांक 16.08.2016 के निर्देश प्रदान किए गए हैं।

परिपत्र दिनांक 16.08.2016 एवं कार्मिक विभाग की अधिसूचना दिनांक 17.04.2018 में विहित प्रावधानों के मद्देनजर राज्य सरकार के ध्यान में आया है कि किन्हीं नियमों में सीधी भर्ती के ऐसे पदों पर जहाँ भर्ती के समय उसके निचले पद पर किए गए कार्यो का अनुभव निर्धारित किया हुआ है, में भूतपूर्व सैनिकों को परिपत्र दिनांक 16.08.2016 में विहित प्रावधान किसी भूतपूर्व सैनिक द्वारा राज्य के अधीन किसी भी लोक सेवा में नियोजन स्वीकार कर लेने के बाद वह भूतपूर्व सैनिक के रूप में अपनी प्रास्थिति (Status) खो देगा और वह केवल लोक सेवक (Civil employee) के रूप में ही माना जाएगा, के फलस्वरूप सीधी भर्ती में आरक्षण का लाभ भूतपूर्व सैनिकों को प्राप्त नहीं हो सकेगा। इससे न केवल राज्य सरकार द्वारा सभी पदों की भर्तियों में भूतपूर्व सैनिकों को आरक्षण देने का प्रावधान लागू करने में समस्या आ रही है, बल्कि सीधी भर्ती में भूतपूर्व सैनिकों हेतु आरक्षित सभी पद भी रिक्त रहने की स्थिति उत्पन्न हो सकती है।

अतः कार्मिक विभाग के परिपत्र दिनांक 16.08.2016 के अतिक्रमण में भूतपूर्व सैनिकों को राज्य की सेवाओं में एक बार से अधिक (दोहरा) लाभ देने के संबंध में निम्नानुसार निर्देश प्रदान किए जाते हैं:-

1. किसी भूतपूर्व सैनिक द्वारा राज्य के अधीन किसी भी लोक सेवा में नियोजन स्वीकार कर लेने के बाद वह भूतपूर्व सैनिक के रूप में अपनी प्रास्थिति (Status) खो देगा और वह केवल लोकसेवक (Civil employee) के रूप में ही माना जाएगा। अर्थात् भूतपूर्व सैनिक के रूप में देय आरक्षण का लाभ प्राप्त करने के उपरान्त लोक सेवा के किसी पद पर पुनर्नियोजन स्वीकार करते ही उसका भूतपूर्व सैनिक के रूप में कोई भी लाभ प्राप्त करने का अधिकार सामान्यतः समाप्त समझा जाएगा।

   परन्तु सीधी भर्ती के ऐसे पदों के संबंध में, जहाँ नियमों में निम्न पद का अनुभव भी निर्धारित किया गया है, किसी भूतपूर्व सैनिक द्वारा निम्न पद पर नियोजित होने के कारण, भूतपूर्व सैनिक के रूप में आरक्षण का अधिकार समाप्त हुआ नहीं समझा जाएगा।

2. 'भूतपूर्व सैनिक' अन्य लोक सेवकों को सामान्य स्थिति में अनुज्ञात आयु आदि की शिथिलता जैसे लाभ प्राप्त करने का अधिकारी माना जाएगा अर्थात राजस्थान सिविल सेवा (भूतपूर्व सैनिकों का आमेलन) नियम, 1988 यथासंशोधित के प्रावधानों के होते हुए भी किसी भर्ती से संबंधित सेवा नियमों में आयु संबंधी जो शिथिलता अन्य लोक सेवकों/अभ्यर्थियों को देय है, वह भूतपूर्व सैनिक को भी देय होगी अर्थात आयु संबंधी शिथिलता के संबंध में दोनों नियमों में जो भी हितकर प्रावधान है, उसका लाभ भूतपूर्व सैनिकों को मिलेगा।

3. यदि कोई भूतपूर्व सैनिक किसी निजी कम्पनी में नियोजन प्राप्त करता है अथवा किसी स्वायत्तशासी संस्था, सार्वजनिक उपक्रम या राजकीय कार्यालय में आकस्मिक/संविदा/अस्थाई/तदर्थ आधार पर नियोजन प्राप्त करता है तो उसे इस प्रयोजन हेतु लोक सेवक के रूप में एक बार आरक्षण का लाभ प्राप्त किया हुआ नहीं माना जाएगा, क्योंकि ऐसी सेवा से कर्मचारी को कभी हटाया जा सकता है।

4. यदि कोई भूतपूर्व सैनिक, देय आरक्षण का लाभ प्राप्त कर, किसी एक लोक सेवा में पुनर्नियोजन स्वीकार करता है और उससे पूर्व उसने अन्य किसी पद की भर्ती हेतु भी आवेदन प्रस्तुत किया हुआ है, तो उसे अपने सेवा नियंत्रक अधिकारी को ऐसे किए हुए आवेदनों की दिनांक वार पूर्ण सूचना/स्व घोषणा कार्यग्रहण के साथ ही प्रस्तुत कर देने की स्थिति में, ऐसे कार्यग्रहण से पूर्व किए हुए आवेदनों के संबंध में भी भूतपूर्व सैनिक के रूप में आरक्षण का लाभ देय होगा।

अतः समस्त नियुक्ति प्राधिकारियों को निर्देशित किया जाता है कि राज्य सेवाओं में भूतपूर्व सैनिकों को आरक्षण दिए जाने के संबंध में उक्त निर्देशों की कठोरता से पालना की जावे।

● **(रोली सिंह)**, प्रमुख शासन सचिव।

Rajteachers.in

7. विद्यालय प्रसारण कार्यक्रम की प्रभावी क्रियान्विति बाबत।

● कार्यालय निदेशक, शैक्षिक प्रौद्योगिकी विभाग राजस्थान, अजमेर (प्रभाग-4, राजस्थान राज्य शैक्षिक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण परिषद्, उदयपुर) ● समस्त संस्था प्रधान रा.प्रा./उ.प्रा./मा./उ.मा.वि. ● विषयः विद्यालय प्रसारण कार्यक्रम की प्रभावी क्रियान्विति बाबत। ● परिपत्र ।

शिक्षा विभाग के शैक्षिक प्रौद्योगिकी विभाग राजस्थान अजमेर एवं आकाशवाणी के सहयोग से विगत कई वर्षों से विद्यार्थियों, अध्यापक, अभिभावक एवं अन्य श्रोतागण के हितार्थ दोपहर 12.40 से 1.00 बजे तक प्रत्येक विद्यालय कार्य दिवस पर विद्यालय प्रसारण कार्यक्रम संचालित किया जाता है। जिसे रेडियो/टू इन वन के माध्यम से आकाशवाणी के जयपुर अजमेर (603 Khz) जोधपुर (531 Khz), उदयपुर (1125 Khz) व बीकानेर (1395 Khz) केन्द्रों पर सुना जा सकता है। इस सत्र हेतु विद्यालय कार्यक्रम का प्रारंभ दिनांक- 01.07.2019 से माननीय शिक्षा राज्यमंत्री श्री गोविन्द सिंह जी डोटासरा के प्रेरणास्पद संदेश से हो चुका है।

कार्यक्रम के तहत तीन प्रकार के पाठों का प्रसारण किया जाता है-

1. **पाठ्यक्रम आधारित पाठ-** इसके तहत राजकीय विद्यालयों में पढ़ाए जा रहे कक्षा-3 से 12 तक के विभिन्न कक्षा, विषय एवं पाठों का चयन कर पाठों का आलेखन व रिकॉर्डिंग करवाकर प्रसारण किया जाता है।
2. **गैर पाठ्यक्रम आधारित पाठ-** इसके तहत शिविरा पंचांग आधारित उत्सव, जयन्तियाँ, त्यौहार, राज्य सरकार की कल्याणकारी योजनाएँ, शिक्षा विभाग की विभिन्न योजनाएँ आदि पर आधारित जानकारी प्रसारित की जाती है।
3. **परीक्षामाला-** इसके तहत कक्षा-5, 8, 10 व 12 के विभिन्न चयनित विषयों के संबंध में परीक्षा तैयारी से संबंधित जानकारी पर आधारित पाठ आलेखित व रिकॉर्डिंग करवाकर प्रसारित किया जाता है।

इस प्रकार वर्ष पर्यन्त कार्यक्रमानुसार प्रसारण किया जाता है जिसकी सूचना वार्षिक शिविरा पंचांग में भी प्रकाशित की जाती है एवं प्रतिदिन का प्रसारण कार्यक्रम प्रत्येक माह की प्रकाशित होने वाली शिविरा पत्रिका में प्रकाशित होता है। इस कार्यक्रम की उपयोगिता इसे सुनने-सुनाने से ही है अतः सभी संस्थाप्रधान अपने विद्यालय में कार्यक्रम को अनिवार्यतः सुनवाए जाने की व्यवस्था सुनिश्चित कराएँ।

समस्त अधिकारी भी अपने निरीक्षण कार्यक्रम में इस कार्यक्रम की भी जानकारी कर कार्यक्रम की प्रभावी क्रियान्विति एवं इसे उपयोगी बनाने में अपना योगदान सुनिश्चित करें। कार्यक्रम संबंधित रिकॉर्ड संधारण एवं प्रतिक्रियाएँ प्रेषित किए जाने हेतु आवश्यक प्रपत्र भी शीघ्र ही प्रेषित किए जा रहे हैं। जिनमें उल्लेखित निर्देशानुसार सभी संस्थाप्रधान/प्रभारी जानकारी/प्रतिक्रियाएँ/प्रपत्र अनिवार्यतः समय पर शैक्षिक प्रौद्योगिकी विभाग, राजस्थान, अजमेर को प्रेषित किया जाना सुनिश्चित करें।

● **(सुश्री कमलेश यादव)**, प्रभारी अधिकारी, शैक्षिक प्रौद्योगिकी विभाग राजस्थान, अजमेर।

8. बेशी/अप्रचलित/अनुपयोगी सामान निस्तारण अभियान।

● कार्यालय निदेशक, प्रारम्भिक शिक्षा राजस्थान, बीकानेर ● क्रमांक : शिविरा/प्रारं/नकारा सामान/19-20/113 दिनांकः 05.09.2019 ● विषयः बेशी/अप्रचलित/ अनुपयोगी सामान निस्तारण अभियान। प्रसंगः राज्य सरकार के आदेश क्रमांक प.6 (1) वित्त/साविलेनि/2005 पार्ट-1 जयपुर दिनांक 05.09.2019

राज्य सरकार के प्रासंगिक आदेश द्वारा बेशी/अप्रचलित/ अनुपयोगी सामान निस्तारण अभियान के रूप में करने एवं अभियान के दौरान सामान्य वित्तीय एवं लेखा नियम भाग-।। एवं भाग-।।। के नियमों में शिथिलन प्रदान किया गया है। राज्य सरकार के प्रासंगिक आदेश की पालना में विभाग स्तर पर बेशी/अप्रचलित/अनुपयोगी सामान का समयबद्ध अभियान के रूप में निस्तारण का निर्णय लिया गया है। अभियान की मॉनिटरिंग के लिए निदेशालय प्रारंभिक शिक्षा स्तर पर नोडल अधिकारी नियुक्त किया जाता हैः

1.	श्री विनीत सहारण	लेखाधिकारी
2.	श्री विनोद जोशी	सहायक लेखाधिकारी-।।
3.	वरिष्ठतम लेखाकर्मी, जिशिअ. प्रा. मु. समस्त	सहायक नोडल अधिकारी (जिला स्तर पर)

अभियान के निम्न चरण उनके नाम के सामने अंकित तिथि तक पूर्ण करने होंगे।

क्र.सं.	चरण	दिनांक
1.	सामान्य वित्तीय एवं लेखा नियम भाग-।। के नियम 18 के अंतर्गत सामान के निरीक्षण/सर्वेक्षण के लिए समिति गठित करना।	27.09.19
2.	सामान्य वित्तीय एवं लेखा नियम भाग-।। के नियम 18 के अंतर्गत गठित समिति से प्रपत्र एस.आर. 5 व 6 में मय हस्ताक्षर रिपोर्ट प्राप्त करना।	09.10.19
3.	निरीक्षण/सर्वेक्षण समिति की रिपोर्ट के आधार पर सामान्य वित्तीय एवं लेखा नियम भाग-।।। के आइटम संख्या 11 के अंतर्गत बेशी/अप्रचलित/अनुपयोगी घोषित करना।	18.10.19
4.	बेशी/अप्रचलित/अनुपयोगी घोषित सामान जो नीलामी द्वारा निस्तारित किया जाना है की नीलामी हेतु सामान्य वित्तीय एवं लेखा नियम पार्ट-।। के नियम 22 के अन्तर्गत नीलामी समिति का गठन करना।	25.10.19
5.	नीलामी हेतु गठित समिति की सहमति के आधार नीलामी सूचना जारी करना एवं सामान्य वित्तीय एवं लेखा नियम पार्ट-।। के नियम 25 के अन्तर्गत प्रचार -प्रसार करना।	31.10.19
6.	नीलामी कार्यवाही सम्पन्न करना।	नीलामी सूचना में निर्धारित तिथि को

Rajteachers.in

7.	नीलामी से प्राप्त राशि चालान जमा करना।	नीलामी से प्राप्त राशि को प्राप्त होने के दिवस या अगले कार्य दिवस।
8.	नीलामी से आय प्राप्ति की सूचना निम्न प्रपत्र में पृथक से तैयार कर देवें-	05.11.19

क्र. सं	कार्यालय का नाम	गत माह तक निस्तारित सामान का		इस माह में निस्तारित सामान का		कुल योग		राजकोष में जमा कराने के चालान नं. व दिनांक
		पुस्तक मूल्य	नीलामी से प्राप्त आय	पुस्तक मूल्य	नीलामी से प्राप्त आय	पुस्तक मूल्य	नीलामी से प्राप्त आय	
1	2	3	4	5	6	7(3+5)	8(4+6)	9

अभियान के दौरान कार्यालय में लेखा कार्मिक का पद रिक्त है तो लेखा कार्मिक की व्यवस्था संबंधित संयुक्त निदेशक, स्कूल शिक्षा अपने कार्यालय अथवा अधीनस्थ निकटतम कार्यालय से करेंगे।

सहायक नोडल अधिकारी उक्तानुसार निर्धारित प्रत्येक चरण की प्रगति की सूचना निर्धारित तिथि के आगामी दो दिवस में जिला शिक्षा अधिकारी के माध्यम से भिजवान सुनिश्चित करेंगे।

इस आदेश की प्रति मुख्य ब्लॉक शिक्षा अधिकारी कार्यालय को आप अपने स्तर पर भिजवाने की व्यवस्था करेंगे।

बेशी/अप्रचलित/अनुपयोगी सामान निस्तारण अभियान में नीलामी से प्राप्त आय निम्न मद में चालान द्वारा जमा करावे- 0202-शिक्षा, खेलकूद, कला एवं संस्कृति, 01- सामान्य शिक्षा, 101-प्रारम्भिक शिक्षा, 02- अन्य प्राप्तियाँ, 01- विविध।

बेशी/अप्रचलित/अनुपयोगी सामान निस्तारण अभियान के प्रति उदासीनता को राज्य सरकार के आदेशों की जानबूझकर अवहेलना एवं विभाग के कार्यकलापों के प्रति उदासीनता मानते हुए कार्यवाही की जावेगी। इसे गंभीरता से लेवें।

● संलग्नः प्रासंगिक आदेश।

● **मुख्य लेखाधिकारी,** प्रारम्भिक शिक्षा विभाग एवं पंराज, (प्रा.शि.) विभाग राजस्थान, बीकानेर।

9. अनुपयोगी/नाकारा स्टोर्स निस्तारण अभियान।

●राजस्थान सरकार वित्त विभाग (सामान्य वित्तीय एवं लेखा नियम अनुभाग)● क्रमांक : प.6(1)वित्त/साविलेनि/2005 पार्ट-। जयपुर ● दिनांक : 05.09.2019 ● परिपत्र ● विषय : अनुपयोगी/नाकारा स्टोर्स निस्तारण अभियान।

राजकीय विभागों में उपलब्ध बेशी/अनुपयोगी/अप्रचलित सामान का नियमित वार्षिक निस्तारण किया जाना चाहिए। 'स्वच्छ कार्यालय' के लिए भी ऐसी सामग्री का त्वरित निस्तारण अपेक्षित है। राज्य सरकार द्वारा समस्त राजकीय विभागों/स्वायत्तशासी संस्थाओं/कंपनियों/बोर्ड्स आदि में अनुपयोगी/नाकारा स्टोर्स के निस्तारण का अभियान पुनः चलाए जाने का निर्णय लिया गया है।

सभी प्रशासनिक विभाग यह सुनिश्चित करेंगे कि उनके अधीनस्थ सभी विभागाध्यक्ष/कार्यालयाध्यक्ष इस अवधि में समस्त नाकारा सामग्री/वाहनों आदि का नियमानुसार निस्तारण अवश्य कर दें।

अनुपयोगी सामग्री के निस्तारण हेतु सामान्य वित्तीय एवं लेखा भाग-II के नियम 16 से 27 में प्रक्रिया एवं सामान्य वित्तीय एवं लेखा नियम भाग-III के भाग-I के आईटम 11 में वित्तीय शक्तियां उल्लिखित हैं। अभियान अवधि के लिए इन नियमों में निम्नानुसार शिथिलन प्रदान किया जाता हैः

GF&AR Volume-I Part-II

Rule 18 : Committee for Inspection/Survey:

(i) The surplus, obsolete and unserviceable articles shall be inspected by a committee consisting of senior Gazetted Officer and A.O./A.A.O./Accountant/Tehsil Revenue Accountant/Junior Accountant as the case may be, A certificate for such Inspection shall be recorded by the committee and a list of articles submitted.

(ii) In case of article valuing Rs. 10.00 lacs and above, the committee for inspection shall consist of a senior Gazetted Officer. F.A./CAO/Sr.A.O./A.O./A.D.O./Accountant and a technical officer having knowledge of such articles.

Rule 22 : The Committees for disposal shall comprise of :

(1) For Articles, other than waste Paper :

A For stores of the value of Rs. 10 lacs and above:

(i) Head of Department or Senior Most Officer Nominated by the Head of Department

(ii) Head of Office Concerned

(iii) Officer nominated by senior Most Accounts Officer of the Department, which should be not below the rank of AAO-II, However, in cases of value of stores above 15 lacs, it should not below the rank of AAO-I,

B. For stores of the value of Rs. 2 lac and above but below Rs. 10 Lacs.

(i) Head of Office Concerned

(ii) AO/AAO-I/AAO-II of the office of the Head of Office Regional Office/HoD

(iii) AAO-II/AAO-I/ Accountants nominated by Treasury Officer/Sub-Treasury Officer

C. For stores of the Value upto Rs. 2 lac.

(i) Head of Office/Drawing and Disbursing Officer

(ii) AAO-I/AAO-II/ Junior Accountant of the office of Head of Office/Regional Office/HoD

(iii) AAO-I/AAO-II/ Jr. Accountant nominated by T.O./STO.

GF&AR Volume-I Part-III (Delegation of Financial Powers) part-I Item 11(c) Vehicles :

Where the vehicle has not covered the prescribed minimum road kilometers or prescribed minimum years, the norms are now relaxed that if any one of these two norms (minimum kms. and minimum years) is not being fulfilled, the vehicle may be declared condemned by the Head of Department on the recommendation of the committee on the ground of vehicle being uneconomical to run. Head of Department : Full powers on the recommendation of committee.

अन्य महत्वपूर्ण निर्देश :

1. वाहनों एवं उनके पार्ट्स आदि को जिलेवार ही नाकारा घोषित करते

Rajteachers.in

हुए नियमानुसार जिलास्तर पर ही नीलामी कार्यवाही की जावे। इस बाबत् सामान्य वित्तीय एवं लेखा नियम भाग-II के नियम 22 में दिनांक 22.2.2016 को संशोधन किया जा चुका है।

2. मोटर वाहन नियमानुसार नीलाम करने के पश्चात् replacement में नया वाहन लेने की अनुमति वित्त विभाग/सामान्य प्रशासन विभाग से नियमानुसार दी जा सकेगी।
3. नियमों में दिनांक 22.02.2016 को हुए संशोधन उपरांत टाइपराइटर्स को भी अन्य सामान के साथ नीलाम किया जा सकता है।
4. इस अभियान की मॉनीटरिंग के लिए प्रत्येक विभागाध्यक्ष अपने यहाँ पदस्थापित वित्तीय सलाहकार/वरिष्ठतम लेखाधिकारी को 'नॉडल ऑफिसर' नियुक्त करेंगे। ऐसे आदेश की प्रति प्रशासनिक विभाग एवं वित्त (जीएण्डटी) विभाग को भेजी जाएगी।
5. अभियान अवधि में नीलामी से प्राप्त राजस्व की सूचना सभी कार्यालय अपने विभागाध्यक्ष को प्रतिमाह भेजेंगे। समस्त विभागाध्यक्ष यह सूचना संकलित कर निदेशक, निरीक्षण विभाग को मासिक रूप से प्रेषित करेंगे।
6. निदेशक, निरीक्षण विभाग सभी विभागाध्यक्षों से अभियान अवधि में प्राप्त नीलामी से आय की मासिक सूचना संकलित कर वित्त (जीएण्डटी) विभाग को भेजेंगे।
7. नीलामी से प्राप्त राजस्व का 50 प्रतिशत तक अतिरिक्त बजट आवंटन कार्यालयों/विभागों के modernisation, furniture, equipemtns आदि के लिए आवश्यकतानुसार किया जा सकेगा। इसके लिए प्रस्ताव वित्त (व्यत) विभाग को भिजाए जाएँ।
8. वित्तीय सलाहकार (नॉडल ऑफिसर) यह सुनिश्चित करेंगे कि विभाग के अधीन प्रत्येक कार्यालय में नाकरा सामग्री का निस्तारण इसी अभियान अवधि में हो, इसके लिए अभियान के प्रारंभ में ही वे अधीनस्थ कार्यालयों के संबंधित कार्मिकों की orientation meeting कर उन्हें नियमों/प्रक्रिया की पूर्ण जानकारी देंगे। नॉडल ऑफिसर का दायित्व होगा कि वे अधीनस्थ कार्यालयों की समस्याओं/शंकाओ का त्वरित समाधान करे और आवश्यकता होने पर वित्त विभाग से परामर्श प्राप्त करें। वित्तीय सलाहकार अतिरिक्त मुख्य सचिव, वित्त को लिखे जाने वाले अर्द्धशासकीय पत्र में भी इस अभियान की प्रगति इंगित करेंगे।
9. सभी जिला कलक्टर जिले के राजस्व/जिलास्तरीय अधिकारियों की मासिक समीक्षा बैठक में एक एजेंडा 'नाकारा सामग्री निस्तारण अभियान' बाबत् भी रखेंगे एवं प्रगति की समीक्षा करेंगे। इस बाबत् वे आवश्यकतानुसार जिला कोषाधिकारी का सहयोग ले सकेंगे।
10. विभागाध्यक्षों के यहाँ आंतरिक जाँच दलों एवं निरीक्षण विभाग के जाँच दलों (Audit Parties) का दायित्व होगा कि वे अपनी रिपोर्ट में इस अभियान अवधि में हुई नाकारा सामग्री निस्तारण एवं प्राप्त राजस्व का विशेष उल्लेख करें।
11. समस्त कोषाधिकारी/उपकोषाधिकारी सामान्य वित्तीय एवं लेखा नियम भाग-II के नियम 22 के क्रम में नीलामी समितियों में प्रतिनिधित्व हेतु आग्रह प्राप्त होने पर अविलंब आवश्यक कार्यवाही करेंगे। विभागीय अधिकारियों को नीलामी नियमों-प्रक्रिया बाबत् कोई समस्या/शंका हो तो उस बाबत् आवश्यक परामर्श वे कोषाधिकारी/उपकोषाधिकारी से भी प्राप्त कर सकते हैं।
12. नाकारा सामग्री निस्तारण संबंधी अद्यतन नियम (साविलेनि भाग-II नियम 16 से 27 एवं साविलेनि भाग-III के भाग-I के आइटम संख्या 11) एवं संदर्भित परिपत्र आदि वित्त विभाग की वेबसाईट पर उपलब्ध है।
13. सभी प्रशासनिक सचिवगण से अनुरोध है कि इस अभियान के सफल संचालन हेतु अपने अधीन विभागों/कंपनियों आदि सभी को उचित निर्देश प्रदान करते हुए उसकी प्रति वित्त (जीएण्डटी) विभाग को भी प्रेषित करावें।

अभियान अवधि 31 मार्च 2020 तक रहेगी।

●**निरंजन आर्य,** अतिरिक्त मुख्य सचिव, वित्त।

आवश्यक सूचना

- **'शिविरा' मासिक पत्रिका में रचना भेजने वाले अपनी रचना के साथ व्यक्तिगत परिचय यथा- नाम, पता, मोबाइल नंबर, बैंक का नाम, शाखा, खाता संख्या, आईएफएससी. नंबर एवं बैंक डायरी के प्रथम पृष्ठ की स्पष्ट छायाप्रति अवश्य संलग्न करके भिजवाएँ।**
- **कुछ रचनाकार एकाधिक रचनाएँ एक साथ भेजने पर एक रचना के साथ ही उक्त सूचनाएँ संलग्न कर दायित्वपूर्ति समझ लेते हैं। अतः अपनी प्रत्येक रचना के साथ अलग से पृष्ठ लगाकर प्रपत्रानुसार अपना विवरण अवश्य भेजें। इसके अभाव में रचना के छपने एवं उसके मानदेय भुगतान में असुविधा होती है।**
- **कतिपय रचनाकार अपने एकाधिक बैंक खाता लिखकर भिजवा देते हैं और उक्त खाते का उपयोग समय-समय पर नहीं करने के कारण वह बंद भी हो चुका होता है। परिणामस्वरूप उक्त मानदेय खाते में जमा नहीं हो पाता। जिसकी शिकायत प्राप्त होती है। किसी रचनाकार के एकाधिक खाते हैं तो रचनाकार अपने SBI बैंक खाते को प्राथमिकता देकर अद्यतन व्यक्तिगत जानकारी उपर्युक्तानुसार प्रत्येक रचना के साथ अलग-अलग संलग्न करें।**

-वरिष्ठ संपादक

Rajteachers.in

माह : अक्टूबर, 2019	विद्यालय प्रसारण कार्यक्रम	प्रसारण समय : दोपहर 12.40 से 1.00 बजे तक

दिनांक	वार	आकाशवाणी केन्द्र	कक्षा	विषय	पाठ क्रमांक	पाठ का नाम
01.10.2019	मंगलवार	उदयपुर	6	हिन्दी (अनिवार्य)	6	मिसाइल मैन
02.10.2019	बुधवार	जोधपुर	गैरपाठयक्रम	महात्मा गांधी जयंती व शास्त्री जयंती (उत्सव)		
03.10.2019	गुरुवार	बीकानेर	10	संस्कृत	12	मरु सौंदर्यम्
04.10.2019	शुक्रवार	जयपुर	8	हिन्दी	2	सुभागी
05.10.2019	शनिवार	उदयपुर	3	पर्यावरण अध्ययन	8	जल ही जीवन का आधार
07.10.2019	सोमवार	जोधपुर	6	हिन्दी	5	सहेली (कहानी)
09.10.2019	बुधवार	बीकानेर	9	विज्ञान	13	पर्यावरण
10.10.2019	गुरुवार	जयपुर	8	सामाजिक विज्ञान	3	जल संसाधन
11.10.2019	शुक्रवार	उदयपुर	4	पर्यावरण अध्ययन	9	पानी रे अजब तेरी कहानी
12.10.2019	शनिवार	जोधपुर	4	हिन्दी	5	दशहरा (निबंध)
14.10.2019	सोमवार	बीकानेर	6	हिन्दी	13	धरती धोरा री (कविता)
15.09.2019	मंगलवार	जयपुर	10	विज्ञान	4	प्रतिरक्षा एवं रक्त समूह
16.10.2019	बुधवार	उदयपुर	गैरपाठयक्रम	संयुक्त राष्ट्र संघ दिवस (उत्सव 24 अक्टूबर को)		
17.09.2019 से 19.10.2019 द्वितीय परख						
21.10.2019	सोमवार	जोधपुर	गैरपाठयक्रम	इंदिरा गाधी पुण्य तिथि (संकल्प दिवस उत्सव 31 अक्टूबर को)		
22.10.2019 से 02.11.2019 तक मध्यावधि अवकाश						

शिविरा पञ्चाङ्ग

अक्टूबर-2019					
रवि		6	13	20	27
सोम		7	14	21	28
मंगल	1	8	15	22	29
बुध	2	9	16	23	30
गुरु	3	10	17	24	31
शुक्र	4	11	18	25	
शनि	5	12	19	26	

कार्य दिवस-17, रविवार-04, अवकाश-10, उत्सव-03

1 अक्टूबर-विद्यालय समय परिवर्तन-1. एक पारी विद्यालय- प्रात: 10:00 से 04:00 बजे तक। 2. दो पारी विद्यालय-प्रात: 07:30 से सायं 05:30 बजे तक (प्रत्येक पारी 5:00 घंटे)। **1 से 4 अक्टूबर**-तृतीय समूह की जिला स्तरीय विद्यालयी खेलकूद प्रतियोगिताओं (एथलेटिक्स) का आयोजन। **2 अक्टूबर**-महात्मा गाँधी जयंती व लाल बहादुर शास्त्री जयंती (उत्सव)। **4 से 5 अक्टूबर**-जिला स्तरीय जीवन कौशल विकास बाल मेला (RSCERT)। **5 अक्टूबर**-सामुदायिक बाल सभा आयोजन (विद्यालय परिसर में)। **6 अक्टूबर**-दुर्गाष्टमी (अवकाश)। **8 अक्टूबर**-विजयादशमी (अवकाश)। **9 से 11 अक्टूबर**-जिला स्तरीय विज्ञान, गणित एवं पर्यावरण प्रदर्शनी (RSCERT)। **11 से 16 अक्टूबर**-तृतीय समूह की राज्य स्तरीय विद्यालयी खेलकूद प्रतियोगिताओं (एथलेटिक्स) का आयोजन। **17 से 19 अक्टूबर**-द्वितीय परख। **19 अक्टूबर**-सामुदायिक बाल सभा का आयोजन-सार्वजनिक स्थल/चौपाल पर आयोज्य। **22 अक्टूबर से 02 नवम्बर**-मध्यावधि अवकाश। **24 अक्टूबर**-संयुक्त राष्ट्र संघ दिवस (उत्सव)। **27 अक्टूबर**-दीपावली (अवकाश)। **28 अक्टूबर**- गोवर्धन पूजा (अवकाश)। **29 अक्टूबर**-भैया दूज (अवकाश)। **31 अक्टूबर**-सरदार वल्लभ भाई पटेल जयन्ती (राष्ट्रीय एकता दिवस) इन्दिरा गाँधी पुण्य तिथि (संकल्प दिवस)-उत्सव।

नोट-माध्यमिक शिक्षा बोर्ड, राजस्थान, अजमेर द्वारा शिक्षकों के व्यावसायिक कौशल एवं उन्नयन प्रतियोगिता का जिला स्तर पर आयोजन।

● प्रत्येक सोमवार-WIFS नीली गोली (कक्षा 6-12), WIFS पिंक गोली (कक्षा 1-5)।

Rajteachers.in

छात्र जीवन में समय बोध

❒ वृद्धि चन्द गोठवाल

संयोग से एक ऐसे विद्यार्थी से भेंट हुई जो परीक्षा देकर आ रहा था। उसके हाथों में प्रश्न-पत्र और खिलखिलाता हुआ दिखाई दिया तो मेरा मन उससे बातचीत करने का हुआ। भैया, आज पेपर कैसा हुआ? उसका उत्तर था सर, दो प्रश्न छूट गए। मैं उसे क्या कहता? बात समझने में आ गई कि परीक्षार्थी समय-सीमा का ध्यान नहीं रखता है, इसलिए ऐसी हानि स्वाभाविक तौर पर कई छात्रों को होती है। बात प्रश्न-पत्र हल करने की ही नहीं, बल्कि विद्यार्थी जीवन में चहुँमुखी विकास के लिए एक-एक क्षण का महत्व समझना कितना परमावश्यक है।

लोग कहते हैं कि- 'पलक झपकते ही प्रलय हो जाता है। पर इस सूक्ति पर मनन करने की फुरसत किसको है? अर्थात् समय की महिमा कितने इंसान समझकर जीवन निर्वाह कर रहे हैं? जो अगर छात्र जीवन से समय का बोध हो जाए तो सफलताएँ कभी पीछे नहीं हटती। यदि मुझसे कोई प्रश्न करे कि जीवन की सबसे बड़ी हानि क्या है? तो मेरा उत्तर होगा-'समय की बरबादी।' छात्रों को इस बात पर गौर करना चाहिए। एक कहावत है- 'Time is Money' अतः जो विद्यार्थी समय को व्यर्थ खोते हैं, वे अपने जीवन के साथ बहुत बड़ा धोखा करते हैं क्योंकि समय न तो किसी की प्रतीक्षा करता है, न परवाह। यह बात जगजाहिर है कि आदमी भूली हुई और खोई हुई प्रतिष्ठा को मेहनत करके पुनः प्राप्त करने में समर्थ हो जाता है तथा वर्षो के भूले बिछुड़े मिल जाते हैं, किन्तु जो क्षण एक बार चल जाता है, वह फिर कभी नहीं मिल सकता है। एक विचारक ने ठीक ही कहा है-

मान सम्मान न पा जाते, जो करे समय का ख्याल
जिन्दगी संवर जाती, हो जाते वे सदा निहाल।।

कहने का अर्थ यह है कि शैक्षिक प्रगति हेतु जो छात्र एक क्षण का भी अपव्यय नहीं करते और मूल्यवान समय का सदुपयोग करते हैं, वे बुद्धिमान और महान बन सकते हैं। विद्याध्ययन में समय पाबन्दी विद्यार्थी को निरन्तर सफलता प्रदान करती है। क्योंकि समय आया नहीं करता, वह तो अहर्निश जाता रहता है। संत कबीर ने समय के सदुपयोग का महत्व प्रतिपादित किया है-

काल करे सो आज कर, आज करे सो अब।
पल में परलै होयगी, बहुरी करेगो कब।।

शिक्षा ग्रहण करने वाले छात्र को अपने शिक्षण में समय निर्धारित कर लेना चाहिए। कहा गया है-वर्क व्हाइल यू वर्क, एण्ड प्ले व्हाइल यू प्ले, दिस इज द वे टू बी हैप्पी एण्ड, आजकल कतिपय छात्र टी.वी., मोबाइल की मस्ती में समय व्यर्थ खो देते हैं और जब परीक्षा के दिन आते हैं, तब सारी रात जाग-जागकर पढ़ते हैं। छात्र बताए कि फर्स्ट आने वाले एवं विशेष योग्यता पाने वाले छात्र क्या दिन-रात पढ़ते है? कदापि नहीं। वे समय-समय पर नियमपूर्वक पढ़ते हैं, इसी कारण अच्छे अंकों से उत्तीर्ण होते हैं। यही नहीं जो समय का महत्त्व जानकर उसका पालन करता है, उन्हें कई प्रकार के लाभ मिलते हैं, यथा- शिक्षक एवं मित्रों का विश्वास बना रहता है, विद्यालय में उसकी विशेष पहचान एवं साख होती है, विद्यालयी कार्यक्रमों में उसे प्राथमिकता मिलती है, पढ़ाई में अव्वल आता है और अभिभावकों की प्रशंसा का भागीदार होता है। माना गया है समय का पालन एवं समय पाबंदी की आदत प्रारम्भ में कुछ कठिनाइयां होती है, पर बाद में जीवन भर सुख महसूस होने लगता है। विद्वानों का तो मानना है कि छात्र जीवन में समय का सदुपयोग करने वाले ही साहित्य के सृष्टा, राष्ट्रनेता, महापुरुष, वैज्ञानिक एवं अच्छे इंसान बनते हैं।

समय का उपहास करने वाले छात्र पछताते हैं। एक छात्र जिसको नौकरी पाने के लिए साक्षात्कार हेतु प्रातः दस बजे पहुँचना था, किन्तु वह दस बजे न पहुँचकर साढ़े दस बजे पहुँचा। दूसरा जो नियत समय पर पहुँचा उसकी नियुक्ति हो गई। देर से पहुँचने वाले को जवाब मिला कि तुम समय की कीमत नहीं जानते हो, भला कम्पनी की भलाई क्या कर सकते हो? तुम्हारे लिए 30 मिनट की देरी कोई महत्त्वपूर्ण नहीं, हमारे यहाँ हर पल का मूल्य है। युवक पानी-पानी हो गया। यानि जो विद्यार्थी अकड़ू स्वभाव से समय की पाबंदी नहीं समझता है तब समय भी उसे सबक सीखा देता है। फिर हमें बचपन से समय पर काम करने की आदत बालकों में डालना चाहिए। क्योंकि दुःखों का अन्त और सुखों का प्रारम्भ समय बोध से होता है। कहा है-जो शिक्षार्थी समय की परख नहीं करते हैं, उनको स्वयं की परछाई भी साथ नहीं देती है। कहना होगा-

आदि अन्त कोई नहीं, अभी तक पाया जान।
समय का उपयोग करते, वही नर होते सुजान।।

पूर्व व्याख्याता
पो. कपासन, चित्तौड़गढ़ (राज.)-312202
मो: 9414732090

Rajteachers.in

विद्यालय परिवेश

विद्यालयों में जीवन्त शैक्षणिक वातावरण में शिक्षक की भूमिका

❐ आकांक्षा शर्मा

हम स्वतंत्रता के जाए हैं मुक्त हमें रहने दो
जीवन की धारा में हमको आत्मभाव से बहने दो।।

प्रातः सूर्योदय की अरुणिमा में, पक्षियों के कलरव में, झरनों के बहते निर्झर संगीत में, बादल से बरसी रिमझिम बूँदों में, हवा की सुरीली बयार में एवं हिरण की तरह कुलाचे भरते बच्चों की उन्मुक्त हँसी में जो नाद है, जो संगीत है, जो प्रकृति का गीत है वह संभवतया विश्व के किसी संगीत में नहीं। यही कारण है कि रवीन्द्रनाथ टैगोर ने प्रकृति, संगीत और बालक में साम्यता बताते हुए यही कहा था कि प्रकृति से बड़ा शिक्षक और मार्गदर्शक कोई नहीं। शिक्षक ज्ञान प्रदाता होता है जो हमें सन्मार्ग बताता है जीवन जीने की कला सिखाता है, अंधेरे से रोशनी की ओर ले जाता है। क्योंकि-

जहाँ रहेगा अपनी रोशनी लुटाएगा,
किसी दीए का अपना कोई मकां नहीं होता।।

जब बालक अपनी आँखें प्रथम बार इस संसार में खोलता है तो उसका साक्षात्कार होता है, उसकी प्रथम गुरु उसकी माँ से, उसके पश्चात् जब बालक चेतनाशील होने लगता है, जड़-चेतन, जीव-जगत को समझने लगता है तो उसका साक्षात्कार होता है-विद्यालय और वहाँ पढ़ाने वाले शिक्षक से। उसके कोमल मन में कुछ भय होता है, शंकाएँ होती हैं और अपने अन्दर पल रही जिज्ञासाओं का एक समुद्र होता है ऐसे में यदि उसे एक संवेदनशील, जागरूक और बालमन को समझने वाला शिक्षक एक सखा के रूप में, एक माँ के रूप में और एक मार्गदर्शक के रूप में मिल जाता है तो ही उसकी शिक्षा सही मायने में प्रारम्भ हो पाती है ठीक उसी प्रकार जिस प्रकार युद्ध भूमि में किंकर्त्तव्यविमूढ़ अर्जुन को कृष्ण जैसे गुरु सखा रूप में मिल गए थे, जिस प्रकार चन्द्रगुप्त को चाणक्य, शंकराचार्य को गोविन्दपादाचार्य, दयानन्द सरस्वती को गुरु विरजानन्द और स्वामी विवेकानन्द को रामकृष्ण परमहंस मिल गए थे। क्योंकि विद्यार्थी को केवल ज्ञान नहीं कुछ और भी चाहिए-

चाहिए हमको न केवल ज्ञान,
देवता है माँगते कुछ स्नेह, कुछ बलिदान,
मोम-सी कोई मुलायम चीज ताप पाकर
जो उठे मन में पसीज-पसीज,
प्राण के झुलसे विपिन में फूल कुछ सुकुमार,
ज्ञान के मरु में सुकोमल भावना की धार।

शिक्षक अग्निधर्मा होता है वह अग्नि जो अपने संसर्ग में आने वाली प्रत्येक वस्तु को उर्ध्वगामी बनाकर तेजोमय कर देती है, पवित्र कर देती है। जिस प्रकार प्रत्येक पत्थर में मूर्ति बनने का गुण होता है किन्तु वही पत्थर उपास्य मूर्ति की आकृति ले पाता है जिसमें हथौड़े की चोट खाने की क्षमता होती है। शिक्षक उसी उपास्य मूर्ति की भाँति है जो हमारे मन, प्राण और आत्मा को प्रत्येक स्तर पर दृढ़ बनाता है। हमारी सोई और खोई दिव्यता को जगाने के धर्मोत्सव का ही नाम शिक्षक है।

ऐसे सत्य सिखाना जग को,
अनाचार जग से मिट जाए।
मिटे स्वर्ग की आफत कल्पना,
शाश्वत सत्य धरा पर आए।।
तू भू के भगवान,
तुम्हारे चरणों में ईश्वर मिलते हैं।
तुम अन्तर के माली,
तुमसे फूल जिंदगी के खिलते हैं।।
मैं भूलूं पर तुम मुझसे,
भूलों पर कभी उदास न होना।
तुम शिक्षक विद्वान,
तुम्हारी प्रतिभा से लोहा भी सोना।।

भारत को विश्व गुरु का पद दिलाने वाला भारतीय गौरवशाली गुरुकुल परम्परा में जहाँ कश्यप, कोत्स, वाल्मीकि, वशिष्ठ, द्रोणाचार्य, संदीपनी एवं चाणक्य जैसे गुरु हुए हैं वहीं राम, एकलव्य, अर्जुन, विवेकानन्द एवं शंकराचार्य जैसे शिष्यों ने भी भारतीय संस्कृति को गौरवान्वित किया है। गुरुकुल में आकर राजा और रंक गुरु के समक्ष एक हो जाते थे। गुरु संदीपनी के लिए कृष्ण थे वही सुदामा थे। 'सर्वे भवन्तु सुखिनः सर्वेभवन्तु निरामयाः। तथा 'वसुधैव कुटुम्बकम्' के आदर्शों को पोषित करने वाला शैक्षिक परिवेश था। राजा हरिश्चन्द्र का सत्य, दधीचि का आत्मबलिदान, राम की मर्यादा, कृष्ण का गीता ज्ञान, बुद्ध का तप, चाणक्य सी प्रज्ञा के आदर्शों को संजोकर हम चल रहे थे फिर एकाएक हमारी दिशा और दशा कैसे बदल गई?

इतने समृद्ध और इतने सम्पन्न शैक्षिक वातावरण को हमने कैसे और कहाँ खो दिया? जवाब में यही पंक्तियाँ उपयुक्त जान पड़ती हैं-

ये शर्म है अब हिसाब क्या दें,
कहाँ पे हस्ती गंवाई अपनी।

भारत को गुलाम बनाने की साजिश रचने वाले एक अंग्रेज ने जब यहाँ की समृद्ध सांस्कृतिक एकता व भव्य चारित्रिक मूल्यों पर आधारित शिक्षण व्यवस्था को देखा तो उसके उद्गार इस प्रकार थे-

'ये देश इतना समृद्ध है, इसके नैतिक मूल्य इतने उच्च हैं और यहाँ के लोग इतने सक्षमता और योग्यता लिए हुए हैं कि हम यह देश कभी जीत सकते हैं। मुझे इसमें संदेह है। इस देश की सांस्कृतिक और आध्यात्मिक परम्परा यहाँ की रीढ़ है और यदि हमें यह देश जीतना है तो इसे तोड़ना ही पड़ेगा। उसके लिए यहाँ की प्राचीन शिक्षण पद्धति और संस्कृति बदलनी पड़ेगी और परिणाम तो हमारे सामने है ही। जब से गुरुकुल का स्थान स्कूलों ने और गुरु का स्थान टीचर ने ले लिया है तब से शिक्षा भी केवल औपचारिकता बनकर केवल अपने

Rajteachers.in

शाब्दिक अर्थ में सिमट कर रह गई है। राष्ट्रकवि मैथिलीशरण गुप्त ने वर्तमान शैक्षिक परिदृश्य को ही लक्ष्य कर लिखा है-

कौन थे क्या हो गए?
जान लो इसका पता,
जो थे कभी गुरु है,
न उनमें शिष्य की भी योग्यता,
जो थे सभी के अग्रणी और
आज पीछे भी नहीं,
है दीखती विपरीतता संसार में ऐसी कहीं।।

डॉ. सर्वपल्ली राधाकृष्णन् ने कहा है- ''आज विद्यालयों से विद्यार्थी को ज्ञान के मोटान के रूप में विकसित किया जा रहा है, संग्रहहीन मस्तिष्क सदैव बीमार समाज को जन्म देता है। अतः शिक्षा को जीवन्त बनाया जाए, उसे आचार व्यवहार से जोड़ा जाए।''

यह हमें स्वीकारना होगा कि वर्तमान युग शिक्षा के क्षेत्र में सूचना की क्रान्ति का युग है जिसमें नवीन शिक्षण नवाचारों, नवीन शिक्षण व्यूह रचनाओं, नई शिक्षण विधियों एवं उपादानों से सुसज्जित होकर ही हम छात्रों को इस बदलते वैश्विक परिदृश्यों व ज्ञान की नवीन इकाइयों के साथ समायोजित होना सीख सकेंगे। आज के युग में छात्र व अध्यापक के बीच का जो सम्बन्ध है वह एक मित्र, पथप्रदर्शक, निर्देशक व गाइड की भाँति है अतः विद्यालय में इस तरह के अधिकाधिक अवसर हों कि शिक्षक और छात्र मात्र पुस्तकीय सम्प्रेषण से न जुड़े होकर भावनात्मक स्तर पर एक-दूसरे से जुड़े हों क्योंकि प्रेम व स्नेह से अधिक सशक्त कुछ

नहीं-जैसा कि कहा भी है- **'Love is canvas, furnished by nature And embroided by imagination'** आज के युग में **'स्पेयर दि रोड एण्ड स्पोइल द चाइल्ड'** की कहावत को अप्रासंगिक माना जाने लगा है। अध्यापक को अब **'Example is better than precept'** को व्यवहार में लेना होगा। आकर्षक व संगीतमय प्रार्थना कार्यक्रम, शिक्षण कालांशों के अतिरिक्त खेल, संगीत, कला, कोई न कोई व्यावसायिक दक्षता के कार्यक्रमों एवं अन्य सहशैक्षिक गतिविधियों से निश्चित रूप से विद्यालय का वातावरण गत्यात्मक, ऊर्जावान व जीवन्त बनता है। स्वामी विवेकानन्द ने शिक्षा को व्यावहारिक जगत से जोड़ने को महत्त्वपूर्ण मानते हुए कहा है-हम गीता-रामायण पढ़ने के अपेक्षा फुटबाल खेलकर स्वर्ग के अधिक नजदीक आ सकते हैं। सिद्धांतों के ढेर ने हमें विनाश के कगार पर ला कर खड़ा कर दिया है। कार्य के प्रत्येक क्षेत्र में हमें व्यावहारिक बनना होगा।

आनन्ददायी शिक्षण की दिशा में निश्चित रूप से गाँधीजी का शिक्षा दर्शन भी आज की दिशाभ्रमित शिक्षा व्यवस्था को नई रोशनी दिखा सकता है। क्योंकि-

''उद्देश्य जन्म का नहीं कीर्ति या धन है सुख नहीं, धर्म भी नहीं, न तो दर्शन है। विज्ञान, ज्ञान-बल नहीं, न तो चिन्तन है, जीवन का अन्तिम ध्येय स्वयं जीवन है।''

हमें अपने शिक्षकत्व की गरिमा को पुनः जगाना होगा ताकि एक बार पुनः भारत विश्व गुरु एवं सोने की चिड़िया कहला सके। पुनः कण्व ऋषि, सांदीपन, मुनि वशिष्ठ व वाल्मीकि ऋषि के आश्रम पर आधारित आदर्श विद्यालय तैयार करने होंगे जहाँ प्रकृति पेलवा शकुन्तला मृग शावकों के बीच खेल सके एवं शेर के शावकों से खेलने वाले भरत सरीखे बालक तैयार हो सकें। विद्यालय बालक के लिए बचपन की फुलवारी है तो क्यों नहीं हम इस फुलवारी को सुन्दर, आकर्षक व जीवंत बनाए ताकि बालक सुरभित होकर समाज को महका सकें।

कैसे लड़ना है अंधेरों से ये खुद ही आ जाएगा।
सिर्फ शमा की तरह खुद को जला कर देखिए।।

व्याख्याता (हिन्दी)
1 जी 7 आर.एच.बी. कॉलोनी, कुन्हाड़ी कोटा (राज.)
मो: 9460388594

शास्त्री जयंती विशेष

ऐसे थे हमारे भूतपूर्व प्रधानमंत्री लाल बहादुर शास्त्री

❒ मदन लाल मीणा

जब लाल बहादुर शास्त्री देश के प्रधानमंत्री थे तब वह एक बार कपड़े की दुकान में साड़ियाँ खरीदने गए। दुकान मालिक शास्त्री जी को देखकर बहुत खुश हुआ। शास्त्री जी ने दुकानदार से कहा कि वे जल्दी में हैं और उन्हें चार-पाँच साड़ियाँ चाहिए।

दुकान का मैनेजर शास्त्री जी को एक से बढ़कर एक साड़ियाँ दिखाने लगा। सभी कीमती साड़ियाँ थी। शास्त्री जी बोले-भाई, मुझे इतनी महंगी साड़ियाँ नहीं चाहिए। कम कीमत वाली दिखाओ। इस पर मैनेजर ने कहा-सर आप इन्हें अपना ही समझिए, दाम की तो कोई बात ही नहीं है। यह तो हम सबका सौभाग्य है कि आप पधारे। शास्त्री जी उसका आशय समझ गए। उन्होंने कहा- आपको साड़ी की कीमत लेनी होगी। मैं जो तुम से कह रहा हूँ उस पर ध्यान दो और मुझे कम कीमत की साड़ियाँ ही दिखाओ और उनकी कीमत बताते जाओ। तब मैनेजर ने शास्त्री जी को थोड़ी सस्ती साड़ियाँ दिखानी शुरू की।

शास्त्री जी ने कहा- ये भी मेरे लिए महंगी ही है। और कम कीमत की दिखाओ। मैनेजर को एकदम सस्ती साड़ी दिखाने में संकोच हो रहा था। शास्त्री जी इसे भाँप गए। उन्होंने कहा- दुकान में जो सबसे सस्ती साड़ियाँ हों, वह दिखाओ। मुझे वही चाहिए। आखिरकार मैनेजर ने उनके मन मुताबिक साड़ियाँ निकाली। शास्त्री जी ने उनमें से कुछ चुन ली और उनकी कीमत अदा कर चले गए। उनके जाने के बाद बड़ी देर तक दुकान के कर्मचारी और वहाँ मौजूद कुछ ग्राहक शास्त्री जी की सादगी की चर्चा करते रहे। वे उनके प्रति श्रद्धा से भर उठे थे।

संक्षेप में :-''सादगी आपके चरित्र के साथ आपके व्यवहार में होनी चाहिए। दिखावा वही करते हैं जिन्होंने पहली बार वह वस्तु देखी हो। इसी बात को दर्शाती एक कहावत भी है कि अधजल गगरी छलकत जाए।''

वरिष्ठ अध्यापक (अंग्रेजी)
रा.आ.उ.मा.वि. चिड़िया (गिड़ा)
बाड़मेर (राज.)
मो: 9928173922

Rajteachers.in

राज्य परिषद् का 69वाँ वार्षिक अधिवेशन

हमारा कर्म हो सेवा हमारा धर्म हो सेवा

❒ बृजमोहन पुरोहित

'लाखों गूंगों के हृदय में ईश्वर विराजमान है। मैं उनके सिवाय अन्य किसी ईश्वर को नहीं मानता। मैं इन लाखों की सेवा के द्वारा ईश्वर की पूजा करता हूँ।'

– महात्मा गाँधी

यह वर्ष महात्मा गाँधी की 150वीं जयन्ती वर्ष है। भारत तो उनकी जन्मभूमि-कर्मभूमि है। देश को आजादी दिलाने का अप्रतिम कार्य उन्होंने ही किया था। उनके कार्यों एवं कार्यप्रणाली से पूरी दुनिया को रोशनी मिली थी। यही कारण है कि उनकी 150 वीं जयन्ती के अवसर पर अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर अनेक कार्यक्रम आयोजित किए जा रहे हैं। राजस्थान राज्य भारत स्काउट व गाइड की राज्य परिषद् का वार्षिक अधिवेशन यों तो प्रतिवर्ष प्रदेश के किसी न किसी डिवीजन मुख्यालय पर रखा जाता है लेकिन इस वर्ष का अधिवेशन गाँधीजी का संदर्भ पाकर अधिवेशनों की श्रृंखला में एक नया इतिहास रच गया।

राज्य परिषद् का 69वाँ वार्षिक अधिवेशन था जिसका आयोजन 20 सितम्बर 2019 (शुक्रवार) के दिन बीकानेर के शानदार रविन्द्र रंगमंच पर किया गया। वहीं रविन्द्र रंगमंच जो बीकानेर के ऐतिहासिक गाँधी पार्क की गोद में अवस्थित है। गाँधी पार्क में स्थापित गाँधी बाबा की विशाल प्रतिमा की छाया सूर्य के ढलने के साथ 'रविन्द्र रंगमंच' पर पड़ती है तो लगता है जैसे वह उसे आशीर्वाद दे रही है। विश्व कवि रवीन्द्रनाथ टैगोर ने कभी महात्मा कहकर सम्बोधित किया था मोहनदास कर्मचन्द गाँधी को। उन्हीं रविन्द्र बाबू के नाम से बना रंगमंच और बापू का गाँधी पार्क दोनों एक ही परिसर में हैं।

स्काउट-गाइड परिवार बीकानेर इस आयोजन को लेकर बहुत उत्साहित था। बहुत दिनों से तैयारी कर रहे थे यहाँ के कार्यकर्त्ता! 'अतिथि देवोभवः' की उज्जवल भारतीय परम्परा बीकानेर में देखी जा सकती है। अधिवेशन से एक दिन पूर्व 19 सितम्बर की सायं से ही राज्य के भिन्न-भिन्न जिलों से स्काउटजन का आना शुरू हो गया था। स्काउट परिवार के मुखिया स्टेट चीफ कमिश्नर श्री जे.सी. महान्ति सर पहले ही दिन पधारे तथा तैयारियों का जायजा लेकर कार्यकर्ताओं का उत्साहवर्धन किया। राज्य सचिव श्री रविनंदन भनोत तो बीकानेर के साथ बराबर जुड़े रहे ही थे। सर्वत्र उत्साह-सर्वत्र उमंग। स्काउटिंग के रंग में रंग गया बीकानेर; 531 वर्ष पुराना बीकानेर।

अधिवेशन के दिन सुबह से ही बीकानेर का मौसम बहुत खुशनुमा हो गया था। सूर्य की पहली किरण सेवा एवं सहयोग का प्रकाश लेकर प्रकट हुई। कार्यकर्ता देर रात कार्य कर दिल में जो सपने लेकर सोए, उनके साकार होने का वक्त आ गया। रविन्द्र रंगमंच मुख्य द्वार से लेकर भीतर तक दुल्हिन की तरह सजा था। भीतर प्रेक्षाग्रह में पुष्पों की मधुर खुशबू के साथ कर्णप्रिय स्वर लहरियाँ 'आओ जी पधारो म्हारे देश' अतिथियों को बिना कहे कार्यक्रम स्थल तक पहुँचने का निमंत्रण दे रही थीं। गाइड की बालिकाएँ अक्षत तिलक के द्वारा मुख्य द्वार पर स्वागत कर रही थीं।

अतिथियों के लिए बनाए विशेष मंच के बाईं ओर स्काउटिंग के संस्थापक बेडेन पावेल की भव्य तस्वीर शोभायमान थी। मंच पर लगे विशाल पर्दे पर महात्मा गाँधी का स्काउट-गाइड बच्चों के साथ का चित्र वातावरण को गाँधीमय बना रहा था। मंच पर अधिवेशन की अध्यक्षता करने के लिए राज्य पदाधिकारियों में उपाध्यक्ष श्रीमती सुमन शृंगी के स्थान ग्रहण करने के साथ ही कार्यक्रम प्रारम्भ हो गया। उनके साथ राज्य उपाध्यक्ष एवं केन्द्रीय संगठन की पदाधिकारी डॉ. (प्रो.) विमला मेघवाल भी विराजमान थीं।

स्टेट चीफ कमिश्नर श्री जे.सी. महान्ति के अधिवेशन स्थल पर पधारने पर उपस्थिति जन ने खड़े होकर करतल ध्वनि के साथ उनका अभिनंदन किया। उनके साथ श्री नथमल डिडेल, निदेशक, माध्यमिक शिक्षा राजस्थान व स्टेट कमिश्नर (स्कूल शिक्षा) एवं डा. जितेन्द्र कुमार सोनी, स्टेट कमिश्नर (स्काउट) भी पधारें। अतिथियों ने बेडेन पॉवेल सर की तस्वीर को माल्यार्पण कर दीप प्रज्ज्वलित किया। एक ऐसा दीपक जिसकी लो में सेवा व सहयोग का प्रकाश मिलता है। स्काउटिंग की हृदय में हिलोरें भर देने वाली प्रार्थना 'दया कर दान भक्ति का हमें

Rajteachers.in

परमात्मा देना' की भावपूर्ण प्रस्तुति के उपरान्त मंचासीन अतिथियों को स्कॉर्फ पहना कर स्वागत किया गया। उन्हें प्रतीक चिह्न एवं बैग भी भेंट किए गए।

अब बारी थी-स्वर संगीत से स्वागत करने की। गाइड बालिकाओं ने वातावरण को स्वागतमय बनाते गीत प्रस्तुत किया। मन की वीणां से गूँजे स्वागतम्! स्वागतम! स्वागतम! स्वागतम! स्वागत गीत के पश्चात बीकानेर मंडल के चीफ कमिश्नर डॉ. विजय शंकर आचार्य ने बीकानेर की अद्भुत परम्पराओं, यहाँ के महापुरुषों का आख्यान देते हुए अपने स्वागत भाषण से अतिथियों का वंदन किया।

बीकानेर मंडल की बालिकाओं ने सांस्कृतिक प्रस्तुति के तहत मारवाड़ री धरती रो काम ठाडो' लोकगीत जिस उत्साह के साथ प्रस्तुत किया, उसने सम्भागियों को बार-बार करतल ध्वनि करने के लिए मजबूर कर दिया।

गीत-संगीत के प्रथम उल्लासमय चरण के बाद बारी थी राज्य के अधिवेशन के औपचारिक एजेण्डे के अनुसार कार्यवाही की। राज्य सचिव श्री रवि भनोत अब माइक पर थे। उन्होंने वार्षिक प्रतिवेदन 2018-19 प्रस्तुत किया। चूँकि वार्षिक प्रतिवेदन की मुद्रित प्रति सम्भागियों को पहले ही उपलब्ध करवा दी थी; अतः प्रतिवेदन को पढ़ा हुआ मान लिया गया था। राज्य सचिव भनोत सर स्काउटिंग के पर्याय हैं। अतः उन्होंने सम्भागियों के प्रश्नों व शंकाओं का भी निवारण किया। एजेण्डे के अनुसार लेखाधिकारी श्रीयुत श्रीराम शर्मा ने वर्ष 2018-19 की ऑडिट-रिपोर्ट एवं अन्य लेखा सम्बन्धी प्रस्ताव प्रस्तुत किए जिन्हें सदन ने ध्वनिमत से पारित किया। राज्य में प्रथम बार अधिवेशन में सभी मंडलों को अपनी उपलब्धियाँ पावर पोइन्ट प्रजेन्टेशन (पीपीपी) के माध्यम से सदन में रखने का अवसर दिया गया। इस शृंखला में राज्य मुख्यालय, अजमेर, भरतपुर, बीकानेर, जयपुर, जोधपुर, कोटा, उदयपुर ने क्रमशः पीपीपी देकर सम्भागियों को जैसे पूरे प्रदेश की यात्रा करवा दी। इस अवसर पर विभिन्न उपलब्धियों एवं सम्मानों से विभूषित स्काउट-गाइड अधिकारियों/कर्मचारियों को चीफ कमिश्नर सर ने पुरस्कृत किया।

अब बारी थी अतिथि महानुभावों के उद्बोधन एवं आशीर्वाद की। सबसे पहले स्कूल शिक्षा विभाग (माध्यमिक) के युवा एवं ऊर्जस्वी निदेशक एवं स्टेट कमिश्नर (स्कूल शिक्षा) श्री युत नथमल डिडेल माइक पर सम्भागियों से मुखातिब हुए। अपने भावपूर्ण उद्बोधन में उन्होंने कहा, 'स्काउट गाइड जैसे कर्मठ, पर्यावरण, स्वच्छता एवं धरोहर संरक्षण जैसे कार्यों में संलग्न संगठन से जुड़कर मुझे गर्व महसूस होता है।' उन्होंने कहा कि स्काउटिंग अनुशासन की पाठशाला है। अनुशासित कार्यकर्ताओं को देखकर अन्य को भी इससे जुड़ने का मोटिवेशन मिलता है। इस वर्ष सम्पन्न लोकसभा/विधानसभा चुनावों में स्काउट कार्यकर्ताओं ने बहुत शानदार काम किया। इससे राष्ट्रीयस्तर पर प्रशंसा मिली। समर्पण की भावना के साथ नैतिकता एवं अनुशासन भारत स्काउट-गाइड से बहुत अच्छे से सिखा जा सकता है। शिक्षा निदेशक ने विभाग से अपेक्षा किए जाने पर अपेक्षानुसार कार्य एवं सहयोग का आश्वासन अधिवेशन को दिलाया। शिक्षा विभाग की जटिल व्यस्तता, अधिवेशन के ही दिन रखी। राज्यस्तरीय उच्च बैठक के बावजूद समय निकालकर अधिवेशन में पधारने तथा हृदय को छू लेने वाले उद्बोधन पर सभी ने स्काउटिंग की विशेष करतल ध्वनि हर्ष-हर्ष जय के साथ निदेशक महोदय के प्रति सम्मान प्रकट किया।

राजस्थान राज्य भारत स्काउट व गाइड के चीफ कमिश्नर श्री जे.सी. महान्ति का स्काउटिंग के प्रति प्रेम व आत्मीयता सबको अपील करती है। स्वयं को स्काउटिंग का छोटा कार्यकर्ता मानकर सबका उत्साहवर्धन करने वाले वे सबसे बड़े अधिकारी हैं- **हीरा मुख, ये कब कहे लाख हमारो मोल।** अपने उद्बोधन में श्री महान्ति सर ने सबसे पहले उत्तम कार्यों एवं उत्कृष्ट उपलब्धियों के लिए स्काउट गाइड कार्यकर्त्ताओं एवं अधिकारियों को बधाई दी। हर मण्डल में एक करोड़ रुपयों के कार्य सहयोग लेकर पूर्ण कराने के तीन वर्ष पूर्व लिए संकाय को पूरा करने के लिए उन्होंने अपनी प्रसन्नता प्रकट की। ट्रेनिंग को कार्यक्रम का हृदय बताते हुए लीडर ट्रेनर को बार-बार बुलाकर उन्हें मजबूती प्रदान करने की आवश्यकता उन्होंने बताई। स्थानीय संघ (LA) संगठन की नींव है। इनका निरीक्षण करते हुए ए/बी/सी ग्रेडिंग दी जानी चाहिए। वृक्षारोपण, स्वच्छता, सेवा कार्य, प्लास्टिक मुक्ति जैसे राष्ट्रीय सरोकारों में स्काउट बहुत अच्छी भूमिका अदा कर सकते हैं। कोटा में स्काउट संगठन ने एक अनाथालय को गोद लिया। यह बहुत अच्छी पहल है। आगामी वर्ष NGC गतिविधियों को प्राथमिकता देने का उन्होंने आह्वान किया। आपने बांग्लादेश की अपनी यात्रा के प्रसंग भी सुनाए। आपने स्टेट चीफ परिवार प्रमुख को यों नजदीक से देखकर सम्भागी फूले नहीं समा रहे थे।

अध्यक्षीय उद्बोधन में श्रीमती सुमन शृंगी ने स्काउटिंग को सेवा, संकल्प एवं सहायता का पर्याय बताया। उन्होंने तनाव में रहकर नहीं बल्कि मुस्कुराते हुए सेवा करने पर जोर दिया। अन्त में आभार प्रकट करते हुए स्टेट कमिश्नर (स्काउट) डॉ. जितेन्द्र कुमार सोनी ने स्काउटिंग को सेवा व अनुशासन का पर्व बताया। चिन्ता व चिन्तन इस बात पर हो कि बच्चों में अनुशासन भावना कैसे विकसित हो। कतार में खड़े अन्तिम व्यक्ति तक लाभ पहुँचाना हमारा ध्येय होना चाहिए। यह वर्ष महात्मा गाँधी की 150वीं जयन्ती का वर्ष है। अतः राष्ट्रपिता के नाम पर अधिक से अधिक समाजोपयोगी व जन हितैषी कार्य करने की उन्होंने अपील के साथ अपनी शुभकामनाएँ प्रदान की। राष्ट्रगान की सामूहिक प्रस्तुति के साथ यह कार्यक्रम सम्पन्न हुआ।

इस अवसर पर राज्य मुख्यालय से राज्य प्रशिक्षण आयुक्त (स्काउट) श्री बन्नालाल, कार्यक्रम क्रियान्वयन राज्य आयुक्त श्री रघुवीर सिंह शेखावत, सर्व श्री महेश स्वामी, विनोद शर्मा, राजेश चूरा, केसरीचन्द, प्रो. एल.एन. खन्नी, ओम प्रकाश सारस्वत, धनवंती विश्नोई, महेन्द्र सिंह, अशोक खन्ना सहित अनेक अधिकारीगण ने पधार कर अधिवेशन की शोभा बढ़ाई। अगले वर्ष 2019-20 का मण्डल परिषद् का वार्षिक अधिवेशन भरतपुर में रखे जाने के संकल्प एवं बीकानेर अधिवेशन की मधुर स्मृतियों को मन मन्दिर में संजोए सम्भागियों ने अपने गंतव्य के लिए प्रस्थान किया।

सचिव
स्काउट गाइड स्थानीय संघ, बीकानेर
सूरदासाणी स्ट्रीट, बारह गुवाड़ का चौक,
बीकानेर-334005
मो: 9413312041

Rajteachers.in

दीपावली विशेष

दीपावली और मान्यताएँ

❒ अचलचन्द जैन

दीपावली का त्यौहार हमारी संस्कृति की अनूठी विरासत है, जो अन्धकार को दूर कर चारों तरफ प्रकाश फैलाती है। दीपावली पर घर की सफाई कर घर में मांडणे, रंगोली आदि बनाकर घर को सुन्दर तरीके से सजाया जाता है। इस तरह दीपावली का त्यौहार स्वच्छता एवं सुन्दरता का त्यौहार है। इतना ही नहीं इस दिन नए कपड़े पहने जाते हैं और विभिन्न प्रकार के पकवान बनाए एवं खाए जाते हैं तथा घर पर मिलने आने वालों को भी खिलाए जाते हैं। रात को पटाखों की गूँज और चमक से खुशियों की लहरें उठती हैं। इस तरह दीपावली खुशियों से भरा त्यौहार है, जो खुशियाँ बाँटने का सन्देश देती है।

दीपावली मनाने से जुड़े कई पौराणिक एवं ऐतिहासिक कारण प्रचलित हैं। जिससे यह सिद्ध होता है कि यह त्यौहार केवल हिन्दुओं का ही नहीं है, अपितु जैन और सिक्ख धर्म के लोग भी बड़े हर्षोल्लास के साथ मनाते हैं। दीपावली के सम्बन्ध में कुछ पौराणिक एवं ऐतिहासिक तथ्य इस प्रकार है।

लक्ष्मीजी का जन्म दिन: कहते हैं कि समुद्र मंथन के समय लक्ष्मीजी कार्तिक मास की अमावस्या के दिन प्रकट हुई थीं। इसी याद में कार्तिक मास की अमावस्या को लक्ष्मी का पूजन कर समृद्धि की कामना की जाती है।

राम की अयोध्या वापसी : रामायण के अनुसार भगवान श्री राम लंका पर विजय प्राप्त कर एवं 14 साल का वनवास पूर्ण कर कार्तिक मास की अमावस्या के दिन अयोध्या लौटे थे। इनके आगमन की खुशी में अयोध्या वासियों ने असंख्य दीप जलाकर उनका स्वागत किया। उन्हीं की याद में आज भी कार्तिक मास की अमावस्या को दीप जलाकर दीपावली मनायी जाती है।

तीर्थंकर महावीर का निर्वाण : जैन धर्म के चौबीसवें तीर्थंकर महावीर स्वामी का निर्वाण भी कार्तिक मास की अमावस्या के दिन हुआ था। इसलिए जैन धर्मावलम्बी भगवान महावीर के निर्वाण की स्मृति में दीपावली का त्यौहार हर्षोल्लास से मनाते हैं।

पाण्डवों की अज्ञात वास से वापसी : महाभारत के अनुसार वह कार्तिक मास की अमावस्या ही थी जब पाण्डव 12 वर्ष का बनवास व एक वर्ष का अज्ञातवास का अज्ञात वास पूर्ण कर प्रकट हुए थे, तब प्रजा ने धर्म परायण पाण्डवों की वापसी पर उनके स्वागत में असंख्य दीप जलाकर खुशियाँ प्रकट की थी।

विक्रमादित्य का राजतिलक– न्यायप्रिय राजा विक्रमादित्य जिनके नाम का विक्रम संवत आज भी भारत में प्रचलित है, का राजतिलक दीपावली के दिन ही हुआ था।

महर्षि दयानन्द का निर्वाण– वह कार्तिक मास की अमावस्या ही थी जब आर्य समाज के संस्थापक महर्षि दयानन्द ने निर्वाण प्राप्त किया था। यही कारण है कि आर्य समाज के लोग महर्षि दयानन्द सरस्वती की यादगार में उत्साहपूर्वक दीपावली का त्यौहार मनाते हैं।

कृष्ण द्वारा नरकासुर का वध– भगवान श्री कृष्ण ने अत्याचारी राजा नरकासुर को दीपावली के अवसर पर मारकर 16000 स्त्रियों को उसके कब्जे से मुक्ति दिलाई थी। इस पौराणिक घटना के कारण दीपावली को मुक्ति के त्यौहार के रूप में भी मनाया जाता है।

सिख धर्म में भी खास है दीपावली: सिख धर्म में दीपावली इसलिए खास है कि इस दिन अमृतसर के स्वर्ण मन्दिर की आधारशिला रखी गई थी। इस दिन स्वर्ण मन्दिर पर दीये जलाकर रोशनी की जाती है।

इस तरह भिन्न पौराणिक एवं ऐतिहासिक मान्यताओं के कारण दीपावली सब का त्यौहार है, जो बड़े स्तर पर उत्साहपूर्वक मनाया जाता है। यह त्यौहार जीवन में खुशियाँ भरने का सन्देश देता है।

गाँधी मुहत्तों का बास,
सायला, जालौर
मो. 029772-72079

खुशी का जरिया है पैदल चलना

❒ सत्य नारायण नागोरी

भाग दौड़ भरी जिन्दगी में हर किसी के पास समय नहीं है। बाहन की ममद से तुरन्त एक जगह पर काम निपटाकर दूसरी जगह पर पहुँचा जा सकता है। वाहन न हो तो सारे काम ही अटक जाएँ। अगर हम चाहें तो इस स्थिति में एक सप्ताह के लिए बदलाव ला सकते हैं।

ऑफिस जाने के लिए पब्लिक ट्रांसपोर्ट की मदद ले सकते हैं। यहाँ आप कई ऐसे चेहरे से दुबारा मिलेंगे, जिन्हें सालों पहले देखा था। यहाँ आप अपनी भूली-बिसरी यादों से रूबरू होंगे। गौर करेंगे तो पता लगेगा कि आप उतने ही समय में ऑफिस पहुँच गए हैं। जरा सोचिए अन्तर इतना है कि बस में सब हैं।

बिना वाहन के पास के किराना वाले से समान लाएँ, सब्जी मण्डी पैदल पहुँचें, दोस्तों से मिलने पैदल जाएँ। पैदल चलेंगे तो खुद के स्टेमिना के बारे में पता लगेगा। रास्तों और गलियों को में गाड़ी पर बैठकर ही जाना है, कदमों से दूरी नापेंने तो जानेंगे कि कहाँ क्या बदल रहा है।

जीवन में गति कम होगी, पर सत्साह बढ़ेगा। वाहन से प्रदूषण होता है, भीड़-भाड़ बढ़ती है, रास्ते जाम होते हैं। हम इन बातों के बारे में ज्यादा विचार नहीं करते, लेकिन सप्ताह में एक दिन पैदल चलना भी खुशी दे सकता है। केवल व्यायाम से ही खुशी नहीं मिलेगी।

मनोवैज्ञानिक कहते हैं और डाक्टर भी मानने लगे हैं कि पैदल चलने से आप बहुत जल्दी शान्त और प्रसन्न होंगे। खुशी भी हमारी पूँजी है और यदि पैदल चलने से मिले तो तुरन्त लपकने में बुद्धिमानी होगी। खुशी का एक जरिया है पैदल चलना। इससे महसूस होगा आप खुश हैं और ऐसे ही खुश रह सकते हैं।

व्याख्याता, रा.उ.मा.वि., केलवाड़ा, राजसमंद
मो. 9610334431

Rajteachers.in

पुस्तक समीक्षा

कर्त्तव्य पथ

लेखक : राजकुमार 'इन्द्रेश', **प्रकाशक** : साहित्यगार प्रकाशन, धमाणी मार्केट की गली, चौड़ा रास्ता, जयपुर **प्रकाशन वर्ष/संस्करण** : 2018 **पृष्ठ** : 103 मूल्य : ₹ 175

कवि श्री राजकुमार 'इन्द्रेश' द्वारा चार सर्ग में विभक्त 66 कविताओं का काव्य संग्रह 'कर्त्तव्य पंथ' का प्रथम पृष्ठ पलटते ही कवि के प्रति श्रद्धा का भाव मन में उत्पन्न हो जाता है। अपनी काव्यरचना अपने पूज्य माता-पिता को समर्पित की गई है जो सराहनीय तो है ही, आज के दौर में जब बच्चे बड़े होने पर 'संवेदन, शून्य, भाव शून्य हो रहे है ऐसे में निश्चित तौर पर यह समर्पण भाव नमन योग्य है। काव्य संग्रह का पहला सर्ग सन्देश है,' जिसमें कुल 28 कवितायें समेटी गई हैं। कवि इस खण्ड में समाज को अपनी कविताओं के माध्यम से सन्देश देते नज़र आते हैं। इसमें जहाँ उन युवाओं को संदेश है जो नई चुनौती से डरते हैं तो सबसे आगे कविता में निरंतर उन्नति करते हुए आगे बढ़ते रहने की प्रेरणा है। इसी प्रकार 'विजेता' में सकारात्मक सोच, 'आज का युवा' में दिशाहीन, दिग्भ्रमित हो चुके युवा वर्ग की सच्चाई से रूबरू कराते हैं। 'कामयाबी' कविता बिना कुछ किए सब कुछ पा लेने की लालसा रखने वालों को सच में आईना दिखाती है। 'रास्ते का पत्थर' जीवन की सच्चाई से रूबरू कराती है। 'सत्य वचन' में वर्तमान समाज पर जबरदस्त व्यंग्य है, जहाँ सत्य जानकर भी सच कहने की हिम्मत किसी में नहीं है इन्द्रेश ने इस सच्चाई को समझ कर कलम चलाई है, जो वाकई काबिले तारीफ है। आज बेतहासा दौड़ रही दुनिया के ऊपर कटाक्ष करती है कविता 'रचयिता', 'जिन्दा हो, जिन्दा रहो' कविता जिन्दगी को कोसते रहने वाले लोगों को दिशा बोध कराती नज़र आती है। दिग्भ्रमित युवा पीढ़ी और गलत राह पकड़ चुके युवा पुत्र के बाप की विवशता को कवि ने 'विवशता' कविता में बेहद खूबसूरती से दर्शाया है, आज जब बच्चे जवान हो अपने बाप से यह कहते नज़र आते हैं कि तुमने मेरे लिए किया ही क्या है? यह शायद उस बाप को सबसे बड़ी गाली होती है, जिसने कई वर्षों से नए कपड़े, नए जूते इसलिए नहीं खरीदे ताकि उसके बच्चे के मौज-शौक पूरे हो सकें, जीवन के एक मोड़ पर आकर यदि बेटा दिशा भटक जाए तो उससे बड़ी विवशता बाप के लिए और क्या हो सकती है।

कविता संग्रह का दूसरा सर्ग 'जीवन सर्ग' है, जिसमें 24 कवितायें जीवन की सच्चाईयों को पाठकों तक पहुँचाने का काम करती है। 'मजदूर' कविता एक कड़वी सच्चाई से रूबरू कराती है, वहीं 'जीवन' कविता जीवन पथ के विभिन्न पड़ावों से पाठकों का सामना कराती है। 'रिश्ते' में रिश्तों की प्रगाढ़ता और कसावट को दर्शाया गया है, सच भी है रिश्तों में एक अपनापन का अहसास और सहनशीलता तथा समर्पण की भावना आवश्यक है। कवि के शब्दों में-

रिश्ते निभाना नहीं आसान,
रिश्तों में है अपना पन
तो दर्द भी मीठे लगते हैं,
रिश्तों में हैं दूरियाँ
तो खुशियाँ भी बेगानी लगती हैं।

कड़वी सच्चाई कह गए कवि इन्द्रेश। अपने किसी प्रियतम की बाट देखते हुए मन में आने वाले विभिन्न उद्गारों को समेटा है कविता 'मेरी आँख के आँसू अब सूख गए' के माध्यम से। 'हकीकत' कविता मानव जीवन की वास्तविकता का दर्शन कराती है। पिता होने का भाव ही बालक को तमाम चिन्ताओं, कष्टों, निराशाओं से दूर कर देता है, क्योंकि पिता वह वट वृक्ष है, जिसकी छाया तले उसके बच्चे सुकून से रह सकते हैं, कवि ने 'पिता' कविता में इस भाव को खूबसूरती से दर्शाया है।

तृतीय खण्ड में प्रकृति सर्ग है, जिसमें कुल 11 कवितायें हैं। इस खण्ड में 'लहर', 'अन्तर', 'रात चाँदनी', 'सूर्योदय', 'संध्या समय', 'तपती रेत' को माध्यम बना कवि ने संदेश देने का प्रयास किया है, जिसमें वह सफल होते नज़र आते हैं।

चतुर्थ और अंतिम खण्ड में 'संकल्प सर्ग' जिसमें कुल 3 कविताएँ 'सफलता का रहस्य', 'नव बेला' और 'जीत' के माध्यम से निरंतर चलने का, कर्त्तव्य पथ पर चलने का और जीत का संकल्प दिलाती नज़र आती है।

कवि जब यह कहता है 'मैं हार कर, थक कर भी, मैं गिर कर, भटक कर भी, यथाशीघ्र अपनी राह आ जाऊँ, अपने काम में लग जाऊँ, नए आरंभ में रम जाऊँ, रूकना तो मरने समान है, चलना मेरा अधिकार है, बढ़ना मेरा कर्त्तव्य है, रहस्य जो समझा इस अपराजित वृत्ति का, नए-नए आरंभ का हारकर न रुकने की प्रवृत्ति में, रहस्य है छिपा सफलता का, तो निश्चित रूप से तमाम निराशायें दूर हो जाती हैं और नभ मण्डल में दिख रही किरणें स्वागत करने को आतुर दिखती हैं।

कुल मिलाकर राजकुमार 'इन्द्रेश' का यह काव्य संग्रह पठनीय और संग्रहणीय बन पड़ा है। कवि को ढेर सारी बधाई एवं शुभकामनाएँ।

समीक्षक : **डॉ. सूरज सिंह नेगी**
413, रामानुजन निवास,
वनस्थली विद्या पीठ, निवाई (टोंक)
मो. 9460709680

101 राजस्थानी कहानियां

संपादक : डॉ. नीरज दइया **प्रकाशक :** के.एल. पचौरी प्रकाशन, 8/ डी ब्लॉक, इंद्रापुरी, लोनी, गजियाबाद-201102 **प्रथम संस्करण :** 2019 **पृष्ठ :** 504 **मूल्य :** ₹ 1100

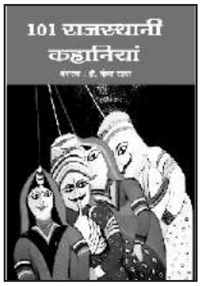

राजस्थानी मिट्टी की सौंधी महक कहानी सुनना एक बच्चे की इच्छा भर नहीं है, मूल मानवीय-स्वभाव है। कहानी की शुरुआत संभवत: तब से हुई जब आदमी ने बोलना सीखा। लोककथाओं के रूप में एक समृद्ध विरासत विश्व भाषाओं की धरोहर है जिसे हम कहानी के प्रति हजारों सालों से इंसानी प्रेम का प्रमाण मान सकते हैं। इस मामले में राजस्थानी भाषा की संपन्नता सर्वविदित है। राजस्थानी लोक-साहित्य में हजारों लोककथाएँ मौजूद हैं, जिनमें परंपरा, इतिहास, भूगोल और धर्म सहित जीवन के तमाम पक्षों का अंकन मिलता है। सदियों से श्रुति परंपरा से लोगों के कंठों में रची-बसी ये कथाएँ अपने समय-समाज की आकांक्षाओं एवं अवरोधों का प्रमाणिक

Rajteachers.in

दस्तावेज है। यह कहना तर्कसंगत नहीं होगा कि राजस्थानी की आधुनिक कहानी का विकास सीधे तौर पर लोककथाओं से हुआ है, मगर आधुनिक कहानी के बीज को पुष्पित-पल्लवित होने के लिए लोककथाओं ने उर्वर जमीन अवश्य तैयार की है। राजस्थानी कहानी का इतिहास मोटे तौर पर सौ साल से ज्यादा पुराना है। राजस्थानी की पहली कहानी का श्रेय शिवचंद्र भरतिया की 'विश्रांत प्रवासी' को दिया जाता है। आधुनिक कहानी के विकास के पीछे कमोबेश वही कारण रहे हैं जिनसे विदेशी व देशी साहित्य में शार्ट स्टोरी विधा का विकास हुआ। राजस्थानी कहानी का वर्तमान स्वरूप तो आजादी के बाद उन्नीसवीं सदी के छठे-सातवें दशक में ही बन पाया जब मुरलीधर व्यास व नानूराम संस्कर्ता के कहानी संग्रह प्रकाश में आए।

विगत छह-सात दशकों की यात्रा के बाद राजस्थानी कहानी जगत आज भरा-पूरा है। प्रदेश के विस्तृत भूभाग में सैकड़ों कहानीकार जन-जीवन के सच को कहानियों में विविध रूपों में ढाल रहे हैं। वरिष्ठ कवि आलोचक डॉ. नीरज दइया के संपादन में प्रकाशित ग्रंथ 101 राजस्थानी कहानियाँ कहानी विधा के सामर्थ्य का प्रमाण हैं। पांच सौ से ज्यादा पृष्ठों में 101 कहानियों के हिंदी अनुवाद की यह प्रस्तुति हिंदी जगत को राजस्थानी कहानी की विविधता एवं वैभव से साक्षात करवाती है। भूमिका के रूप में विद्वान संपादक का राजस्थानी कहानी : कदम-दर-कदम शीर्षक से शोध-आलेख कहानी की दशा-दिशा जाने के लिए अत्यंत उपयोगी और महत्त्वपूर्ण है। राजस्थानी की आधुनिक कहानी-यात्रा के विकास को चार काल-खंडों में वर्गीकृत करते हुए डॉ. दइया ने लिखा है कि कहानी के वैश्विक परिदृश्य में राजस्थानी के अनेक हस्ताक्षरों ने भारतीय कहानी को पोषित किया है। राजस्थानी कहानी भी भारतीय कहानी के विकास में कदम-दर-कदम साथ चल रही है। कहना न होगा, भारतीय कहानी का रूप-रंग भारतवर्ष की क्षेत्रीय भाषाओं की कहानियों से ही निर्मित होता है। राजस्थानी सहित देश की अन्यान्य भाषाओं की कथा-यात्रा को जाने समझे बगैर भारतीय कहानी के संप्रत्यय का सही रूप में आकलन करना संभव नहीं है।

इसमें संदेह नहीं है कि अनुवाद-पुल के माध्यम से भाषाओं के मध्य आवाजाही हो सकती है। अनुवाद असल में दो भाषाओं के मार्फत दो विविधतापूर्ण संस्कृतियों को नजदीक लाकर जोड़ता है। राजस्थानी से हिंदी में अनुदित ये कहानियाँ हिंदी के माध्यम से देशभर की हिंदी-पट्टी के करोड़ों पाठकों के साथ अन्य भाषाओं के कहानी प्रेमियों को राजस्थानी कहानी के आस्वादन का अवसर एवं मूल्यांकन दृष्टि प्रदान करती है। वरिष्ठ कवि-संपादक डॉ. सुधीर सक्सेना का इस संग्रह के आरंभ में अभिमत देखा जा सकता है- यह कृति राजस्थानी कहानी को जानने-बूझने के लिए राजस्थानी समेत तमाम भारतीय पाठकों के लिए अर्थ-गर्भी है। नीरज बधाई के पात्र हैं कि अपनी मिट्टी के ऋण को चुकाने के इस प्रयास के जरिए उन्होंने राजस्थानी कहानी को वृहत्तर लोक में ले जाने का सामयिक और साध्य उपक्रम किया है।

संग्रह में शामिल 101 कहानीकारों में राजस्थानी की भौगोलिक विविधता का समुचित प्रतिनिधित्व हुआ है। ये कहानियाँ राजस्थान की सांस्कृतिक समृद्धि की परिचायक तो है ही, राजकीय संरक्षण के बिना संघर्षरत भाषा के कलमकारों के जीवट का भी प्रमाण है। किताब के रचनाकारों की सूची देखें तो इसमें राजस्थानी कहानी को अपने पैरों पर खड़ा करने वाले यशस्वी कहानीकारों में यथा नानूराम संस्कर्ता, रानी लक्ष्मी कुमारी चूंडावत, नृसिंह राजपुरोहित, अन्नाराम सुदामा, विजयदान देथा, करणीदान बारहठ, यादवेंद्र शर्मा 'चंद्र', बैजनाथ पंवार, श्रीलाल नथमल जोशी आदि की कहानियाँ शामिल हैं, वहीं कहानी को आधुनिकता के मार्ग पर अग्रसर करने वाले प्रमुख कहानीकारों में सांवर दइया, भंवरलाल 'भ्रमर', मनोहर सिंह राठौड़, रामस्वरूप किसान, बुलाकी शर्मा, मालचंद तिवाड़ी आदि की कहानियाँ संग्रह में संकलित है। राजस्थानी के समकालीन महत्त्वपूर्ण कहानीकारों में चेतन स्वामी, भरत ओला, सत्यनारायण सोनी, मनोज कुमार स्वामी, प्रमोद कुमार शर्मा, मधु आचार्य 'आशावादी' आदि भी पुस्तक का हिस्सा बने हैं तो महिला कहानीकारों में चूंडावत के अलावा जेबा रशीद, बसंती पंवार, सावित्री चौधरी, आनंद कौर व्यास, सुखदा कछवाहा, रीना मेनारिया की चयनित कहानियाँ किताब में शामिल की गई हैं।

राजस्थानी कहानी के व्यापक और विस्तृत भवबोध को प्रस्तुत करते संग्रह में अनेक यादगार कहानियाँ देखी जा सकती हैं। ऐसा नहीं है कि यह राजस्थानी कहानी को हिंदी में ले जाने का पहला प्रयास हो, इससे पूर्व भी राजस्थानी कहानियों के हिंदी अनुवाद हेतु कतिपय प्रयास हुए हैं मगर एकसाथ शताधिक कहानियों को हिंदी जगत के माध्यम से विश्व साहित्य के समक्ष रखने का यह पहला प्रयास है। निश्चय ही इस ग्रंथ से राजस्थानी कहानी की वैश्विक उपस्थिति दर्ज होगी और सेतु भाषा हिंदी के माध्यम से अनुदित होकर राजस्थानी कहानी देश-दुनिया की अन्य भाषाओं में पहुँचेगी। कहना न होगा यह दुष्कर कार्य योग्य संपादक डॉ. नीरज दइया की कुशलता व समर्पित अनुवादकों के सद्प्रयासों का सुफल है। असल में ऐसे प्रयास अकादमियों व अन्य संसाधनों से युक्त संस्थानों को करने चाहिए, क्योंकि ऐसे कामों में अत्यंत श्रम व अर्थ की आवश्यकता होती है। इस ग्रंथ को पाठकों तक पहुँचाने के लिए के. एल. पचौरी प्रकाशन वाकई बधाई के हकदार हैं जिसने राजस्थानी मिट्टी की महक को हिंदी के माध्यम से देश-दुनिया में फैलाने का बीड़ा उठाया है। कुंवर रवीन्द्र के सुंदर आवरण से सुसज्जित यह संग्रह निश्चय ही कहानी प्रेमियों के लिए संकलन योग्य उपहार है।

समीक्षक : **डॉ. मदन गोपाल लढ़ा**
प्रधानाचार्य, 144 लढ़ा निवास, महाजन, बीकानेर
मो. 9982502969

साहित्य समज्या

लेखक : डॉ. कृष्णा आचार्य **प्रकाशक :** कलासन प्रकाशन, मॉडर्न मार्केट, माल गोदाम रोड, बीकानेर **प्रथम संस्करण :** 2018 **पृष्ठ :** 120 **मूल्य :** ₹ 250

'साहित्य समज्या' पुस्तक का शीर्षक ही पाठकों के मन में सहज जिज्ञासा पैदा करने वाला है। साहित्य शब्द तो प्रायः लिखने-पढ़ने बोलचाल में लिया जाता है मगर साहित्य के साथ समज्या! 'समज्या' हिन्दी का बहुत वजनी शब्द है किन्तु इसका उपयोग सहज ही में नहीं किया जाता। समज्या का अर्थ है-'सभा, गोष्ठी,

Rajteachers.in

मिलन स्थान, सभा स्थल, प्रतिष्ठा, नामवरी।' इस प्रकार साहित्य समज्या का आशय है, एक ऐसा सम्मानजनक मिलन स्थल जहाँ साहित्य के विभिन्न स्वरूपों के न केवल दर्शन होते है अपितु उनसे साक्षात्कार करते हुए साहित्य सरिता में अवराहन करने का सौभाग्य प्राप्त होता है। साहित्य समज्या कृति में डेढ़ दर्जन (18) अध्यायों के अन्तर्गत साहित्य से रू-ब-रू होने का अद्भुत अवसर पाठकों को मयस्सर है। सच में समज्या है यह पुस्तक।

संसार में जितने भी काम हो रहे हैं, उन सबकी अपनी तासिर होती है, अपना-अपना धर्म होता है। साहित्य की सृजनधर्मिता श्री गणेश आलेख में इसका विशद विवेचन बहुत ही सुन्दर ढंग से किया गया है। साहित्य सृजन बिना संवेदनशील मन के सम्भव नहीं है। साहित्य सृजन में मन की गहराइयों तक रची बसी करुणा व संवेदनशीलता जब सृजन (गद्य/पद्य) के रूप में बाहर आती है, तब हजारों-लाखों पाठकों के मन पर प्रभाव डालती है। सृजन यदि किसी के जीवन की दिशा बदलता है, तो वह सृजन की सफलता होती है। साहित्य व्यक्ति, परिवार, समाज व राष्ट्र को भीतर से प्रभावित करता है। सार्थक साहित्य में तोप, टैंक से अधिक ताकत होती है।

काव्य-प्रयोजन अथवा कवि कर्म नामक द्वितीय अध्याय में काव्य के प्रयोजन पर सांगोपांग प्रकाश डाला गया है। लेखिका के ये शब्द अन्दर तक झकझोरते हैं, 'उदात्त काव्य का उद्देश्य लोकोत्तर आनन्द प्रदान करना, चेतना का परिष्कार करना और जीवन मूल्यों की स्थापना करना माना जा सकता है। रसानुभूति काव्य को ब्रह्मानंद सहोदर बनाती है, अतः वही काव्य का सकल मूलभूत प्रयोजन है।' थोड़े शब्दों में बहुत ही सुन्दर प्रयोजन परिभाषा लेखिका ने दी है जो उनके अध्ययन को प्रमाणित करता है।

संस्कृत बहुत कारगर भाषा है। कदाचित संस्कृत से अधिक पूर्ण भाषा और कोई नहीं है। संस्कृत की उत्तराधिकारी भाषा हिन्दी है। पन्द्रह सौ वर्ष ईसापूर्व से लेकर अब तक के भाषा विकास पर चर्चा विस्तार भय के कारण यहाँ भले ही न करें लेकिन मध्यकालीन भारतीय आर्य भाषा (पाली, प्राकृत तथा अपभ्रंश काल-500 ई.पू.) के संदर्भ में हिन्दी भाषा के उद्भव एवं विकास में अपभ्रंश अथवा पुरानी हिन्दी के योगदान की चर्चा जरूर की जानी चाहिए। यह एक अनिवार्य अपेक्षा है जिसे साहित्य के विद्यार्थी को अवश्य पूरा करना चाहिए। इस अपेक्षा की संपूर्ति विदुषी लेखिका ने साहित्य समज्या के तीसरे सोपान में तथ्यों के साथ बहुत सुन्दर व अनुकरणीय ढंग से की है।

साहित्य में भाषा, भाव एवं तथ्यों की रोचक प्रस्तुति उसे पढ़ने के लिए पाठकों को मौन निमंत्रण देती है। इसके लिए साहित्य सृजक को स्वाध्याय की साधना करनी पड़ती है। वह समाज में नई आशा एवं विश्वास का वातावरण रचता है। सारा जगत उसका होता है वह किसी जाति, सम्प्रदाय का नहीं होता। शरदचन्द्र चटर्जी ने कहा है, 'साहित्य वह है जिसे पढ़ने से ऐसा लगे कि लिखने वाले ने सृजन में सब कुछ पुष्प की तरह प्रस्फुटित कर दिया है। साहित्यकार किसी विशेष जाति, सम्प्रदाय आदि का नहीं होता। वह हिन्दु, मुसलमान, यहुदी, ईसाई सब कुछ है।' लेखिका ने अध्याय चार से लेकर अध्याय तेरह एवं अध्याय सत्रह (कुल 11) में क्रमशः कबीर, सूरदास, गोस्वामी, तुलसीदास, भूषण, महादेवी वर्मा, मीराबाई, प्रेमचन्द, रामधारीसिंह दिनकर, आचार्य रामचन्द्र शुक्ल, आमीर खुसरो तथा मैथिलीशरण गुप्त के सृजन को आधार बनाकर सटीक वर्णन किया है। ये सभी साहित्यकार उच्च कोटि के शब्द मनीषि हैं। कबीर विलक्षण कवि, कवि ही नहीं बल्कि महाकवि है। सूर का बाल मनोविज्ञान तथा उनकी रचनाओं में झर-झर बहता वात्सल्य रस, तुलसी का लोक मंगल भाव, दिनकर की राष्ट्रीय चेतना, मैथिलीशरण गुप्त की नारी भावना समीक्ष्य कृति में बार-बार पढ़ने की जैसे अपील करती है। साहित्य में रुचि रखने वाले हर व्यक्ति को यह पुस्तक पढ़नी चाहिए।

पुस्तक के अंतिम भाग में विविध पाँच अध्यायों में हिन्दी साहित्य सृजन में द्विवेदी काल के काव्यात्मक योगदान, समकालीन कथा साहित्य में महिला कथाकारों के योगदान, हिन्दी साहित्य में संस्मरण विधा की विकास यात्रा तथा हिन्दी साहित्य में राष्ट्रीय चेतना व सांस्कृतिक गरिमा की काव्यधारा पर विस्तार से विवेचन किया गया है। कुल मिलाकर 'साहित्य समज्या' साहित्य की अनूठी रसधारा है जो साहित्य के लिए साहित्य शिरोमणी प्रेमचंद द्वारा व्यक्त इन मानदण्डों पर खरी उतरती है, 'जिस साहित्य से हमारी सुरुचि न जागे, आध्यात्मिक और मानसिक तृप्ति न मिले, हमारे में गति और शक्ति पैदा न हो, हमारा सौन्दर्य प्रेम न जाग्रत हो, जो हममें संकल्प और कठिनाइयों पर विजय पाने की सच्ची दृढ़ता न उत्पन्न करे, वह हमारे लिए बेकार है, वह साहित्य कहलाने का अधिकारी नहीं है।' प्रेमचंद जी ने जो अपेक्षाएँ एवं साहित्य विचार के सम्बन्ध में इस परिभाषा में व्यक्त किए हैं, वे सब के सब साहित्य समज्या में मौजूद हैं। अतः वह साहित्य कहलाने की अधिकारी है।

लेखिका डॉ. कृष्णा आचार्य की दृष्टि खोजपरक है। वह शोध एवं अनुसंधान में निरन्तर संलग्न रहती है। 'जिन खोजा तिन पाइया गहरे पानी पेठ' वाली उक्ति उनके अध्ययन एवं लेखन पर लागू होती है। इन्हें बहुत-बहुत बधाई एवं सतत् लेखन के लिए शुभकामनाएँ। पुस्तक की गत्तेदार मजबूत बाइंडिंग, प्रयुक्त कागज एवं मुद्रण उत्तम है। कलासन प्रकाशन के उत्तम प्रकाशनों में यह पुष्प गुणवत्ता की दृष्टि से कहीं कम नहीं है। अस्तु कलासन को भी बधाई। यह पुस्तक शिक्षक-शिक्षार्थियों में ही नहीं अपितु समग्र साहित्य जगत में अपनी विशिष्ट पहचान बनाएगी। इति शुभम्।

समीक्षक : **ओम प्रकाश सारस्वत**
सेवानिवृत्त संयुक्त निदेशक, ए-विनायक लोक,
बाबारामदेव रोड, गंगाशहर (बीकानेर)
मो. 9414060038

मेह बाबा आया

लेखक : ओमप्रकाश तँवर **विधा :** हिन्दी बाल कहानियाँ **प्रकाशक :** सनातन प्रकाशन, जयपुर **प्रथम संस्करण :** 2019 **पृष्ठ :** 100 **मूल्य :** ₹ 160

चूरू के पुरस्कृत शिक्षक श्री ओमप्रकाश तँवर एक आदर्श शिक्षक के रूप में अपनी अलग पहचान रखते हैं। उन्होंने लम्बे समय तक शिक्षा विभाग में अंग्रेजी विषय के प्राध्यापक के रूप में सेवा देकर विद्यार्थियों को शिक्षित किया है तथा

Rajteachers.in

शिक्षकों को सेवा पूर्व और सेवारत प्रशिक्षण प्रदान किया है। अपनी उम्र के आठवें दशक में उन्होंने अपना ध्यान बालकों पर केन्द्रित करते हुए उनके लिए बाल कहानियाँ लिख रहे हैं। आज बाल साहित्य का नितान्त अभाव है। इस अभाव की पूर्ति के लिए श्री ओमप्रकाश तँवर आगे आए हैं। उन्होंने गत जनवरी माह में राजस्थानी भाषा में बाल कहानियों की पुस्तक ''मेह बाबो आयो'' की रचना की और बाल पाठकों की आवश्यकता को ध्यान में रखते हुए अब उन्होंने अपनी उसी पुस्तक का हिन्दी अनुवाद कर बालकों को भेंट किया है।

बालकों को पशु-पक्षियों को देखने और उनकी कहानियाँ सुनने का शौक रहता है। जब वे बिल्ली की म्याऊँ-म्याऊँ, मुर्गे की कुकडू-कू, कबूतर की गुटर-गूं और मोर की मे-आओ-मे-आओ सुनते हैं तो वे खुश होकर खिलखिलाने लग जाते हैं। तँवरजी ने अपनी कहानियों में इन्हीं पशु-पक्षियों को पात्र बनाकर कहानियों में रोचकता भर दी है।

पुस्तक में 17 कहानियाँ हैं जिनमें से 10 कहानियाँ पंचतन्त्र व हितोपदेश की तर्ज पर लिखी गई है। पुस्तक की प्रत्येक कहानी बाल पाठकों का मनोरंजन करवाने के साथ ही वर्तमान समाज में व्याप्त बुराइयों से दूर रहने और अच्छी आदतें धारण करने की सीख देती है। इस संकलन की पहली कहानी है-''मेह बाबा आया''। मेह राजस्थान में जीवन का आधार है। यहाँ का मोर पक्षी भी बादलों को देखकर अपने पंखों को फैलाकर व खुश हो कर नाचने लग जाता है। बरसात में नाचते-कूदते बालकों का उल्लास इस कहानी में बहुत ही चतुराई से प्रकट हुआ है। कहानी ''काली कुतिया ब्याई'' बालकों की पशुओं के प्रति संवेदना को जगाती हे। कुतिया के पिल्लों के साथ खेलते हुए बालकों को असीमित आनन्द की अनुभूति होती है। कहानी ''इन्द्रदेव की सीख'' में पर्यावरण को संरक्षित रखने व वृक्षों की हरियाली को खड़ा करने की बात को बहुत ही सुन्दर ढंग से रखा गया है। जब हम कहानी ''उपकार का बदला'' पढ़ते हैं तो समझ में आता है कि पखेरू कितने बफादार होते हैं। बच्चे जब कहानी ''डॉक्टर हाथी अस्पताल'' पढ़ लेंगे तो वे बड़े होकर दुपहिया वाहन चलाते समय अपने सिर पर निश्चित ही हेलमेट लगाएगे।

''बिल्ली मौसी का गंगा स्नान'' कहानी बालकों को लोटपोट करने वाली है। इस कहानी को पढ़कर बालक अपना मनोरंजन तो करेंगे ही इससे वे यह भी सीखेंगे कि अन्धानुकरण नहीं करना चाहिए। ''गुड्डे-गुड्डी का विवाह'' लड़कियों का छोटी उम्र में विवाह न करने और ''पानी है अनमोल'' कहानी जल को सोच समझकर खर्च करने की सीख देती है। ''सौगन्ध'' शरारती बालक की कहानी है तो ''स्वर्ण कलश'' संगठन के महत्त्व को रेखांकित करने वाली कहानी है। ''नींद उड़ा देते'' कहानी बालकों को प्रातः जल्दी उठने सीख देती है तो ''भूरी बकरी'' कहानी जरूरत पड़ने पर एक दूसरे की मदद करने की बात प्रभावी ढंग से बालकों के समक्ष प्रस्तुत करती है।

''तीर्थ यात्रा'' नए तेवर की कहानी है तो ''होम वर्क'' बालकों के ऊपर पढ़ाई के बोझ की ओर अभिभावकों का ध्यान आकर्षित करती है।

तँवरजी ने लम्बे समय तक शिक्षा विभाग में बालकों के मध्य में रहकर अपनी सेवाए दी है। विशेष रूप से डाइट में रहकर छात्राध्यापकों को पढ़ाया है। बाल मनोविज्ञान और शिक्षा मनोविज्ञान विषयों में उनकी गहरी पैठ है। इसलिए बालकों की आवश्यकताओं को अपने ध्यान में रखकर ही उन्होंने कहानियों का सृजन किया है।

रचनाकार की भाषा सरल है तथा छोटे बालकों के समझने योग्य है। पुस्तक का आवरण पृष्ठ मनमोहक है तथा प्रत्येक कहानी के साथ चित्र भी दिए गए हैं जो बाल पाठकों को पुस्तक पढ़ने के लिए आकर्षित करते हैं। इस महंगाई के युग में पुस्तक का मूल्य भी उचित प्रतीत होता है।

मुझे उम्मीद है कि अध्यापक वृन्द इस पुस्तक को पूरा महत्त्व देंगे और बच्चों को इस बात के लिए तैयार करेंगे कि वे बाल-सभाओं में इसकी कहानियों का वाचन करें। मेरा अध्यापक बन्धुओं को सुझाव है कि वे बच्चों से पुस्तक की कहानियों का मंचन करवाए, जिसकी पूरी गुंजाइश है।

पुस्तक लेखन के लिए तँवरजी को बधाई एवं साधुवाद।

समीक्षक : **डॉ. राजकुमार शर्मा,**
मुख्य जिला शिक्षा अधिकारी, बीकानेर (राज.)
मो. 8432856101

समय की कीमत

उन दिनों बापू साबरमती आश्रम में थे। एक दिन गाँव के कुछ लोग उनके पास आए और बोले, 'बापू कल हमारे गाँव में एक सभा हो रही है, यदि आप समय निकालकर जनता को देश की स्थिति व स्वाधीनता के प्रति कुछ शब्द कहें तो आपकी अति कृपा होगी।'

गाँधी जी ने अपनी समय सारणी देखी और बोले, 'आपने अपने कार्यक्रम का क्या समय रखा है?' मुखिया बोला, 'बापू हमने चार बजे का समय निश्चित किया हुआ है।' गाँधी जी ने उन्हें चार बजे आने का आश्वासन दे दिया। सभा का मुखिया बोला, 'बापू जी, आपको सभा-स्थल पर पहुँचने में परेशानी न हो, इसलिए मैं एक व्यक्ति को आपको लाने के लिए भेज दूँगा।'

गाँधी जी पौने चार बजे तैयार हो गए, लेकिन मुखिया का आदमी उनके पास नहीं पहुँचा। वे चिंतित हो गए। उन्होंने सोचा, यदि मैं समय पर नहीं पहुँचा तो लोग क्या कहेंगे ? उनका समय भी व्यर्थ होगा। उनके मन में एक विचार आया और उन्होंने उसी पर अमल करने का निश्चय किया।

कुछ समय पश्चात मुखिया का व्यक्ति गाँधी जी को गाड़ी से लाने के लिए उनके पास पहुँचा और उन्हें वहाँ न पाकर परेशान हो गया। कुछ देर इंतजार करने के बाद वह चिंतित होकर सभास्थल की ओर भागा। वहाँ पहुँचकर वह यह देखकर हैरान रह गया कि गाँधी जी अपना भाषण दे रहे थे और गाँववासी बड़े तल्लीन होकर सुन रहे थे।

भाषण समाप्त होने के बाद वह व्यक्ति गाँधी जी से बोला, 'बापू , मैं आपको लेने आश्रम गया था, लेकिन आप वहाँ पर नहीं थे, फिर आप यहाँ कैसे पहुँचे ?' गाँधी जी बोले, 'जब आप पौने चार बजे तक भी नहीं पहुँचे तो मुझे चिंता हुई कि मेरे कारण इतने लोगों का समय नष्ट होगा। इसलिए मैंने साइकिल उठाई और यहाँ पर पहुँच गया।'

यह जानकर मुखिया और वह व्यक्ति बहुत शर्मिंदा हुए। गाँधी जी बोले, 'समय बहुत मूल्यवान होता है। हमें हमेशा समय का सदुपयोग करना चाहिए।'

Rajteachers.in

बाल शिविरा

अपनी राजकीय शालाओं में अध्ययनरत विद्यार्थियों द्वारा सृजित एवं स्वरचित कविता, गीत, कहानी, बोधकथा एवं चित्रों को इस स्तम्भ में प्रकाशन हेतु नियमित रूप से संस्थाप्रधान/बालसभा प्रभारी भिजवाएं। श्रेष्ठ का चयन करते हुए इस स्तम्भ में प्रकाशन किया जाता है।

-व. संपादक

मेरे अपने

दादा जैसे पेड़ बरगद का रखे
ख्याल घर में वह सब का।
दादी का ना कोई सानी रोज
सुनाती हमें कहानी।।
पापा का है प्यार अनोखा
जैसे ठण्डी हवा का झोंका।।
माँ की ममता बड़ी प्यारी
सब से सुन्दर सबसे न्यारी।
दीदी, भैया हैं दोस्त प्यारे
जैसे आसमान में चाँद तारे
ऐसा सुन्दर परिवार है मेरा।
अटूट बंधन प्यार है गहरा।।

राखी कँवर, कक्षा-12

मैं इस देश का वासी हूँ

हाँ मैं इस देश का वासी हूँ,
इस माटी का कर्ज चुकाऊँगा।
जीने का दम रखता हूँ तो,
देश के लिए मरकर भी दिखाऊँगा।
नजर उठाकर न देखना
ऐ दुश्मन मेरे देश को
मरूँगा जरूर पर मरने से पहले
तुझे मार कर ही जाऊँगा।
कसम मुझे इस माटी की
कुछ ऐसा मैं कर जाऊँगा
हाँ मैं इस देश का वासी हूँ,
इस माटी का कर्ज चुकाऊँगा।

गौरव मीणा, कक्षा-12

किसान

तमन्नाओं की महफिल तो
हर कोई सजाता है,
पूरी उसकी होती है जो तकदीर
लेकर आता है एक वो है जो
दिन भर दूसरों की खातिर
अपनें खेतों को सहलाता है,
फिर भी उसको ये जमाना
हर बार ठुकराता है
उसकी मुस्कान खेतों की
कलियों में है बसती
पर उसकी ज़िंदगी हमेशा
दुःखों में है कटती
ना किसी से कुछ कहता,
न कभी कुछ जताना
फिर भी ये ज़माना रहा है
उससे बेगाना।।
ये वो है जो हमारे लिए
दिन रात मेहनत करता है,
और हम में से कोई उससे
मतलब नहीं रखता है।
कोशिशें वो भी करता है
अपनी तकदीर बदलने की
मगर कोशिश भी पूरी उसकी होती है
जो तकदीर लेकर आता है।

सुरजीत प्रजापत,
कक्षा-11

फागुन का महीना

फागुन का महीना आया
होली का त्योहार लाया
आओ मिलकर खुशी मनाएँ
अपनों को हम रंग लगाएँ
निकल पड़ी बच्चों की टोली
सब मिलकर गाते हैं होली
कहीं है रंग संतरी पीला
कहीं है लाल, गुलाबी, नीला
फूलों से खेलें हम होली
नए-नए हम पकवान खाएँ
किसी को न हम ठेस पहुँचाए।

लक्ष्मी, कक्षा-12

माँ का सम्मान

जिस माँ ने तुम्हें जनम दिया
भूल गए तुम उस माँ को आज
जिस माँ ने तुम्हें चलना सिखाया
उसके बुढ़ापे को बोझ समझते हो आज
जिस माँ ने तुम्हें पढ़ाया-लिखाया
उसके अनपढ़ होने पर शमति हो आज
जिस माँ ने अपने मुंह का
निवाला तुम्हें खिलाया
उस माँ को दो वक्त की
रोटी के लिए तरसाते हो आज
माँ का करो सम्मान तुम
फिर न लौटेगा तुम्हारे पास ये आज

सौरभ भदौरिया, कक्षा-10

Rajteachers.in

मेरी माँ

आज मै एक बात बताऊँगा
अपनी माँ की कहानी सुनाऊँगा
जब मैं छोटा था ऊँगली
पकड़ चलाती थी
अपने हाथों से खाना खिलाती थी।
मुझे पढ़ा-लिखा कर
आत्मनिर्भर बनाया
मुझे मेरे भविष्य को
संवारना सिखाया।
मैं नौकरी लगा और
भविष्य हेतु जगा।
हमेशा घर से बाहर रहने लगा।
माँ घर पर आने को कहती
पर मेरे नहीं जाने पर अकेली रहती
मैंने बाहर ही ब्याह रचाया।
अपना अलग परिवार बसाया
जिसके चरणों की लेनी
चाहिए थी धूल
उस माँ को मैं गया भूल
फिर एक दिन ऐसा आया।
दुःखों का काला बादल छाया।
माँ नहीं है अब मेरे साथ में।
केवल उसकी अस्थियां है
मेरे हाथ में।

बजीर, कक्षा-11

हिन्दी

पापा की डाँट हिंदी है,
माँ की लोरी हिंदी है
बचपन की भाषा हिंदी है
गाती हूँ वह हिंदी है
गुनगुनाती हूँ वह हिंदी है
मेरे विचार भी हिंदी है
मेरे संस्कार भी हिंदी है
सबको प्यारी हिंदी है
सबसे न्यारी हिंदी है
हिंद की भाषा हिंदी है
हमारी भाषा हिंदी है

सुनीता, कक्षा-6

ध्वज

तीन रंग का नहीं वस्त्र
ये ध्वज देश की शान है,
हर भारतीय के दिलों का
स्वाभिमान है,
यही है गंगा, यही है हिमालय,
यही हिन्द की शान है,
और तीन रंगों में रंगा हुआ
ये अपना हिन्दुस्तान है।

सूरज, कक्षा-7

ममता की छाँव

घुटनों से रेंगते-रेंगते।
कब पैरों पर खड़ा हुआ।।
तेरी ममता की छाँव में।
जाने कब बड़ा हुआ।।
काला टीका, दूध-मलाई।
आज भी सब कुछ वैसा है।
मैं ही मैं हूँ हर जगह
प्यार यह तेरा कैसा है?
सीधा-साधा, भोला-भाला।
मैं ही सबसे अच्छा हूँ।।
कितना भी हो जाऊँ बड़ा।
माँ! मैं आज भी तेरा बच्चा हूँ।।
न जाने कितने दुःख सहन
तूने किये माँ।
गीले में तू सोयी,
सूखे में मुझे सुलाया माँ।।
भूखी-प्यासी रहकर भी
हमें कंधों पर बिठाया माँ।।
स्वयं अनपढ़ रहकर भी
हमें पढ़ना सिखाया माँ।
तेरी ममता की छाँव में।
जाने कब बड़ा हुआ।।
तू कहती थी तेरा चाँद हूँ मैं।
और चाँद हमेशा रहता है।।
दुनिया जाने या न जाने मैं सच्चा हूँ।
माँ! मैं आज भी तेरा बच्चा हूँ।।
कितना भी हो जाऊं बड़ा।
माँ! मैं आज भी तेरा बच्चा हूँ।।
तेरी ममता की छाँव में,
जाने कब बड़ा हुआ।

देवेन्द्र यादव, कक्षा-10

राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय इंदिरा गाँधी नहर परियोजना, बीकानेर के विद्यार्थियों की हस्तलिखित स्वरचित रचनाओं को एक साथ प्रस्तुत करते हुए हमें अपार हर्ष हो रहा है।

बाल मन को रचनात्मक कार्यों के लिए प्रेरित करने, उनमें सृजन के संस्कार देने हेतु विद्यालय स्तर से ही कविता, कहानी लिखने हेतु उचित वातावरण प्रदान करना चाहिए। प्रत्येक विद्यालय अपने विद्यार्थियों की सृजनात्मक अभिव्यक्ति को 'बाल शिविरा' में प्रकट करने का अवसर दे सकते हैं। हमें विद्यालयों के छोटे-छोटे बाल रचनाकारों की रचनाओं का बेसब्री से इंतजार रहता है। –वरिष्ठ संपादक

Rajteachers.in

शाला प्रांगण से

अपने शाला परिसर में आयोजित समस्त प्रकार की बालोपयोगी एवं शैक्षिक गतिविधियों को पाठकों तक पहुँचाने का विनम्र प्रयास किया जाता है अतः आयोजित कार्यक्रमों का प्रतिवेदन बनाकर **shalaprangan.shivira@gmail.com** पर भिजवाकर सहयोग करें।

-व. संपादक

सामुदायिक बाल-सभा का आयोजन

गंगापुर। राजकीय माध्यमिक विद्यालय, मालियों की चौकी, तहसील-गंगापुर सिटी, जिला-स.मा. (राजस्थान) में दिनांक 30.08.2019 को राज्य-सरकार शिक्षा विभाग के आदेश की अनुपालना में राजकीय माध्यमिक विद्यालय मालियों की चौकी में सामुदायिक बाल-सभा का आयोजन प्रात: 8.00 से 11.00 बजे के मध्य रखा गया। बाल-सभा में विद्यालय के छात्र-छात्राओं ने कविता, कहानी, चुटकुले, श्लोक आदि की प्रस्तुति दी। बाल-सभा में श्री रामनिवास मीणा J.En. (कनिष्ठ अभियंता) व श्री मनमोहन दुबे (O.A. साहब) निरीक्षण करने पधारें। बाल सभा में संस्थाप्रधान श्री मुबारिक हुसैन जी व अन्य अध्यापकों ने भी विभिन्न विषयों पर अपने विचार रखें। बाल सभा का सफल संचालन श्री विश्वम्भर दयाल पाण्डेय वरिष्ठ अध्यापक ने किया।

बालसभा में पढ़ाई करने एवं पेड़ों की सुरक्षा व स्वच्छता की दिलवाई शपथ..

बीकानेर। राजकीय आदर्श उच्च माध्यमिक विद्यालय शिवनगर में स्कूल शिक्षा परिषद जयपुर एवं शिक्षा निदेशक माध्यमिक शिक्षा के आदेशानुसार सामुदायिक बालसभा का आयोजन पंचायत भवन के सामने सार्वजनिक स्थान पर किया गया। कार्यक्रम की शुरुआत सरस्वती के चित्र पर दीप प्रज्वलित कर की गई। कार्यक्रम की अध्यक्षता प्रधानाचार्य श्री रूपेंद्र सिंह की बाल सभा को संबोधित करते हुए कहा कि बच्चों को मन लगाकर पढ़ाई करनी चाहिए। कार्यक्रम अधिकारी श्री मोहरसिंह सलावद ने बालसभा को संबोधित करते हुए छात्रों से कहा कि आप नियमित विद्यालय आएँ ओर जो कार्य आपको शिक्षक की ओर से दिया जाता है उसे समय पर करें साथ ही अपनी विद्यालय में जो नए पेड़ लगाएँ हैं उनकी देखभाल करें, जब तक बड़े नहीं हो जाएं, साथ ही यातायात नियमों की जानकारी दी। शिक्षक श्री सुजानसिंह राठौड़ एवं श्री तेजपाल मेघवाल ने बच्चों को स्वच्छता के बारे में विस्तार से बताया। इस अवसर पर अभिभावकों को छात्रों के प्रथम परख के अंक सुनाएं गए। इस अवसर पर विभिन्न प्रतियोगिताओं का आयोजन किया गया जिसमें भाग लेने वाले सभी विद्यार्थियों का सम्मान किया गया। बाल सभा में मन लगाकर पढ़ाई कर अपना लक्ष्य प्राप्त करने एवं पेड़ों की सुरक्षा एवं स्वच्छ रहने तथा अपने आसपास साफ सफाई रखने की सभी उपस्थित 412 बच्चों को शपथ दिलवाई। बाल सभा में शिक्षक सर्वश्री मोहरसिंह सलावद, सुजान सिंह राठौड़, दयाराम, प्रभुराम, रणछोड़ सिंह सोढ़ा, प्रेमसिंह, किरण प्रजापत, सहित जुगतसिंह, हरचंद राम, तेजमाल सिंह, ताराराम, पारू देवी, विशनाराम, बिनुराम, भूरसिंह आदि अभिभावक मौजूद रहे।

जिलास्तरीय भाषण प्रतियोगिता का आयोजन

चूरू। रा.बागला.उ.मा. चूरू में आयोजित जिलास्तरीय भाषण प्रतियोगिता का आयोजन गाँधीजी की 150वी जंयती पर किया गया। आयोजित जिलास्तरीय प्रतियोगिता में भाग लेकर लोटे विजेता विधार्थियों का रा.मा.वि.दांदू विधालय स्टाफ व प्रधानाध्यापक, ग्राम पंचायत घांघू उपसरपंच श्री लखेंद्रसिंह ने विधार्थियों का स्वागत व अभिनन्दन किया। संस्थाप्रधान श्री नेमीचंद सुडिया ने इस अवसर पर बताया कि शिक्षण के साथ सह शैक्षिक गतिविधियों में विधार्थियों को भाग लेना चाहिए। इससे विधार्थियों का शारीरिक व मानसिक विकास होता है। रा.बागला.उ.मा. चूरू में आयोजित जिलास्तरीय भाषण प्रतियोगिता में विधालय की छात्रा अंजू कुमारी ने तीसरा स्थान तथा हेमलता ने निबन्ध प्रतियोगिता में तीसरा स्थान प्राप्त किया। उपसरपंच श्री लखेंद्र सिंह ने विधार्थियों को प्रतीक चिन्ह् 500-500 रुपये नगद पुरस्कार दिया। इस अवसर पर सर्व श्री रामचंद्र ढाका, राजेशकुमार, सुल्तान सिंह, बजरंगलाल, संजय कुमार, जयसिंह व राकेश आदि उपस्थित थे।

Rajteachers.in

शाहजहांपुर में बालसभा

अलवर। रा.आ.उ.मा.वि. शाहजहांपुर (नीमराणा) अलवर में दिनांक 30.8.2019 को विद्यार्थियों एवं शाला परिवार द्वारा सामुदायिक बालसभा बाबा भगतजी मंदिर प्रांगण के मीना चौपाल पर आयोजित की गई। बालक बालिकाओं ने विभिन्न विषयों पर बाल कविता, गायन, सड़क सुरक्षा एवं ट्रेफिक नियमों की जागरूकता, नशे के दुष्प्रभाव एवं बचाव तथा राजीव गाँधी कैरियर पोर्टल की जानकारी आदि चौपाल पर सभी ग्रामीणों की बीच साझा की। बच्चों सांस्कृतिक प्रस्तुतियों में श्री कृष्णमहिमा ने सभी को मंत्रमुग्ध कर दिया। ग्रामीणों ने बच्चों को पुरस्कार प्रदान किए तथा विद्यालय की कार्यशैली को खूब सराहा। इस अवसर पर पूर्व सरपंच संघ के अध्यक्ष श्री शैतानसिंह मीना, एसडीएमसी सदस्य श्री उपेन जोशी, पीईईओ श्री विनोद कुमार शर्मा, बालसभा प्रभारी श्रीमती सरोज यादव, सुनीता गोदारा एवं पुष्पा यादव आदि ने बालसभा के महत्त्व एवं आवश्यकता पर प्रकाश डालते हुए सरकारी योजनाओं की महत्त्वपूर्ण जानकारी चार्ट के माध्यम से समझाई। व्यारूयाता श्रीमती पुष्पा यादव ने सभी का आभार जताया।

श्री टॉक बने सहायक लीडर ट्रेनर (स्काउट)

राजसमंद। कुंभलगढ़ परिक्षेत्र के राजकीय आदर्श उच्च माध्यमिक विद्यालय कुंचोली के स्काउटर राकेश टाँक ने हासिल की सहायक लीडर ट्रेनर (स्काउट) की योग्यता। प्रतापगढ़ में आयोजित 56 वे मंडलस्तरीय वार्षिक अधिवेशन में जिला कलेक्टर प्रतापगढ़ श्याम सिंह राजपुरोहित के मुख्य आतिथ्य में व मंडल उपप्रधान श्री सुरेश चंद्र दोशी, राज्य संगठन आयुक्त गाइड शकुंतला वैष्णव, सीडीईओ श्री युगल बिहारी दाधीच, सहायक राज्य संगठन आयुक्त श्री दिलीप माथुर, मंडल श्री सचिव सुरेश खटीक, मंडल कोषाध्यक्ष श्री पंकज जानी व सीओ स्काउट राजसमंद श्री सुरेंद्र कुमार पांडे के आतिथ्य में श्री राकेश टाक को राष्ट्रीय मुख्यालय नई दिल्ली द्वारा प्रदान बीट्स व ऑन रेबल चार्ज प्रमाण पत्र समारोह में ससम्मान प्रदान किया गया। श्री टांक राजसमंद जिले में सहायक लीडर ट्रेनर (स्काउट) की योग्यता हासिल करने वाले पहले स्काउटर बने।

दलपतपुरा में भामाशाह ने दिया 10 लाख का चैक

हनुमानगढ़। रा.आ.उ.मा.वि. दलपतपुरा, नोहर में स्थानीय निवासी भामाशाह श्री रामेश्वरलाल तनाण सेवा निवृत कार्यालय अधीक्षक (कृषि विभाग) ने स्वतंत्रता दिवस के मौके पर उपस्थित गणमान्य महानुभावों व समस्त स्टाफ के समक्ष विद्यालय को मुख्यमंत्री जन सहभागिता योजनान्तर्गत हॉल निर्माण (पुस्तकालय कम वाचनालय) बनाने हेतु 10 लाख रुपए का चैक संस्थाप्रधान श्रीमती यशोदा देवी को भेंट किया। इसके अलावा 11,000 रुपए श्री यशपाल बुरड़क, एक दरी 15 गुणा 12 फुट की श्री सतवीर सहारण और 6 वाटर कैम्पर 20 लीटर स्टाफ द्वारा शाला को भेंट किए गए। इस पुनीत व नेक कार्य के लिए श्री तनाण जी का विशेष आभार प्रकट करते हुए साफा, शॉल, श्रीफल के साथ भामाशाह सम्मान-पत्र प्रदान कर सम्मानित किया गया एवं अन्य भामाशाहों को भी आभार प्रकट करते हुए सम्मानित किया गया तथा उनके उत्तम स्वास्थ्य की मंगल कामना करते हुए स्वतन्त्रता दिवस की शुभकामनाएं संस्थाप्रधान द्वारा प्रकट की गई।

भेडना में विद्यार्थियों ने मनाया शिक्षक दिवस

बाड़मेर, गुड़ामालानी। राजकीय आदर्श उच्च माध्यमिक विद्यालय भेडाना, गुड़ामालानी में शिक्षक दिवस हर्षोल्लास से मनाया गया। कार्यक्रम का शुभारंभ माँ शारदे व भारत के द्वितीय राष्ट्रपति एवं महान शिक्षक डॉ. सर्वपल्ली राधाकृष्णन के चित्र के समक्ष दीप प्रज्ज्वलित कर किया गया। कार्यक्रम में विद्यार्थियों ने हमारी सदियों पुरानी गुरु-शिष्य परम्परा के अनुरूप अपने सभी गुरुजनों का तिलक लगाकर, रोली बांधकर, श्रीफल व कलम देकर अभिवादन कर आशीर्वाद लिया। कार्यक्रम में प्रधानाचार्य श्री रामेश्वर लाल ने शिक्षक दिवस पर उद्बोधन देते हुए कहा कि शिक्षक कभी साधारण नहीं होता है। वो एक ऐसी पोध तैयार करता है जो राष्ट्र निर्माण में अहम भूमिका निभाती है। व्याख्याता श्री दुर्गाराम गोयल ने डॉ. सर्वपल्ली राधाकृष्णन के जीवन पर प्रकाश डालते हुए कहा कि सभी शिक्षकों को विद्यार्थियों की योग्यता को निखारने का निरन्तर प्रयास करना चाहिए। व्याख्याता श्री नरपत परमार ने बताया कि शिक्षक की भूमिका बहुआयामी होती है, वो एक अच्छा शिक्षक होने के साथ साथ एक बेहतरीन समाज सुधारक व विद्यार्थियों का भविष्य निर्माता होता है। वो विद्यार्थियों के जीवन में आने वाली हर चुनौतियों के लिए उन्हें तैयार करता है व उनके चरित्र को आकार देकर उज्ज्वल बनाता है। कार्यक्रम में व्याख्याता सर्व श्री मनोज सोलंकी, पूनमाराम व हेमेंद्र कुमार विश्नोई ने भी अपने विचार रखे। विद्यार्थियों में से निम्बाराम, रमकु कुमारी, नजीर खान, मुकेश कुमार ने भी शिक्षक दिवस पर अपने विचार व्यक्त किए तथा भागवती कुमारी ने काव्य पाठ द्वारा गुरुमहिमा का बखान किया। कार्यक्रम में सर्व श्री जितेन्द्र गोदारा व.अ., भट्टाराम व.शा.शि., फरसाराम गर्ग अ., कौशल राम अ., बाबूराम गोयल अ. सावित्री देवी अ., धीराराम व.अ. गोपाल लाल खटिक पु.अ. सहित सैकड़ों विद्यार्थी उपस्थित रहें। कार्यक्रम का सफल संचालन कक्षा बारहवीं के छात्र केवाराम पटेल ने किया।

Rajteachers.in

उलियाना में भामाशाह ने किया कम्प्यूटर मयप्रिंटर भेंट

सवाईमाधोपुर। ग्राम पंचायत भदलाव के उलियाना गाँव के लोगों नें राउप्रावि. उलियाना में संसाधनों की उपलब्धता के लिए खुले मन से दान एवं सहयोग भामाशाहों ने दिया है। विद्यालय के पंचायत प्रारंभिक शिक्षा अधिकारी श्री राजेश कुमार शर्मा एवं स्टाफ के सदस्यों द्वारा ग्रामीणों को विद्यालय में संसाधनों के संबंध में आवश्यकता से अवगत कराया तो ग्रामीणों ने अपने हाथ खोलते हुए एक लाख रुपए के करीब सहयोग राशि एकत्र कर विद्यालय को दान दी। पीईईओं ने बताया कि ग्रामीणों ने राउप्रावि. उलियाना विद्यालय के लिए कम्प्यूटर मय प्रिंटर, फर्नीचर, आलमारी सहित अन्य सामग्री उपलब्ध करवाई। संस्थाप्रधान ने सभी भामाशाहों का आभार व्यक्त करते हए सम्मानित किया।

सिणधरी ब्लॉक के विद्यालय में शिक्षक ने अपनी पुत्री की स्मृति में करवाया पौधारोपण

बाड़मेर। राजकीय उत्कृष्ट उच्च माध्यमिक विद्यालय, लोलो की ढाणी, सिणधरी में हरित विद्यालय अभियान को गति प्रदान करते हुए विभिन्न प्रकार के फूलों व फलों के पौधे लगाकर वाटिका को तैयार किया गया। वाटिका के लिए विभिन्न किस्मों के पौधे संस्थाप्रधान श्री सुखदेव जीनगर ने अपनी स्वर्गीय बेटी सरोज चौहान की स्मृति में उनके जन्म दिवस पर भेंट करते हुए बेटी बचाने का संदेश भी दिया। उन्होंने कहा कि आज हमें 'बेटी बचाओ-बेटी पढ़ाओ और वृक्ष लगाओ' पर विशेष ध्यान देते हुए प्रकृति व संस्कृति के संरक्षण की आवश्यकता है। बच्चों को पौधों की सुरक्षा करने का आह्वान किया। नवनिर्मित वाटिका के पौधों की सुरक्षा व देखभाल के बेटियों को भी भागीदार बनाया। इस अवसर पर विद्यार्थियों के अलावा निर्मला स्वामी सर्वश्री भंवरराम, नाहरसिंह, छोटूसिंह, पी.सी. लोल, ठाकराराम, महेश कुमार, व छात्रा अनिता, अणीस, व जसोदा मौजूद रहकर सहयोग किया।

भामाशाह ने की आलमारी भेंट

बूंदी। राजकीय माध्यमिक विद्यालय, बम्बूली ब्लॉक, नैनवा में पूर्व में कार्यरत शिक्षक व वर्तमान में रा.बा.उ.मा.वि. नैनवां में कार्यरत श्री सुगनचन्द मीणा अध्यक्ष शिक्षक संध राष्ट्रीय, उपशाखा नैनवां को स्थानीय विद्यालय में प्रधानाचार्य श्री कैलाश चन्द्र गोस्वामी के सेवा निवृति के अवसर पर आमन्त्रित श्री सुगनचन्द मीणा ने विद्यालय में 5000 रु. लागत की एक आलमारी भेंट की। संस्थाप्रधान ने श्री गोस्वामी एवं श्री मीणा को सम्मानित किया।

राज्यस्तर पर सम्मानित शिक्षक का किया बहुमान

राज्यस्तर पर शिक्षक सम्मान 2019 प्राप्त कर लौटे केसाराम प्रबोधक रा.उ.प्रा.वि. निम्बला नाडा मेली का उनके पैतृक गाँव अर्जियाना रा.मा. विद्यालय में प्रधानाध्यापक श्री हीराराम परिहार, समस्त स्टाफ व ग्रामीणों द्वारा तथा पीईईओ क्षेत्र मेली में प्रधानाचार्य रविराज सिंह सिद्धू, समस्त स्टाफ पीईईओ क्षेत्र मेली समस्त विद्यालयो के संस्थाप्रधान व ग्रामीणों द्वारा भव्य स्वागत किया गया। इस अवसर पर सर्व श्री हनुमानराम चौधरी सीबीईओ सिवाना, दीपाराम चौधरी सीबीईओ समदड़ी, राष्ट्रीय अवार्ड से सम्मानित सालगराम परिहार बालोतरा, सोनाराम गर्ग पीईईओ देवन्दी, पीताम्बर धीर पीईईओ पादरली कल्ला, जगदीप यादव पीईईओ गुड़ानाल, चम्पालाल बामणिया एईएन पीडब्ल्यूडी सिवाना, अशोक कुमार शर्मा सहायक प्रशासनिक अधिकारी सीबीईओ सिवाना स्थानीय सरपंच व ग्रामीणजन मौजूद थे।

इस अवसर पर नव सम्मानित श्री केसाराम एवं पुरस्कृत शिक्षक फोरम राजस्थान की ओर से श्री सालगराम परिहार द्वारा प्रथम स्थान प्राप्त विद्यार्थियों को पुरस्कृत किया गया। इनके निवास स्थान पर भी जोरदार स्वागत किया गया। 64 वी खेलकूद प्रतियोगिता के अवसर पर केन्द्रीय कृषि राज्यमंत्री श्रीमान कैलाश चौधरी, सिवाना विधायक श्रीमान हमीरसिंह भायल, जिला परिषद सदस्य श्री सोहनसिंह भायल ने साफा व माला पहनाकर बहुमान किया। पीईईओ देवन्दी में प्रधानाचार्य श्री सोनाराम गर्ग व समस्त सभी स्टाफ, देवन्दी के ठाकुर श्री जसवन्तसिंह भायल, श्री चतरसिह भायल, अन्य ग्रामीण जनों द्वारा बहुमान किया गया।

डॉ. नरूका का शिक्षक सम्मान किया गया

झालावाड़। राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय, करनवास, खानपुर, झालावाड़ के संस्थाप्रधान डॉ. योगेगन्द्र सिंह नरूका को जीवन जागृति फाउण्डेशन एवं कविशा मिडिया प्राईवेट लिमिटेड की ओर

Rajteachers.in

से 'शिक्षक सम्मान' से नवाजा गया। मुख्य अतिथि वीणा ग्रुप के मैनेजिंग डायरेक्टर श्री हेमजीत मालू, डॉ. सुरेन्द्र प्रतापसिंह, डॉ. एस.डी.शर्मा श्रीमती रेणू गुप्ता व संस्था के अध्यापक श्री शंकर सैनी व सचिव श्रीमती राधा सैनी से सामुहिक रूप से श्री नरूका को सम्मान-पत्र भेंट कर सम्मानित किया। इस सम्मान को प्राप्त करने पर विद्यालय परिवार ने अभिनन्दन किया।

बाल सभा को हिन्दी दिवस के रूप में मनाया

चुरू। राजकीय माध्यमिक विद्यालय, दान्दू में शनिवारिय बाल सभा का आयोजन हिन्दी दिवस के रूप में धूमधाम से कक्षा 8 के छात्र नैतिक चौधरी की अध्यक्षता में मनाया गया। संस्थाप्रधान श्री नेमीचन्द सुडिया ने इस अवसर पर आयोजित सांस्कृतिक कार्यक्रम को सराहते हुए कहा कि हिन्दी हमारी राष्ट्रीय व सांस्कृतिक धरोहर है। उन्होंने विद्यार्थियों व साथी कार्मिकों को शपथ दिलाई। इस अवसर पर सर्वश्री जयसिंह, संजयकुमार, राजेश कुमार, बजरंगला, सुल्तानसिंह, रामचन्द ढाका व नौरंगराम आदि साक्षी रहे।

विद्यालय में हरित पाठशाला कार्यक्रम मनाया

बीकानेर। रा.मा.वि. खारड़ा, बीकानेर में 18.8.19 को हरित पाठशाला कार्यक्रम के अन्तर्गत पौधारोपण किया गया। संस्थाप्रधान श्रीमती रविन्द्र कौर ने इसके लिए सभी स्टाफ सदस्यों एवं विद्यार्थियों को आह्वान करते हुए का कि पेड़ हमें आक्सीजन (प्राणवायु) प्रदान करते हैं। इस आह्वान पर सभी ने मिलकर पौधारोपण करते हुए उनकी सार-सम्भाल नियमित रूप से करने की जिम्मेदारी भी ली। हरित पाठशाला प्रभारी अध्यापक श्री अरविंद कुमार स्वामी ने कार्यक्रम संचालन किया जिसमें मुख्य रूप से पौधारापण में सम्पूर्ण विद्यालय परिवार ने तन-मन से सहयोग किया।

संकलन : **प्रकाशन सहायक**

सत्य का पाठ

उस समय मोहनदास लगभग पंद्रह साल के थे। उनके बड़े भाई को मांस खाने की आदत पड़ गई थी। गाँधीजी का परिवार वैष्णव था और कोई मांस खाने की बात सोच भी नहीं सकता था। मांस खाने की आदत के कारण उनके बड़े भाई ने कइयों से रुपए उधार ले लिये थे जिन्हें अब चुकाना था।

दोनों भाइयों ने आपस में सलाह की। मोहनदास के पास सोने का एक कड़ा था। उन्होंने निर्णय किया कि कड़े में से सोने का एक टुकड़ा काटकर उसे बेचकर लोगों का उधार चुका दिया जाए। माता-पिता को भनक तक नहीं लगी और ऐसा कर दिया गया।

घरवालों ने कटे हुए कड़े को देखा तो पूछा कि उसे किसने काटा है? दोनों भाई बोले, 'मालूम नहीं।' इसके बाद बात आई-गई हो गई, लेकिन मोहनदास इस घटना से अत्यंत व्यथित हो गए। उनका मन हर क्षण कहता कि उन्होंने गलत काम किया है। वे जब पढ़ने बैठे तो पढ़ाई में उनका मन बिलकुल न लगा।

आखिरकार मोहनदास से न रहा गया और उन्होंने सारी सच्चाई माँ को बता दी। माँ मोहनदास को बहुत प्रेम करती थीं। अपने बेटे की गलती पर उन्हें बहुत दुःख हुआ। उन्होंने उससे कहा कि वह सारी सच्चाई पिता को बता दे। मोहनदास इस बात पर राजी तो हो गया, लेकिन उसका साहस न हुआ कि वह पिता के सामने सारी सच्चाई बयान कर दे।

मोहनदास को पिता से पिटाई का डर न था, बल्कि उनका दिल दुखाने का डर अवश्य था। उन्होंने अपना अपराध स्वीकार करने के लिए एक पत्र लिखा और वह पत्र पिता को थमा दिया। पिताजी उस समय बीमार थे। उन्होंने पत्र पढ़ा तो उनकी आँखों में आँसू ढुलक आए। वे कुछ सोचते रहे और फिर उन्होंने उस पत्र को फाड़ दिया।

मोहनदास भी पिता के हृदय की पीड़ा को समझकर बहुत रोए और उन्होंने उसी दिन से निश्चय किया कि अपने जीवन में हमेशा सत्य ही बोलेंगे। इसी घटना से उन्होंने सत्य का पाठ सीखा।

Rajteachers.in

समाचार पत्रों में कतिपय रोचक समाचार/दृष्टांत समय-समय पर छपते रहते हैं। इन्हें पढ़कर हमें विस्मय तो होता ही है, साथ ही हमारा ज्ञानवर्धन भी होता है। ऐसे समाचार/दृष्टांत चतुर्दिक स्तम्भ के अन्तर्गत प्रकाशित किये जाते हैं। आप भी ऐसे समाचारों का पुनर्लेखन कर संदर्भ एवं पेपर कटिंग के साथ शिविरा में प्रकाशन हेतु हमें भिजवा सकते हैं।

-वरिष्ठ सम्पादक

चतुर्दिक समाचार

भारत ने बनाया अचूक 'अस्त्र'

भारत–भारतीय वायुसेना ने हवा से हवा में मार करने वाली 'अस्त्र' मिसाइल का ओडिशा में सफल परीक्षण किया। पूर्ण रूप से स्वदेशी यह मिसाइल सटीक निशाने के साथ 70 किलोमीटर की दूरी से दुश्मन देशों के विमान और मिसाइलें मार गिराने में सक्षम है। 'अस्त्र' की आजमाइश के लिए 'सुखोई–30 एमकेआई' लड़ाकू विमान का सहारा लिया गया। यह मिसाइल हवा में तैरते लक्ष्य को सटीक रूप से भेदने में कामयाब रही। वायुसेना में राडार, सेंसर और इलेक्ट्रो–ऑप्टिकल ट्रैकिंग सिस्टम से प्राप्त डाटा के आधार पर यह दावा किया। 'अस्त्र' हवा से हवा में मार करने वाली पहली स्वदेशी मिसाइल है। डीआरडीओ ने 50 निजी व सरकारी संस्थानों के सहयोग से इसका निर्माण किया है। यह मिसाइल अलग –अलग ऊँचाई पर उड़ान भर रहे कम और लंबी दूरी के हवाई लक्ष्यों को निशाना बनाने की क्षमता रखती है।

शरीर में मौजूद बुलबुलों से होगा कैंसर का इलाज

न्यूयॉर्क– शोधकर्ताओं ने हमारे शरीर में छोटे बुलबुलों की खोज की है, जिसका इस्तेमाल कैंसर के इलाज में किया जा सकता है। शोधकर्ताओं के अनुसार यह बुलबुले कीमोथेरेपी से बेहतर तरीके से कैंसर का इलाज कर सकते हैं। हमारे शरीर की स्वस्थ कोशिकाएँ नैनो आकार के बुलबुले छोड़ती हैं जो डीएनए और आरएनए जैसे जैनेटिक पदार्थों को एक कोशिका से दूसरी कोशिका में ट्रांसफर करते हैं। डीएनए में महत्त्वपूर्ण जानकारियाँ संग्रहित होती हैं जिसकी मदद से आरएनए प्रोटीन बनाते हैं और उनके ठीक से काम करने की निगरानी करते हैं। शोधकर्ताओं के अनुसार, इन छोटे बुलबुलों को एक्स्ट्रासेल्युलर वेसाइकिल (ईवी) कहा जाता है। इस इलाज को लक्षित स्थानों तक पहुँचाने के लिए ट्रांसपोर्टरों के रूप में कार्य कर सकते हैं। यह छोटे बुलबुले कई तरह की दवाओं और कैंसर को निशाना बनाने वाले जीन को लेकर बीमारी वाली जगहों पर आसानी से पहुँच सकते हैं और कैंसर की कोशिकाओं को मार सकते हैं।

विटामिन-डी की कमी से खतरा

लंदन– शरीर को सही मात्रा में विटामिन–डी नहीं मिलने से मौत का खतरा तीन गुना तक बढ़ सकता है। एक हालिया शोध में यह दावा किया गया है। वैज्ञानिकों को पता चला है कि सूर्य की रोशनी के संपर्क में आने पर शरीर द्वारा बनाए जाने वाले विटामिन–डी का स्तर कम होने से कई बीमारियाँ होती हैं, जिससे मौत का खतरा बढ़ जाता है। इस शोध में यह भी पता चला है कि मधुमेह से पीड़ित जिन लोगों में विटामिन–डी की कमी होती है उनमें जल्दी मौत का खतरा और भी ज्यादा होता है।

हाथ की त्वचा से बनाई कृत्रिम जीभ

नॉटिंघम– नॉटिंघमशायर की रेबेका पैटरसन की जीभ के कैंसर का ऑपरेशन एक सप्ताह पहले हो गया है। डॉक्टरों ने उनकी पुरानी जीभ हटाकर हाथ की त्वचा से बनाई गई जीभ लगाई है। कैंसर सर्जरी के साढ़े 11 घंटे बाद जब रेबेका को होश आया तो वह नॉटिंघम की मेडिकल सेंटर में थीं। डॉक्टर ने उनकी दाएँ हिस्से की जीभ का कैंसर प्रभावित भाग, लसिका और दो पीछे के दांतों को निकाल दिया था। रेबेका के बाएँ हाथ पर पट्टी बँधी थी। क्योंकि इसी हिस्से की त्वचा से नई जीभ बनाकर लगाई गई थी। एक हफ्ते तक सिर्फ लिखकर अपनी बात कहने वाली रेबेका अब बोलने लगी हैं।

दृष्टिबाधित इस उपकरण से देख सकेंगे

लॉस एंजिल्स– वैज्ञानिक एक ऐसे उपकरण का परीक्षण कर रहे हैं, जिसको दिमाग में सर्जरी की मदद से प्रत्यारोपित करके दृष्टिबाधित लोगों में देखने की क्षमता विकसित की जा सकती है। सेकेंड साइट मेडिकल नामक एक फर्म द्वारा बनाए गए इस उपकरण का नाम ओरियन है। ओरियन को सीधे मस्तिष्क में प्रत्यारोपित किया जा सकता है। यह उपकरण गतिविधियों का पता लगाने की क्षमता को विकसित करके अपने आसपास की दुनिया को देखने का नया तरीका देता है। साथ ही उजाले और अंधेरे में अंतर कर सकता है। शोधकर्ताओं के इस डिवाइस को विकसित करने का मकसद उन लोगों की मदद करना है जो किसी कारणवश अपनी दृष्टि खो चुके हैं। कैलिफोर्निया यूनिवर्सिटी के शोधकर्ताओं के मुताबिक, ओरियन उन लोगों को दिशा दिखाने में सक्षम है, जिनमें पहले देखने की क्षमता थी। लेकिन किसी चोट या बीमारी के कारण अब वह अपनी दृष्टि खो चुके हैं।

चाय पीने से दुरुस्त रहता है दिमागी तंत्र

सिंगापुर– अगर आप भी चाय पीने के शौकीन हैं तो आपके लिए खुशखबरी है। एक हालिया शोध में दावा किया गया है कि नियमित रूप से चाय पीने वाले लोगों के दिमाग का प्रत्येक हिस्सा चाय नहीं पीने वालों की तुलना में बेहतरी ढंग से संगठित होता है। दिमाग के प्रत्येक हिस्से का व्यवस्थित रहना स्वस्थ संज्ञानात्मक क्रिया से जुड़ा हुआ है। इन परिणामों तक पहुँचने के लिए अध्ययन में 36 उम्रदराज लोगों के न्यूरोइमेजिंग डाटा को खंगाला गया। नेशनल यूनिवर्सिटी ऑफ सिंगापुर (एनयूएस) के सहायक प्राध्यापक एवं टीम लीडर फेंग लेई ने कहा, हमारे परिणाम मस्तिष्क के ढाँचे पर चाय पीने से पड़ने वाले सकारात्मक योगदान की पहली बार पुष्टि करते हैं और यह दर्शाते हैं कि नियमित रूप से चाय पीना दिमागी तंत्र में उम्र के कारण आने वाली गिरावट से भी बचाता है।

दिव्यांगों के लिए बनाई स्मार्ट छड़ी

इंस्ताबुल– तुर्की के डिजाइनर कुर्सत सेलन, जो खुद एक दिव्यांग हैं, ने स्मार्ट छड़ी डिजाइन की है। इसे वीवॉक नाम दिया गया है। इसे खासतौर से ऐसे लोगों के लिए तैयार किया है जो देख नहीं पाते। आधुनिक तकनीक से लैस यह स्मार्ट छड़ी दिव्यांगों को बोलकर रास्ता बताती है। इसके साथ ही यह रास्ते में आने वाली दुकानों और इमारतों के बारे में भी जानकारी देती है। इसमें कई आधुनिक सेंसर लगे हैं, जो रास्ते में किसी भी तरह की बाधा आने पर यूजर को चेतावनी देते हैं। सेलन यंग गुरु अकादमी के सह संस्थापक है।

कृत्रिम पत्तों से दवाई बनाई

वॉशिंगटन– वैज्ञानिकों ने ऐसे कृत्रिम पत्ते विकसित किए हैं जिनकी मदद से रसायनिक प्रतिक्रियाएँ करवा कर दवाइयों का निर्माण किया जा सकता है। इंडोवेन यूनिवर्सिटी ऑफ टेक्नोलॉजी के वैज्ञानिकों ने एक मिनी–रिएक्टर विकसित किया है जो प्रकृति में पत्तियों के समान है और सूर्य के प्रकाश को अवशोषित करके रासायनिक प्रक्रियाओं को संचालित करता है। इस रिएक्टर का उपयोग करते हुए दो प्रकार की दवा एंटीमरलियल आर्टीमिसिनिन और एंटीपैरासिटिक दवा एस्केरिडोल का उत्पादन किया गया है।

संकलन : **प्रकाशन सहायक**

Rajteachers.in

हमारे भामाशाह

भामाशाहों के अवदान का वर्णन प्रतिमाह इस कॉलम में कर पाठकों तक पहुँचाने का विनम्र प्रयास किया जाता है। आइये, आप भी इसमें सहभागी बनें। **-व. संपादक**

सीकर

रा.मा.वि., सावलोदा, लाडखानी में श्री चिंरजी लाल द्वारा 1,30,000 रुपये की लागत से प्रार्थना सभागार पर टीन शैड लगाया, श्री दीपक बीथी पुरिया कलकत्ता प्रवासी सावलोदा लाडखानी वाले अग्रवाल समाज ने 230 विद्यार्थियों को स्कूल ड्रेस बांटी।

सवाईमाधोपुर

रा.उ.मा.वि., सवाईमाधोपुर को श्रीमती चन्द्र कला शर्मा, व्याख्याता सेवा निवृत्त से 2 बड़े कूलर जिसकी लागत 27,000 रुपये, 10 सीलिंग फैन (औरियन्ट) जिसकी लागत 14,500 रुपये, 10 पेडेस्टल फैन जिसकी लागत 24,000 रुपये, 4 स्टील चेयर जिसकी लागत 25,000 रुपये, 01 मेज जिसकी लागत 8,000 रुपये, 04 पानी के केम्पर जिसकी लागत 2,600 रुपये, श्री अहतशामुद्दीन वरिष्ठ प्रयोगशाला सहायक (सेवानिवृत्त) से 2 सोफा बेंच प्राप्त जिसकी लागत 13,000 रुपये।

झालावाड़

रा.आ.उ.मा.वि., करनवास, तह. खानपुर को श्री घनश्याम अग्रवाल व श्री जगदीश नागर प्रत्येक से एक-एक पंखा विद्यालय को सप्रेम भेंट।

हनुमानगढ़

रा.आ.उ.मा.वि., दलपतपुरा, तह. नोहर में श्री रामेश्वर लाल तनाण द्वारा स्वतन्त्रता दिवस के मौके पर विद्यालय को मुख्यमंत्री जन सहभागिता योजनान्तर्गत हॉल निर्माण (पुस्तकालय कम वाचनालय) बनाने हेतु 10,00,000 रुपये का चैक संस्थाप्रधान को भैंट किया, श्री यशपाल बुरड़क से एक दरी (15'×12') प्राप्त, श्री सतवीर सहारण और स्टॉफ द्वारा 6 केम्पर 20-20 लीटर विद्यालय को सप्रेम भेंट।

नागौर

रा.उ.मा.वि., भांवता (कुचामन सिटी) को श्री देवीलाल मुवाल द्वारा 16 सेट सी.सी.टी.वी. जिसकी लागत 1,00,000 रुपये, वाटर कूलर जिसकी लागत 40,000 रुपये तथा एक बायोमेट्रिक मशीन जिसकी लागत 20,000 रुपये विद्यालय को भेंट, श्री गोविन्द लाल (व्याख्याता व भूगोल) से सत्र 2018-2019 में प्रथम श्रेणी से उत्तीर्ण 11 विद्यार्थियों को प्रति विद्यार्थी 500 रुपये के हिसाब से 5,500 रुपये दिए श्री प्रेमाराम ढाका से भूगोल प्रायोगिक हेतु 1 प्लेटन टेबल सेट विद्यालय को सप्रेम भेंट। **रा.बा.उ.मा.वि. ईड़वा, डेगाना** को स्व. लालचन्द नाहर व स्व. जवहरी लाल नाहर की पुण्य स्मृति में उनके सुपुत्रों सर्वश्री नवरतनमल, बस्तीमल, सागरमल, सरदारमल, प्रकाश चन्द द्वारा 100 सैट लोहे के टेबल-स्टूल विद्यालय को सप्रेम भेंट जिसकी लागत 1,11,000 रुपये। **रा.मा.वि. रायथलिया (मकराना)** में श्रीराम दीन रामगेट द्वारा 1,00,000 रुपये की लागत से टिन शैड (स्टेज कवर साईन 30×22) का निर्माण करवाया गया।

बाड़मेर

रा.मा.वि., कम्मों का बाड़ा, समदड़ी को श्री हुकमाराम, चुनाजी मेघवाल से 10 पानी के केम्पर प्राप्त, श्री भंवर लाल, सकाणी मेघवाल से 6 ग्रीन बोर्ड प्राप्त, श्री पकाराम, छोगाजी से 4 बड़ी दरियाँ प्राप्त, श्री उम्मेदाराम, प्रताप जी मेघवाल से 2 ग्रीन बोर्ड प्राप्त, श्री मोहन लाल, कस्तुर जी मेघवाल से एक पंखा प्राप्त, श्री रणछोड़ राम, मेंहदा जी कोंदली द्वारा मिष्ठान वितरण व श्री शैतान भारती, घेवर भारती ने पुरस्कार वितरण किया।

जोधपुर

रा.उ.मा.वि. बारा खुर्द (ओसियां) में श्री निम्बाराम पुत्र श्री चैनाराम गोरचिया द्वारा 5,01,000 रुपये की लागत से प्याऊ का निर्माण मय ठंडे पानी की मशीन व विद्युत फिटिंग कार्य सम्पूर्ण करवाए। सभा भवन निर्माण में निम्न भामाशाहों का योगदान रहा- श्री हरिराम सुथार पुत्र श्री मोतीराम सुथार से 1,11,111 रुपये प्राप्त, सर्वश्री घेवर राम तरड़ पुत्र श्री मगाराम तरड़, श्री हुकमाराम गोरचिया पुत्र श्री कानाराम गोरचिया प्रत्येक से 51,000-51,000 रुपये प्राप्त, श्री मोडाराम बेनीवाल पुत्र श्री जगाराम बेनीवाल से 41,000 रुपये प्राप्त, सर्वश्री डूंगरराम बेरेड़ पुत्र श्री बलाराम बैरड़, श्री अमान सिंह पुत्र रिड़मल सिंह राठौर, नाथूराम सियोल पुत्र सुखाराम सियोल प्रत्येक से 31,000-31,000 रुपये प्राप्त, श्री नारायण राम तरड़ पुत्र श्री पीराराम तरड़ से 25,000 रुपये प्राप्त, सर्वश्री हेमाराम सारण पुत्र श्री डूँगरराम सारण, श्री आसूराम गोरचिया पुत्र रिणछोड़ राम गोरचिया, चूनाराम गोरचिया पुत्र निम्बाराम गोरचिया, गिरधारी राम लोमरोड़ पुत्र जेठाराम लोमरोड़, रूघनाथ राम तरड़ पुत्र श्री जसाराम तरड़, नृसिंह राम पुत्र खेराजराम सियाग, अनाराम तरड़ पुत्र केशुराम तरड़, मोहन राम तरड़ पुत्र खेराजराज तरड़, देवाराम सियाग पुत्र दौलाराम सियाग, भँवरसिंह राठौड़ पुत्र राणीदान सिंह राठौड़, मोहन राम भाम्बू पुत्र छगनाराम भाम्बू प्रत्येक से 21,000-21,000 रुपये प्राप्त हुए। सर्वश्री श्री राजूराम साँई पुत्र श्री लादूराम साँई, नारुराम साँई पुत्र कानाराम साँई, नेनूराम गोरचिया पुत्र नवलाराम गोरचिया, पैमाराम बैरड़ पुत्र हरजीराम बैरड़, गिरधारी राम गोरचिया पुत्र खींयाराम गोरचिया, झूमरराम दर्जी पुत्र भूराराम दर्जी, बीन्जाराम सियाग पुत्र पूनाराम सियाग, भोमाराम दर्जी पुत्र बाबूलाल दर्जी, श्रवणराम सियाग, शेराराम सियाग, मोहनराम सारण, शिवनाथ बोरवेल सोयला, गिरधारी राम तरड़ पुत्र कुम्भाराम तरड़, रामूराम गोरचिया पुत्र नथाराम गोरचिया, धन्नाराम तरड़ पुत्र केशूराम तरड़, किशनाराम सियोल पुत्र खूमाराम सियोल प्रत्येक से 11,000-11,000 रुपये प्राप्त, श्री बीन्जाराम तरड़ पुत्र श्री मगाराम तरड़ से 10,000 रुपये प्राप्त, श्री नेमाराम, भीकाराम गोरचिया पुत्र सोनाराम गोरचिया से 6,000 रुपये प्राप्त, सर्वश्री गिरधारी राम विश्नोई (प्रधानाचार्य), डॉ. अनिल कुमार विश्नोई (व्याख्याता), श्रवण लाल विश्नोई (व्याख्याता), सुमित्रा चौहान (व्याख्याता), साजनराम भादू (व.अ. विज्ञान), दुर्गाराम मेघवाल (व.अ. हिन्दी), रामकिशन पारीक (व.अ.), सुनील दत्त सुथार (व.अ. गणित), बीना वर्मा (व.अ. अंग्रेजी), रामकिशोर शर्मा (शा.शि.) कानाराम जाणी (अध्यापक), जितेन्द्र चौधरी (अध्यापक), गंगा गुरंग (अध्यापिका), ओमप्रकाश बेन्दा (शा.शि.), उम्मेदा राम सियाग पुत्र हुकमाराम सियाग, नेनाराम तरड़ पुत्र अरजन राम तरड़, अर्जुनराम पुत्र मगाराम तरड़, नारायण सिंह राठौड़ पुत्र मोड़सिंह राठौड़, पेमाराम बाना पुत्र मनूराम बाना, बीन्जाराम बैरड़ पुत्र रेवन्तराम बैरड़, चेतनराम जाखड़ पुत्र हरकाराम जाखड़, रामूराम तरड़ (अध्यापक) पुत्र बागाराम तरड़, अचलाराम दर्जी पुत्र हँसराज दर्जी, ओमाराम, पनाराम सारण पुत्र जयराम सारण, पेमाराम गोरचिया पुत्र चोलाराम गोरचिया मोहनराम तरड़ पुत्र प्रतापराम तरड़, खूमाराम जाणी पुत्र खींयाराम जाणी, केसूराम तरड़ पुत्र तुलछाराम तरड़, पुखराज थोरी पुत्र गोकलराम थोरी, गोविन्दराम सारण पुत्र भींयाराम सारण प्रत्येक से 5,100-5,100 रुपये प्राप्त, सर्वश्री पनाराम लोमरोड़ पुत्र श्री नवलाराम लोमरोड़, पेमाराम सारण पुत्र हीराराम सारण, दीपाराम साँई पुत्र भीखाराम साँई प्रत्येक से 5,000-5,000 रुपये प्राप्त। सर्वश्री सुनील कुमार (अध्यापक) पुत्र श्री रेवन्त राम लोमरोड़, लक्ष्मण सिंह राठौड़ पुत्र हुकम सिंह राठौड़, शिव सिंह राठौड़ पुत्र गापड़ सिंह राठौड़ प्रत्येक से 2,500-2,500 रुपये प्राप्त, सर्वश्री श्रवण राम गोरचिया पुत्र श्री अलाराम गोरचिया, चोलाराम हुड्डा पुत्र सुरताराम हुड्डा, गोरधनराम हुड्डा पुत्र चोलाराम हुड्डा, चिमाराम तरड़ पुत्र श्री पीराराम तरड़, खींयाराम ददेड़ पुत्र हीराराम ददेड़, पुरखाराम बैरड़ पुत्र चैनाराम बैरड़, अर्जुनराम तरड़ पुत्र पीराराम तरड़ प्रत्येक से 2,100-2,100 रुपये प्राप्त, श्री छगनाराम तरड़ पुत्र श्री पद्माराम तरड़ से 1,000 रुपये, श्री रामेश्वर लाल जाखड़ (व.अ.) पुत्र श्री हरकाराम जाखड़ से 10 छत पंखे विद्यालय को सप्रेम भेंट।

संकलन : **प्रकाशन सहायक**

शिविरा पत्रिका (मासिक) : अक्टूबर, 2019 / निदेशक, माध्यमिक शिक्षा राजस्थान, बीकानेर द्वारा प्रकाशित एवं प्रसारित तथा हरिहर प्रिण्टर्स, जे-97, अशोक चौक, आदर्श नगर, जयपुर-302 004 फोन : 0141-2600850 से मुद्रित। वरिष्ठ सम्पादकः अनिल कुमार अग्रवाल, प्रकाशन हेतु सामग्री चयन के लिए उत्तरदायी।

Rajteachers.in

शिक्षक सम्मान

माननीय राष्ट्रपति से राष्ट्रीय शिक्षक पुरस्कार प्राप्त करते हुए डॉ. कल्पना शर्मा

राज्यस्तरीय शिक्षक सम्मान समारोह-2019, गरिमामय मंच, दीप प्रज्वलन

लोकार्पण : प्रशस्तियाँ, शिविरा पत्रिका-शिक्षक दिवस विशेषांक

उद्बोधन

स्वागत

आभार

राज्यस्तरीय शिक्षक सम्मान समारोह-2019 में उपस्थित अतिथिगण, सम्मानित शिक्षक और परिजन।

Rajteachers.in

डाक पंजीयन संख्या : जयपुर सिटी/417/2017-19 शिविरा पत्रिका (मासिक) ● अक्टूबर, 2019 समाचार पत्र पंजीयन संख्या 10350/66
प्रकाशन तिथि : 2 अक्टूबर, 2019 पृष्ठ 52 ● प्रेषण : माह की 5-6 तारीख

राज्यस्तरीय शिक्षक सम्मान समारोह के अन्तर्गत सांस्कृतिक संध्या की झलकियाँ

दिनांक : 04 सितम्बर, 2019 **समय : सायं 6.00 बजे** **स्थान : बिड़ला सभागार स्टेच्यू सर्किल, जयपुर**

फोटो सौजन्य : मोहन मितवा, जयपुर मो. 9414265628

(बाएं) राज्य परिषद के 69वें वार्षिक अधिवेशन में श्री नथमल डिडेल, आइएएस., निदेशक माध्यमिक शिक्षा राजस्थान व स्टेट कमिश्नर (स्कूल शिक्षा) दीप प्रज्वलन करते हुए। (दाएं) सांस्कृतिक प्रस्तुति का मनोहारी चित्र।

पत्रिका अवितरित होने की स्थिति में इस पते पर भेजें : वरिष्ठ सम्पादक, शिविरा प्रकाशन, माध्यमिक शिक्षा राजस्थान, बीकानेर-334011

Rajteachers.in